१००१ - ज्योतिष योग

1 आश्रय योग - रज्जुयोग

चर राशि में सभी ग्रह हों तो रज्जुयोग होता है।

रज्जुयोगोत्पन्न जातक भ्रमण प्रेमी, देखने में सुन्दर, परदेश में स्वस्थ (धनार्जन के लिए विदेश जाने वाला) क्रूर तथा दुष्ट स्वभाव का होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 7, 19)

2 आश्रय योग - रज्जुयोग

यदि लग्न चर राशि में हो तथा कई ग्रह चर राशि में हों तो रज्जुयोग होता है।

जातक महत्वाकांक्षी होता है तथा नाम प्रसिद्धि और यश के लिए जगह-जगह घूमता है, यात्रा प्रिय, शीघ्र निर्णय लेने वाला और अधिक ग्रहणशील होता है। बौद्धिक रुप से गतिशील और खुले दिमाग का होता है। यद्यपि कभी-कभी अत्यधिक परिवर्तनशील स्वभाव, अनिर्णय, अस्थिर मन, अविश्वसनीय और किसी एक कार्य में संलग्न रहने में असमर्थ होता है। जातक लगातार संघर्ष में रहता है और सामान्यतः स्थिर सम्पत्ति बनाने में सफलता नहीं मिलती।

3 आश्रय योग - मुसलयोग

सभी ग्रह स्थिर राशिस्थ हों तो मुसलयोग होता है।

मुसल योगोत्पन्न मनुष्य मानी, ज्ञानी, धनसम्पत्तियुक्त, राजप्रिय, विख्यात, अनेक पुत्रवान् तथा स्थिर बुद्धि वाला होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 7, 20)

4 आश्रय योग - मुसलयोग

यदि लग्न स्थिर राशि में हो तथा कई ग्रह स्थिर राशि में हों तो मुसलयोग होता है।

मुसल योगोत्पन्न जातक मानी, ज्ञानी, धनसम्पत्तियुक्त, राजप्रिय, विख्यात, अनेक पुत्रवान् तथा स्थिर बुद्धि वाला होता है। जातक विश्वसनीय, निश्चित, दृढ़, और स्थायित्व युक्त होता है। जो भी हो जातक दुराग्रही (जिद्दी), शीघ्र निर्णय लेने में असमर्थ, और परिवर्तन स्वीकार करने में कठिनाई महसूस करता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 7, 20)

5 आश्रय योग - नलयोग

सभी ग्रह द्विस्वभावगत हों तो नलयोग होता है।

नलोत्पन्न जातक हीनांग या अधिकांग धनसंचयकर्ता, अत्यन्त कुशल, बन्धु-बान्धव प्रेमी तथा सुन्दर होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 7, 21)

6 आश्रय योग - नलयोग

यदि लग्न द्विस्वभाव राशि में हो तथा कई ग्रह द्विस्वभाव राशि में हों तो नलयोग होता है।

नलोत्पन्न जातक हीनांग या अधिकांग धनसंचयकर्ता, अत्यन्त कुशल, बन्धु-बान्धव प्रेमी तथा सुन्दर होता है और अवसर चूकने की प्रवृत्ति होती है जिससे निराशा और उदासी होती है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 7, 21)

7 दल योग - मालायोग

सभी शुभग्रह तीन केन्द्र स्थानों और पापग्रह केन्द्रातिरिक्त स्थानों में हों तो मालायोग होता है।

माला योगोत्पन्न जातक सतत सुखी, वाहन, वस्त्र, अन्न आदि भोग्य सामग्रियों से युक्त, तथा अनेक सुन्दरी स्त्रियों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 8, 22)

8 दल योग - सर्पयोग

सभी अशुभग्रह तीन केन्द्र स्थानों और शुभग्रह केन्द्र स्थानों में न हों तो सर्पयोग होता है।

सर्पयोगज जातक कुटिल, दुष्ट, निर्धन, सतत दुःखपीडित, दीन तथा दूसरों के ही अन्न जल पर जीवित रहता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 7, 23)

9 आकृति - गदा योग

आसन्नवर्ती दो केन्द्र स्थानों (प्रथम से चतुर्थ तक) में सभी ग्रह हों तो गदा नामक योग होता है।

गदा योगात्पन्न जातकः सतत अर्थोद्योगरत, यज्ञ कराने वाला, शास्त्र तथा गान में प्रवीण, और धन तथा स्वर्णादि रत्नों से परिपूर्ण होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 9, 24)

10 आकृति - शंख योग

यदि सभी ग्रह चतुर्थ से सप्तम भावों के बीच हों तो आकृति शंखयोग बनता है।

जातक धनार्जन में हमेशा व्यस्त, धनवान, विद्वान, धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञान, भयंकर तथा ईर्ष्यालु होता है।

11 आकृति - विमुक योग

यदि सभी ग्रह सप्तम से दशम भावों के बीच हों तो आकृति विमुक योग बनता है।

जातक धनार्जन में हमेशा व्यस्त, धनवान, विद्वान, धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञान, भयंकर तथा ईर्ष्यालु होता है।

12 आकृति - ध्वज योग

यदि सभी ग्रह दशम से प्रथम भाव के बीच हों तो आकृति ध्वज योग बनता है।

जातक धनार्जन में हमेशा व्यस्त, धनवान, विद्वान, धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञान, भयंकर तथा ईर्ष्यालु होता है।

13 आकृति - शकट योग

लग्न और सप्तम में सभी ग्रह हों तो शकट योग होता है।

शकटयोगोत्पन्न जातक रोग पीडित, कुत्सित नखवाला, मूर्ख, गाडी चलाकर आजीविका चलाने वाला, निर्धन, मित्रवर्ग तथा आत्मीय जनों से विहीन होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 9, 25)

14 आकृति - विहग योग

चतुर्थदशम में सभी ग्रह हों तो विहग योग होता है।

विहग योगज जातक भ्रमणशील, पराधीन, दूत, सुरत से जीविका वाला, ढीठ, झगड़ालू होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 9, 26)

15 आकृति - वज्र योग

शुभग्रह लग्न तथा सप्तम में हों और पाप चतुर्थ दशमस्थ हों वज्रयोग होता है।

वज्रयोगज जातक बाल्य काल तथा वृद्धावस्था में सुखी, शूर, देखने में सुन्दर, निरीह भाग्यरहित, दुष्ट तथा जनविरोधी होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 11, 29)

16 आकृति - यव योग

लग्न सप्तम में पापग्रह और चतुर्थदशम में शुभग्रह हों यव योग होता है।

यवयोगोद्‌भव जातक व्रत, नियम तथा मांगलिक कार्य में रत, अवस्था के मध्य मे सुख, धन, पुत्र से युक्त, दान देने वाला, तथा स्थिर बुद्धि वाला, होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 11, 30)

17 आकृति - कमल योग

सभीग्रह चारो केन्द्र में ही हों तो कमल योग होता है।

कमलयोगोत्पन्न जातक ऐश्वर्य तथा गुणों से युक्त, दीर्घायु, विपुलकीर्ति, शुद्ध, तथा सैकड़ों सत्कर्म करने वाला राजा होता है।। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 12, 31)

18 आकृति - वापी योग

केन्द्र से अन्य (पणफर तथा आपोक्लिम) में ही सभी ग्रह हों तो वापी संज्ञक योग होता है।

वापीयोगोत्पन्न जातक धन संग्रह में प्रवीण, स्थिर धन स्थिर सुख तथा पुत्रों से युक्त, नेत्र सुखकारी-नृत्यादिकों से प्रसन्न राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 32)

19 आकृति - वापी (पणफर) योग

केन्द्र से अन्य (पणफर) में ही सभी ग्रह हों तो वापी संज्ञक योग होता है।

वापीयोगोत्पन्न जातक धन संग्रह में प्रवीण, स्थिर धन स्थिर सुख तथा पुत्रों से युक्त, नेत्र सुखकारी-नृत्यादिकों से प्रसन्न राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 32)

20 आकृति - वापी (आपोक्लिम) योग

केन्द्र से अन्य (आपोक्लिम) में ही सभी ग्रह हों तो वापी संज्ञक योग होता है।

वापीयोगोत्पन्न जातकधन संग्रह में प्रवीण, स्थिर धन स्थिर सुख तथा पुत्रों से युक्त, नेत्र सुखकारी-नृत्यादिकों से प्रसन्न राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 32)

21 आकृति - श्रृंगाटक योग

यदि त्रिकोण (1/5/9) संस्थित सभी ग्रह हों तो श्रृंगाटक योग कहलाता है।

श्रृंगाटकयोगोत्पन्न जातक युद्धप्रेमी सुखी, राजवल्लभ, सुन्दर स्त्री वाला धनी, स्त्री से द्वेष करने वाला होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 27)

22 आकृति - हल योग

2/6/10 में सभी ग्रह हों तो हल संज्ञक योग होता है।

हलयोगोत्पन्न जातक बहुत खाने वाला, दरिद्र, कृषक, दुःखी, उद्विग्न, बन्धु और मित्रों से युक्त, तथा दासवृत्ति का होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 10, 28)

23 आकृति - हल योग

यदि सभी ग्रह तृतीय, सप्तम तथा एकादश भावों में ही स्थित हों तो आकृति हल योग होता है।

जातक अधिक खानेवाला, चाटुकार, मित्रों से युक्त, लोगों में लोकप्रिय, कृषि से आजीविका और निर्धनता से दुःखी होता है।

24 आकृति - हल योग

यदि सभी ग्रह चतुर्थ, सप्तम, द्वादश भावों में ही स्थित हों तो आकृति हल योग होता है।

जातक अधिक खानेवाला, चाटुकार, मित्रों से युक्त, लोगों में लोकप्रिय, कृषि से आजीविका और निर्धनता से दुःखी होता है।

25 आकृति - यूप योग

लग्न से चतुर्थ स्थान तक सभी ग्रह हों तो यूप योग होता है।

यूपयोगज जातक आत्मज्ञानी, यज्ञ कार्यरत, स्त्रीयुक्त, पराक्रमी, व्रत, यम, नियम, में तत्पर, विशिष्ट पुरुष होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 13, 33)

26 आकृति - शर योग

चतुर्थ से चार स्थानों में (सप्तम तक) सभी ग्रह हों तो शरयोग होता है।

ारयोगोत्पन्न जातक शर(तीर) बनाने वाला, कारागर के अधिप (जेलर), शिकार से धन सम्पन्न, मांसाशी, हिंसक, तथा कुत्सितकर्म करने वाला होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 13, 34)

27 आकृति - शक्ति योग

सप्तम से चार स्थानों में (दशम तक) सभी ग्रह रहें तो शक्ति योग होता है।

शक्तियोगज जातक निर्धन, विफलताओं से दुःखित, नीच, आलसी, दीर्घायु, युद्धकुशल, स्थिर तथा सुरुपवान् होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 13, 35)

28 आकृति - दण्ड योग

दशम से चार स्थानों में सभी ग्रहों के रहने पर दण्ड योग होता है।

दण्डोद्भव जातक पुत्र स्त्री से विहीन, निर्धन, सर्वत्र निर्दय, आत्मीयजनों से बहिष्कृत, दुःखी, नीच, तथा दासवृत्तिवाला होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 13, 36)

29 आकृति - नौका योग

लग्न से लगातार सात राशियो मे सभी ग्रहों के रहने से नौका होता है।

नौका योगोत्पन्न जातक जलजीवी पदार्थों या जीवों से जीविका चलानेवाला, बडी बडी आशा करनेवाला, विख्यात यश वाला, दुष्ट, कन्जूस, ह्रदय का मलिन, तथा लालची होता है।। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 14, 37)

30 आकृति - कूट योग

चतुर्थ से सात राशियों में सभी ग्रहों के रहने से कूट योग होता है।

कूटयोगोत्पन्न जातक असत्यभाषी, कारागारेश (जेलर), अकिन्चन, शठ, क्रूर, पहाड तथा किलों में रहने वाला होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 13, 38)

31 आकृति - छत्र योग

सप्तम से 7 राशियों में सभी ग्रहों के होने पर छत्र योग होता है।

छत्र योगोत्पन्न जातक अपने जनों का भरण पोषण करने वाला, दयालु राजगणप्रिय, उत्कृष्ट बुद्धि वाला आद्य तथा अन्तिम अवस्था में सुखी तथा दीर्घायु होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 14, 39)

32 आकृति - चाप योग

दशम से सात स्थानों में सातो ग्रहों के रहने पर चाप योग होता है।

चापयोगज जातक असत्यभाषी, कारागार का अधिप, चोर, धूर्त, जंगल में घूमने वाला, भाग्यहीन, और अवस्था के मध्य में सौख्यपूर्ण होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 14, 40)

33 आकृति - अर्धचन्द्र योग (2/8)

केन्द्र से भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है - जैसे दूसरे से लेकर अष्टम स्थान पर्यन्त प्रत्येक स्थान में एक एक सातों ग्रह हों तो प्रथम अर्धचन्द्र योग होता है।

अर्धचन्द्र योगोत्पन्न जातक सेनापति, सुन्दर शरीर वाला, राजवल्लभ, बली, मणि, सुवर्ण तथा भूषणों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 41)

34 आकृति - अर्धचन्द्र योग (5/11)

केन्द्र से भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है - जैसे 5 से लेकर 11 स्थान पर्यन्त प्रत्येक स्थान में एक एक सातों ग्रह हों तो अर्धचन्द्र होता है।

अर्धचन्द्र योगोत्पन्न जातक सेनापति, सुन्दर शरीर वाला, राजवल्लभ, बली, मणि, सुवर्ण तथा भूषणों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 16, 41)

35 आकृति - अर्धचन्द्र योग (8/2)

केन्द्र से भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है - जैसे अष्टम से लेकर दूसरे स्थान पर्यन्त प्रत्येक स्थान में एक एक सातों ग्रह हों तो अर्धचन्द्र योग होता है।

अर्धचन्द्र योगोत्पन्न जातक सेनापति, सुन्दर शरीर वाला, राजवल्लभ, बली, मणि, सुवर्ण तथा भूषणों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 41)

36 आकृति - अर्धचन्द्र योग (11/5)

केन्द्र से भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है - जैसे 11 से लेकर 5 स्थान पर्यन्त प्रत्येक स्थान में एक एक सातों ग्रह हों तो अर्धचन्द्र योग होता है।

अर्धचन्द्र योगोत्पन्न जातक सेनापति, सुन्दर शरीर वाला, राजवल्लभ, बली, मणि, सुवर्ण तथा भूषणों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 41)

37 आकृति - अर्धचन्द्र योग (3/9)

केन्द्र से भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है: तृतीय से नवम तक एक एक कर सातों ग्रह रहें तो अर्ध चन्द्र योग होता है।

अर्धचन्द्र योगोत्पन्न जातक सेनापति, सुन्दर शरीर वाला, राजवल्लभ, बली, मणि, सुवर्ण तथा भूषणों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 41)

38 आकृति - अर्धचन्द्र योग (6/12)

केन्द्र से भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है - जैसे 6 से लेकर 12 स्थान पर्यन्त प्रत्येक स्थान में एक एक सातों ग्रह हों तो प्रथम अर्धचन्द्र योग होता है।

नावाद्यैरन्यराशिभ्यः प्रवृत्तैरर्धचन्द्रकम्।। अर्धचन्द्र योगोत्पन्न जातक सेनापति, सुन्दर शरीर वाला, राजवल्लभ, बली, मणि, सुवर्ण तथा भूषणों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 41)

39 आकृति - अर्धचन्द्र योग (9/3)

केन्द्र से भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है - जैसे नवम से तृतीय तक एक एक कर सातों ग्रह रहें तो अर्ध चन्द्र योग होता है।

अर्धचन्द्र योगोत्पन्न जातक सेनापति, सुन्दर शरीर वाला, राजवल्लभ, बली, मणि, सुवर्ण तथा भूषणों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 41)

40 आकृति - अर्धचन्द्र योग (12/6)

केन्द्र से भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है - जैसे 12 से लेकर 6 स्थान पर्यन्त प्रत्येक स्थान में एक एक सातों ग्रह हों तो अर्धचन्द्र योग होता है।

अर्धचन्द्र योगोत्पन्न जातक सेनापति, सुन्दर शरीर वाला, राजवल्लभ, बली, मणि, सुवर्ण तथा भूषणों से युक्त होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 41)

41 आकृति - चक्र (चन्द्र) योग

लग्न से एकान्तर करके (1 |3 |5 |7 |9 |11) छः स्थानों में सभी ग्रह हों तो चक्रयोग होता है।

चक्रयोगोत्पन्न जातक नतमस्तक राजगण के मुकुटरत्नों की कान्ति से उज्जवल चरण वाला चक्रवर्ती राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 15, 41)

42 आकृति - समुद्र योग

द्वितीय भाव से एकान्तर करके (2/4/6/8/10/12) छः स्थानों में सभी ग्रह हों तो समुद्र योग होता है।

समुद्र योगोद्भूत जातक अनेक रत्नों से परिपूर्ण, धनसमृद्ध, भोगी, जनप्रिय, पुत्रवान्, स्थिर वैभव वाला, तथा साधु स्वभाव का होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 16, 43)

43 संख्या - गोलयोग

सब ग्रह जब एक ही स्थान में हों तो गोल योग बनता है।

गोलयोगज मनुष्य, बलशाली, निर्धन, विद्या विज्ञान से रहित, ह्रदय का मलिन तथा सतत दुःखी होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 17, 50)

44 संख्या - युग्म योग

सब ग्रह जब दो स्थानों में होते हैं, तब 'युग्म' योग बनता है।

युगयोगोत्पन्न बालक पाखण्डी, धनहीन, समाज बहिष्कृत, और माता-पुत्र धर्म से रहित होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 17, 49)

45 संख्यायोग - शूल योग

सब ग्रह जब तीन स्थानों में होते हैं, तब 'शूल' योग बनता है।

शूलयोगोत्पन्न जातक प्रखरस्वभाव, आलसी, दरिद्र, हिंसक, समाज से बहिष्कृत, शूर, तथा युद्ध में विख्यात होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 17, 48) मतान्तर से स्वभाव से क्रोधी, धन-लोभी, बहादुर, क्षत छिद्रों से युक्त तथा निर्धन होता है। शिक्षित किंतु स्वतंत्र व्यवसाय में रुचि, जन्मभूमि से दूर प्रवास, माता-पिता का भरपूर सुख मिलता है।

46 संख्या - केदार योग

सब ग्रह जब चार स्थानों में होते हैं, तब 'केदार' योग बनता है।

केदारयोगज जातक बहुतों का उपकारक, किसान, सत्यवादी, सुखी, चंचल स्वभाव वाला तथा धनी होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 17, 47) मतान्तर से धनवान, कृषि से लाभ, सुरत, बुद्धिमान, उपकारी, नौकरी से लाभान्वित, पूर्व आयु में कष्ट बाद में कष्ट, रहित जीवन, माता-पिता का सुख बहुधा दीर्घजीवी होते हैं।

47 संख्या - पाश योग

सब ग्रह जब पाँच स्थानों में होते हैं, तब 'पाश' योग बनता है।

पाशयोगोत्पन्न जातक जेल जानेवाला, कार्य में दक्ष, प्रपन्ची, बहुत भाषण करनेवाला, शीलरहित, अनेक सेवक वाला तथा विशाल परिवार वाला होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम्, (अध्याय 36, श्लोक 18, 46) मतान्तर से दूसरों से हमेशा प्रशंसित, धनोपार्जन में सर्वदा ध्यान देने वाला, अत्यंत चतुर, बातुनी, पुत्रवान, जनता का कल्याण करने की इच्छा होती है।

48 संख्या - दाम योग

सब ग्रह जब छः स्थानों में होते हैं, तब यह योग होता है।

दामयोगोत्पन्न जातक जनोपकारी, न्यायापार्जित धन वाला, महान्-ऐश्वर्यशाली, विख्यात, अनेक पुत्र तथा रत्नों से समृद्ध, धीर तथा विद्वान् होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 18, 45) उपकारी, उत्तम बुद्धि, विद्या तथा धन से यशस्वी, पूर्व आयु में बहुत कष्ट उठाकर उत्तर आयु में सुख भोगने वाला, आयु के 36वें वर्ष तक माता-पिता का सुख, 42वें वर्ष के बाद आय के नये स्रोत बनते हैं। लोगों के विरोध तथा शत्रुता से जीवन में कष्ट मिलते हैं।

49 संख्या - वीणायोग (वल्लकी योग)

सब ग्रह जब सात स्थानों में होते हैं तब 'वल्लकी (वीणा)' योग होता है।

वीणायोगज जातक गीत, नृत्य तथा वाद्य का प्रेमी, कुशल, सुखी, धनी, नेता तथा अनेक सेवक वाला होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 36, श्लोक 18, 44) सब कार्यों में प्रवीण तथा गायन वादनादि कलाओं का शौकीन होना ऐसा शास्त्रकार बताते हैं। जो वीणा योग में उत्पन्न होता है वह नाचने, गाने बजाने का शौकीन और धनी होता है।

50 रुचक - महापुरुष योग

यदि मंगल अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो तो ':चक' योग होता है।

'रुचक' योग में उत्पन्न जातक बलान्वित शरीर, लक्ष्मी, शास्त्री (शास्त्र निष्णात), मंत्रों के जप और अभिचार में कुशल, राजा या राजा के समान, लावण्य युक्त, शरीर ईषत् लालिमायुक्त, कोमल तनु, शत्रुओं पर विजय प्राप्ति करने वाला, त्यागी, धनी, 70 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाला, सुखी, सेना और घोड़ों का स्वामी होता है। योगजनक ग्रह: मंगल।

51 रुचक योग

यदि कुण्डली में मंगल स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो व सूर्य या चन्द्रमा से युक्त हो तो रुचक योग बनता है।

यदि सूर्य या चन्द्रमा का भी मंगल से योग हो तो यह योग भंग हो जाता है और इस योग के विशिष्ट फलों के स्थान पर साधारण सत् फल प्राप्त होते हैं। शम्भु होरा प्रकाश (अध्याय 20, श्लोक 20)

52 रुचक योग

यदि कुण्डली में मंगल स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो व सूर्य या चन्द्रमा बलवान न हों तो रुचक योग बनता है। (होरा रत्नम 5/564)

महापुरुष योग के फलों में न्यूनता आ जाती है किन्तु जातक को फिर भी सुख प्राप्त होता है।

53 भद्र - महापुरुष योग

यदि बुध अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो तो 'भद्र' योग होता है।

भद्र योग में उत्पन्न जातक का सिंह के समान चेहरा, हाथी के समान गति, पुष्ट ऊरु, उन्नत वक्षस्थल तथा बाहु लम्बे, गोल और पुष्ट होते हैं। जातक मानी, बन्धुजनों के उपकार में निपुण, विपुल प्रज्ञा, यश, धन वाला राजा के समान होता है और 80 वर्ष की आयु होती है। योगजनक ग्रह: बुध

54 भद्र योग

यदि कुण्डली में बुध स्वराशि या उच्च राशि का लग्न से केन्द्र में हो किन्तु सूर्य या चन्द्रमा से युक्त हो तो भद्र योग बनता है। शम्भु होरा प्रकाश (अध्याय 20 श्लोक 20)

महापुरुषयोग के सभी राजयोग कारक फल नहीं मिलते, किन्तु बुध की दशा में सामान्य शुभ फल मिलते है।

55 भद्र योग

यदि कुण्डली में बुध स्वराशि या उच्च राशि का लग्न से केन्द्र में हो किन्तु सूर्य या चन्द्रमा बलवान न हो तो भद्र योग बनता है। (होरा रत्नम, 5/564)

महापुरुष योग के फलों में न्यूनता आ जाती है किन्तु जातक को फिर भी सुख प्राप्त होता है।

56 हंस – महापुरुष योग

यदि बृहस्पति अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो तो 'हंस' योग होता है।

'हंस' योग में उत्पन्न जातक का लालिमायुक्त मुख, ऊँची नाक, शुभ चरण, हंस के समान स्वर, कफ प्रधान प्रकृति, गौर वर्ण, सुकुमार पत्नी, कामदेव के समान सुन्दर, सुखी, शास्त्र ज्ञान परायण, अतिनिपुण, गुणी, उत्तम कार्य और आचार वाला होता है और उसकी 84 वर्ष की आयु होती है। योगजनक ग्रह: बृहस्पति

57 हंस योग

यदि कुण्डली में बृहस्पति स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो किन्तु सूर्य या चन्द्रमा से युक्त हो तो हंस योग बनता है। शम्भु होरा प्रकाश (अध्याय 20 श्लोक 20)

महापुरुषयोग के सभी राजयोग कारक फल नहीं मिलते, किन्तु गुरु की दशा में सामान्य शुभ फल मिलते हैं।

58 हंस योग

यदि कुण्डली में गुरु स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो किन्तु सूर्य या चन्द्रमा बलवान न हों तो हंस योग बनता है। (होरा रत्नम 5/564)

महापुरुष योग के फलों में न्यूनता आ जाती है किन्तु जातक को फिर भी सुख प्राप्त होता है।

59 मालव्य – महापुरुष योग

यदि शुक्र अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो तो 'मालव्य' योग होता है।

'मालव्य' योग में जन्म हो उसकी स्त्री के समान चेष्टा (हाथ मटकाना, चलना, लज्जा का नाट्य करना आदि), शरीर की संधियाँ ललित (मृदु और सुन्दर), सुन्दर आकर्षक नेत्र, सौन्दर्य युक्त शरीर, गुणी (अनेक सद् गुण सम्पन्न), तेजस्वी, स्त्री, पुत्र, वाहन से युक्त, धनी, विद्वान, उत्साहयुक्त, प्रभुशक्तिसम्पन्न, मंत्रवक्ता, चतुर, त्यागी, परस्त्रीरत होता है और सत्तर वर्ष की आयु तक जीता है। योगजनक ग्रह: शुक्र

60 मालव्य योग

यदि कुण्डली में शुक्र स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो किन्तु सूर्य या चन्द्रमा से युक्त हो तो मालव्य योग बनता है। शम्भु होरा प्रकाश (अध्याय 20 श्लोक 20)

महापुरुषयोग के सभी राजयोग कारक फल नहीं मिलते, किन्तु शुक्र की दशा में सामान्य शुभ फल मिलते हैं।

61 मालव्य योग

यदि कुण्डली में शुक्र स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो किन्तु सूर्य या चन्द्रमा बलवान न हों तो मालव्य योग बनता है। (होरा रत्नम 5/564)

महापुरुष योग के फलों में न्यूनता आ जाती है किन्तु जातक को फिर भी सुख प्राप्त होता है।

62 शश - महापुरुष योग

यदि शनि अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो तो 'शश' योग होता है।

जातक राजा या राजा के समान, वन और पर्वतों से प्रेम करने वाला, बहुत से व्यक्तियों का अधिपति, क्रूर बुद्धि युक्त, धातु के व्यापार में कुशल, वाद विवाद में विनोद करने वाला, दानी, क्रोध भरी दृष्टि वाला, तेजस्वी, अपनी माता का भक्त, शूर, श्याम वर्ण, सुखी, परस्त्री में आसक्त होता है और सत्तर वर्ष की आयु होती है। योगजनक ग्रहः शनि

63 शश योग

यदि कुण्डली में शनि स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में किन्तु सूर्य या चन्द्रमा से युक्त हो तो शश योग बनता है। शम्भु होरा प्रकाश (अध्याय 20 श्लोक 20)

महापुरुषयोग के सभी राजयोग कारक फल नहीं मिलते, किन्तु शनि की दशा में सामान्य शुभ फल मिलते हैं।

64 शश योग

यदि कुण्डली में शनि स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हो किन्तु सूर्य या चन्द्रमा बलवान न हों तो शश योग बनता है। (होरा रत्नम 5/564)

महापुरुष योग के फलों में न्यूनता आ जाती है किन्तु जातक को फिर भी सुख प्राप्त होता है।

65 गजकेसरी योग

परिभाषा : चन्द्रमा से केन्द्रस्थान (1/4/7/10) में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है।

फल : 'गजकेसरी' में उत्पन्न जातक तेजस्वी, धन धान्य से युक्त, मेधावी, गुणी, राजप्रिय होता है। जातक केसरी (शेर) की तरह अपने शत्रुवर्गों को नष्ट कर देता है। ऐसा व्यक्ति सभाओं में प्रौढ़ (जिसका वाणी पर आधिपत्य हो, किसी विषय पर गम्भीरता पूर्वक और

अधिकार से बोलना प्रौढ़ भाषण कहलाता है) भाषण करने वाला, राजस वृत्ति का होता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु हो। बहुत तीव्र बुद्धि हो, महान् यश प्राप्त करे और अपने स्वाभाविक तेज से ही औरों को जीत लें। योगजनक ग्रहः चन्द्रमा व गुरु।

66 गजकेसरी योग

चन्द्रमा और गुरु की युति हों

जातक शक्तिशाली, प्रसिद्ध, बुद्धिमान, गुणवान, धनवान, प्रेम में समान रुप तथा चंचल मन का होता है।

67 गजकेसरी योग

चन्द्रमा से चतुर्थ में गुरु हो।

जातक को घर का तथा माता का अच्छा सुख मिलता है। किन्तु मानसागरी के अनुसार यह योग जातक को घर के सुख तथा माता के सुख से वंचित करता है और दूसरों के लिए कार्य करने की मनोवृत्ति देता है।

68 गजकेसरी योग

चन्द्रमा से सप्तम में गुरु हो।

जातक का स्वास्थ्य उत्तम होता है, दीर्घायु होता है, परिवार के सदस्यों द्वारा मान्य होता है, तथा मितव्ययी होता है। मानसागरी के अनुसार जातक नपुंसक, पीलिया रोग से पीडित, तथा वैवाहिक सुख प्राप्त करता है।

69 गजकेसरी योग

चन्द्रमा से दशम में गुरु हो।

जातक मनोनुकूल कार्य करता है, तथा सम्मानित पद और धन प्राप्त करता है। प्रबल आदर्शवाद तथा आध्यात्मिकता में रुचि होती है। मानसागरी के अनुसार जातक पत्नी और बच्चों का परित्याग करके सन्यासी हो जाता है।

70 गजकेसरी योग

चन्द्रमा और गुरु की युति प्रथम भाव में हो।

जातक देखने में सुन्दर, मित्रों, पति-पत्नी, सन्तान तथा मित्रों से युक्त होता है। जातक को स्वास्थ्य सुख मिलता है, सम्मानित होता है तथा प्रभावित करता है।

71 गजकेसरी योग

चन्द्रमा और गुरु की युति चतुर्थ भाव में हो।

जातक राजा या मंत्री के समान, विद्वान होता है। गृह सुख भरपूर मिलता है।

72 गजकेसरी योग

चन्द्रमा और गुरु की युति सप्तम भाव में हो।

जातक विद्वान, कुशल, व्यवसायी, धनवान तथा वैवाहिक सुख प्राप्त करता है। जातक भाग्यशाली होता है तथा व्यवसाय में साझेदारी से धन प्राप्त करता है।

73 गजकेसरी योग

चन्द्रमा और गुरु की युति नवम भाव में हो।

जातक प्रतिष्ठित, भाग्यशाली, धनवान, और सन्तोषी होता है। भाग्य उत्तम होता है तथा सत्कर्म और धार्मिक कार्य होते हैं।

74 गजकेसरी योग

चन्द्रमा और गुरु की युति दशम भाव में हो।

जातक विद्वान, धनी, अहंकारी, सम्मानित होता है। यह कर्म के क्षेत्र में उच्च पद तथा आर्थिक समृद्धि का योग है।

75 चन्द्राधि योग

चन्द्रमा से छठे, सातवें तथा आठवें स्थानों में शुभग्रह हों तो अधियोग होता है।

जातक ग्रहों के बलानुसार राजा, मन्त्री या सेनापति होता है। योगजनक ग्रहः छठे - बुध, बृहस्पति, शुक्र। सातवें - बुध, बृहस्पति, शुक्र। आठवें - बुध, बृहस्पति, शुक्र।

76 सुनफा योग

सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह चन्द्र से द्वितीय में हो तो सुनफा योग बनता है।

फल (1): सुनफायोगोत्पन्न जातक राजा या राजसदृश, मतिमान्, धनी, विख्यात तथा स्वबाहुबलोपार्जित वित्त वाला होता है। फल (2): सुनफा योग में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान्, अपनी भुजाओं (हाथ) से धन पैदा करने वाला, अत्यन्त धार्मिक, शास्त्रों के तत्व का ज्ञाता, बहुत यशस्वी, सुन्दर, गुणों से युत, शान्त स्वभाव, सुखी, राजा या मन्त्री और परम बुद्धिमान् होता है। योगजनक ग्रह : मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि।

77 सुनफा (भौम) योग

चन्द्र से द्वितीय में मंगल हो तो सुनफा योग बनता है।

जातक पराक्रमी, धनी, कठोर वाणी बोलने वाला, उग्र, सेनापति, हिंसक, पाखण्ड का विरोध करने वाला होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 10)

78 सुनफा (बुध) योग

चन्द्र से द्वितीय में बुध हो तो सुनफा योग बनता है।

यदि सुनफा योग कारक जन्मांग में बुध हो तो जातक वेद, शास्त्र, संगीत विद्या में निपुण, धर्म में रत, काव्य बनाने वाला, मनस्वी, सब का हितैषी व सुन्दर शरीर वाला होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 11) बृहज्जातक में कहा है 'सौम्यः पटुः सुवचनो निपुणः कलासु'।

79 सुनफा (गुरु) योग

चन्द्र से द्वितीय में गुरु हो तो सुनफा योग बनता है।

यदि सुनफा योग कारक गुरु हो तो जातक विद्याओं में आचार्य अर्थात् समस्त विद्या जानने वाला, विख्यात (प्रसिद्ध) राजा या राजा का प्रिय पात्र तथा सुन्दर परिवार व धन से परिपूर्ण होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 12)

80 सुनफा (शुक्र) योग

चन्द्र से द्वितीय में शुक्र हो तो सुनफा योग बनता है।

यदि सुनफा योग कारक शुक्र हो तो जातक स्त्री खेत, धन, गृह, वैभव, चतुष्पदों (गाय, भैंसा घोड़ा हाथी आदि) से युक्त, सुन्दर पराक्रमी, राजा से सम्मानित धैर्यवान् व समस्त कार्यों में कुशल होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 13)

81 सुनफा (शनि) योग

चन्द्र से द्वितीय में शनि हो तो सुनफा योग बनता है।

यदि सुनफा योग कारक शनि हो तो जातक चतुर बुद्धि वाला, गाँव तथा शहरी मनुष्यों से प्रतिदिन पूजित, धनी, कार्यों में संलग्न व धैर्यधारण करने वाला होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 14)

82 अनफा योग

सूर्य को छोड़कर जब कोई ग्रह चन्द्र से द्वादश हो तो अनफा योग बनता है।

अनफा योगज जातक राजा, नीरोग, सुशील, यशस्वी, लोकविख्यात, सुन्दर तथा अनेक विधा सौख्यपूर्ण होता है। नृपो नीरुक् सुशीलश्च यशस्वी लोकविश्रुतः। सुभगस्त्वनफोद्भूतो नानाविधसुखान्वितः।। अनफा योग में पैदा हुआ जातक वक्ता (बोलने वाला) सामर्थ्यवान्, धनवान्, रोग रहित, सुन्दर शीलवान्, अन्न पान पुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाला, विख्यात, गुणवान्, सुखी, प्रसन्न चित्त व सुन्दर शरीर होता है। योगजनक ग्रह : मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि।

83 अनफा (भौम) योग

चन्द्र से द्वादश मंगल हो तो अनफा योग बनता है।

जातक चोरों का मालिक, ढीठ, स्वतन्त्र, अभिमानी, युद्ध प्रिय, क्रोधी, श्रेष्ठ वा सेवा करने योग्य, प्रशंसनीय, सुन्दर शरीर वाला व सुन्दर लाभ कर्ता व प्रगल्भ होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 15)

84 अनफा (बुध) योग

चन्द्र से द्वादश बुध हो तो अनफा योग बनता है।

जातक गान्धर्व (गान, नृत्य) विद्या व लेख लिखने में चतुर, कवि, भाषण में निपुण, राजा से आदर व सत्कार पाने वाला, सुन्दर शरीर वाला और प्रसिद्ध कार्य कर्ता होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 16)

85 अनफा (गुरु) योग

चन्द्र से द्वादश गुरु हो तो अनफा योग बनता है।

जातक गम्भीर, बलवान्, मेधावी, शुभ कार्यो में संलग्न, बुद्धिमान्, राजा से यश प्राप्त करने वाला और उत्तम कवि होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 17)

86 अनफा (शुक्र) योग

चन्द्र से द्वादश शुक्र हो तो अनफा योग बनता है।

जातक स्त्रियों का प्रिय, नम्र, राजा, गायो का स्वामी, वा भोगी स्वरुपवान्, प्रसिद्ध, सुवर्ण से सम्पत्ति वाला व उग्र होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 18)

87 अनफा (शनि) योग

जब शनि चन्द्र से द्वादश हो तो अनफा-शनि योग बनता है।

यदि अनफा योग करने वाला शनि हो तो विशाल हाथ वाला, विस्तीर्णभुवनेशो अर्थात ॰ विशाल भूमि व जंगल का स्वामी, स्ववचन का पालनकर्ता, चतुष्पद सम्पत्ति वाला, दुश्चरित्र स्त्री का पति वा भक्त एवं गुणवान् होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 19)

88 दुरुधरा योग

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश में सूर्य के अतिरिक्त कोई न कोई ग्रह हो तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

दुरुधरोत्पन्न मनुष्य धनी, वाहनयुक्त, दानी, सुखी, नौकरों से युक्त तथा शत्रुहन्ता होता है। दुरुधरोत्पन्न मनुष्य वाणी बुद्धि पराक्रम व गुणों से भूमि (संसार) में ख्याति प्राप्त करने वाला, स्वतन्त्र सुख लक्ष्मी वाहन सवारी आदि के सुख को भोगने वाला, दानी, पारिवारिक पालन से दुःख प्राप्त करने वाला, अच्छे व्यवहार वाला व प्रधान होता है। योगजनक ग्रह : मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि।

89 दुरुधरा (भौम बुध) योग

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भौम बुध ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातिका असत्यवादी, धनी, चतुर, अत्यन्त दुष्ट, अधिक लोभी, वृद्ध पुरुष में आसक्त व कुल में प्रधाना होती है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 20)

90 दुरुधरा (भौम बुध) योग

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भौम बुध ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातक असत्यवादी, धनी, चतुर, अत्यन्त दुष्ट, अधिक, लोभी, वृद्ध कुलटा स्त्री में आसक्त व कुल में प्रधान होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 20)

91 दुरुधरा योग (भौम गुरु)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भौम गुरु ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातक कार्यों में विख्यात, वैभव से युत अर्थात् धनी, अधिक मनुष्यों से शत्रुता करने वाला, क्रोधी, प्रसन्न चित्त, कुल का रक्षक एवं संग्रह करने वाला होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 21)

92 दुरुधरा योग (भौम शुक्र)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भौम शुक्र ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातिका उत्तम पति वाली, पाठान्तर से अच्छी कामना (इच्छा) करने वाली, सुन्दर, ऐश्वर्य से युत, विवादी, पवित्र, कुशल कार्यकर्ता, व्यायाम (कसरत) करने वाली और वीरांगना होती है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 22)

93 दुरुधरा योग (भौम शुक्र)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भौम शुक्र ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातक उत्तम स्त्री वाला, पाठान्तर से अच्छी कामना (इच्छा) करने वाला सुन्दर ऐश्वर्य से युत, विवादी, पवित्र, कुशल कार्यकर्ता, व्यायाम (कसरत) करने वाला और युद्ध में वीर होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 22)

94 दुरुधरा योग (भौम शनि)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भौम शनि ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातिका निन्दित पुरुष के साथ रमण करने वाली पाठान्तर से खराब पति व निन्दित धन वाली, अत्यन्त संग्रही, कुकर्मों में आसक्त, क्रोधी, चुगलखोर व शत्रु को मारने वाली होती है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 23)

95 दुरुधरा योग (भौम शनि)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भौम शनि ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातक निन्दित स्त्री के साथ रमण करने वाला पाठान्तर से खराब स्त्री व निन्दित धन वाला, अत्यन्त संग्रही, कुकर्मों में आसक्त, क्रोधी, चुगलखोर व शत्रु को मारने वाला होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 23)

96 दुरुधरा योग (बुध गुरु)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश बुध गुरु ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

बुध गुरु से दुरुधरा योग हो तो जातक धर्मपरायण, शास्त्रज्ञाता, वाचाल, सुन्दर कवि, धनी, त्यागी और प्रसिद्ध होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 24)

97 बुध शुक्र से दुरुधरा योग का फल

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश बुध शुक्र ग्रह हो तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

यदि बुध शुक्र से दुरुधरा योग हो तो जातक मीठा वचन बोलने वाला, सुन्दर ऐश्वर्य से युत, स्वरुपवान्, नाच गाने में प्रीति रखने वाला, सेवा करने के योग्य, विक्रमी व मन्त्री होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 25)

98 दुरुधरा योग

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश बुध शनि ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातक अल्पविद्या ज्ञान से देश से विदेश में जाकर धन पैदा करने वाला, दूसरों से वन्दनीय व अपने मनुष्यों का विरोध करने वाला होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 26)

99 दुरुधरा योग (गुरु शुक्र)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश गुरु शुक्र ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

यदि गुरु शुक्र से दुरुधरा योग हो तो जातक धैर्य बुद्धि व पराक्रम से युत नीति ज्ञाता, सुवर्ण रत्नों से परिपूर्ण, विख्यात, राजा का कार्य करने वाला होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 27)

100 दुरुधरा योग (गुरु शनि)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश गुरु शनि ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातक सुख नीति विज्ञान से युक्त, प्यारी वाणी बोलने वाला, श्रेष्ठ विद्वान्, उत्तम, शान्त, धनवान् व स्वरुपवान् होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 28)

101 दुरुधरा योग (शुक्र शनि)

जब चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश शुक्र शनि ग्रह हों तो दुरुधरा नाम का योग होता है।

जातक प्रबुद्ध, परिपक्व, कुल में प्रधान, निपुण (चतुर), स्त्रियों का प्यारा, धनी व राजा से सत्कार प्राप्त होने पर अधिक धन पाने वाला होता है। सारावली (अध्याय 13, श्लोक 29)

102 केमद्रुम योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है।

जिस मनुष्य का केमद्रुम योग में जन्म होता है तो वह राजा के वंश में उत्पन्न होने पर भी स्त्री अन्न पान (दूध आदि) गृह (घर), वस्त्र व मित्रों से हीन, (अर्थात् स्त्री अन्नादि का अभाव) दरिद्रता दुःख रोग व दीनता के विकार से युत, मजदूरी करने वाला, दुष्ट प्रकृति वाला व सबसे विरुद्ध व्यवहार करने वाला होता है।। केमद्रुम योग में जन्म लेने वाला मनुष्य आर्थिक रुप से विपन्न, मानसिक व आर्थिक रुप से अस्थिर, स्वतंत्र व्यापार में एक बार पूँजी डूबने का भय, कंजूस और ऋण लेने की प्रवृत्ति तथा कुंडली के शुभ योगों के फल प्राप्ति में बाधा होती है।

103 कल्पद्रुम योग

केमद्रुम योग उपस्थित हो किन्तु लग्न से केन्द्र में ग्रह हों तो कल्पद्रुम योग बनता है।

केमद्रम योग के अशुभ फल नहीं होते तथा जातक को सभी सुख प्राप्त होते हैं।

104 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है।

किन्तु चन्द्रमा से केन्द्र में ग्रह होने से केमदुम योग भंग हो जाता है। यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

105 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है किन्तु सभी ग्रह चन्द्रमा को देखें तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है।

यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

106 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है।

किन्तु चन्द्र और शुक्र केन्द्र में हो तथा उन पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है। यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

107 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है किन्तु केन्द्र में बलवान चन्द्रमा हो तथा शुभग्रहों से दृष्ट हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है।

यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

108 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है किन्तु यदि चन्द्रमा किसी शुभ ग्रह के साथ हो या बृहस्पति से दृष्ट हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है।

फलण यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

109 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है किन्तु यदि चन्द्रमा नवांश कुण्डली में उच्च राशि में या मित्र राशि में हो तथा गुरु से दृष्ट हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है।

यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

110 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है। किन्तु यदि पूर्णिमा का चन्द्रमा लग्न में किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है।

यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

111 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है। किन्तु यदि चन्द्रमा दशम में उच्च राशि में तथा किसी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है।

यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

112 केमद्रुम भंग योग

यदि चन्द्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में सूर्य, राहु और केतु के अलावा कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' योग बनता है। किन्तु यदि मंगल और बृहस्पति तुला में हो, सूर्य कन्या में और चन्द्रमा मेष में हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है। शम्भु होरा प्रकाश (अध्याय 13, श्लोक 17)

यह योग केमदुम योग के अशुभ फलों को भंग कर देता है।

113 वसुमति योग

चन्द्रमा से उपचय (3, 6, 10, 11) स्थानगत सभी शुभग्रह(बुध, बृहस्पति, शुक्र) हों तो 'वसुमति योग' होता है।

चन्द्रमा से उपचय स्थानगत सभी शुभग्रह हों तो जातक पूर्ण धनी, दो शुभग्रह हों तो मध्यम धन वाला और एक शुभग्रह हो तो अल्पधन वाला होता है। योगजनक ग्रह : बलवान चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र।

114 वसुमति योग

लग्न से उपचय (3, 6, 10, 11) स्थानगत सभी शुभग्रह (चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र) हों तो 'वसुमति योग' होता है।

यदि कुण्डली में लग्न से उपचय (3।6।10।11) में समस्त शुभग्रह हों तो अधिक धनी, यदि दो शुभग्रह उपचय में हों तो मध्यम धनी, यदि 1 शुभग्रह हो तो अल्प धनी होता है। सारावली (त्रयोदशो अध्याय, श्लोक 32)

115 अधम योग

यदि सूर्य से केन्द्र मे (1, 4, 7, 10) चन्द्रमा हो तो अधम योग होता है।

यदि अधम योग में उत्पन्न हो तो द्रव्य, सवारी, यश, सुख, सम्पत्ति, ज्ञान, बुद्धि, निपुणता, विद्या, उदारता और सुख योग, इनका बहुत कम फल प्राप्त हो। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 14, 18)

116 सम योग

सूर्य से पणकर स्थान (2, 5, 8, 11) में चन्द्रमा हो तो सम योग होता है।

यदि सम योग में उत्पन्न हो तो द्रव्य, सवारी, यश, सुख, सम्पत्ति, ज्ञान, बुद्धि, निपुणता, विद्या, उदारता और सुख योग, इनका मध्यम फल प्राप्त हो। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 14, 18)

117 वरिष्ठ योग

सूर्य से आपोक्लिम (3, 6, 9, 12) स्थान में चन्द्रमा हो तो वरिष्ठ योग होता है।

वरिष्ठ योग में जन्म हो तो द्रव्य, सवारी, यश, सुख, सम्पत्ति, ज्ञान, बुद्धि, निपुणता, विद्या, उदारता और सुख योग, आदि प्रचुर मात्रा में मिलें। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 14, 18)

118 धनधारा योग

दिन में जन्म हो तथा चन्द्रमा स्वनवांश या अधिमित्र के नवांश में हो और बृहस्पति से दृष्ट हो तो धनधारा योग बनता है।

जातक अत्यधिक धनी होता है।

119 धनधारा योग

रात में जन्म हो तथा चन्द्रमा स्वनवांश या अधिमित्र के नवांश में हो और शुक्र से दृष्ट हो तो धनधारा योग बनता है।

जातक अत्यधिक धनी होता है।

120 शकट योग

यदि चन्द्रमा से बृहस्पति छठे स्थित हो और बृहस्पति लग्न से केन्द्र में न हो तो 'शकट' योग बनता है।

जातक दीन-हीन (निराश्रय), दरिद्र, हमेशा मुश्किल में फंसा हुआ, सबका अप्रिय तथा सदा भाग्य में उतार चढाव आता रहता है। जातक अनासक्त (अलग), गृह विहीन, दीर्घायु तथा दूसरों के उपकार व दया पर जीने वाला होता है। सदा कष्ट तथा परिश्रम का जीवन पाता है और राज्य, धन, सुख सबसे वंचित रहता है। जीवन में संपन्नता और विपन्नता का चक्र चलता रहता है। ऐसा व्यक्ति प्रसिद्धि प्राप्त

नहीं कर सकता और साधारण जीवन व्यतीत करेगा। कभी-कभी ऐसे व्यक्ति का सितारा बहुत तेज हो जाता है और कभी सितारा बिलकुल गिर जाता है।

121 शकट योग

बृहस्पति लग्न से केन्द्र में न हो तथा चन्द्रमा से अष्टम में हो तो शकट योग बनता है।

जातक दीन-हीन (निराश्रय), दरिद्र, हमेशा मुश्किल में फंसा हुआ, सबका अप्रिय तथा सदा भाग्य में उतार चढ़ाव आता रहता है। जातक अनासक्त (अलग), गृह विहीन, दीर्घायु तथा दूसरों के उपकार व दया पर जीने वाला होता है।

122 शकट योग

बृहस्पति लग्न से केन्द्र में न हो तथा चन्द्रमा से बारहवें में हो तो शकट योग बनता है।

जातक दीन हीन (निराश्रय), दरिद्र, हमेशा मुश्किल में फंसा हुआ, सबका अप्रिय तथा सदा भाग्य में उतार चढ़ाव आता रहता है। जातक अनासक्त (अलग), गृह विहीन, दीर्घायु तथा दूसरों के उपकार व दया पर जीने वाला होता है।

123 शकट भंग योग

बृहस्पति लग्न से केन्द्र में न हो तथा चन्द्रमा से बारहवें में हो तथा छठे घर को देख रहा हो तो शकट योग भंग हो जाता है।

शकट योग के अधिकांश अशुभ फल नहीं मिलते तथा जातक को सुख की प्राप्ति होती है।

124 वेशि योग

सूर्य से द्वितीय स्थानगत चन्द्रमा के अतिरिक्त ग्रहों के रहने से वेशि योग बनता है।

फल : (1) वेशियोगोत्पन्न जातक सत्यवादी, सतत आलसी, समदर्शी, सुखी, स्वल्पधनी तथा लम्बा शरीर वाला होता है। समदृक् सत्यवाङ्मर्त्यो दीर्घकायोलसस्तथा। सुखभागल्पवित्तोपि वेशियोगसमुद्भवः।। (बृहत्पाराशर) (2) जातक सत्यवादी, आलसी, दयालु, गुणवान तथा दृष्टि दोष युक्त, लम्बे कद का, सन्तुलित दृष्टिकोण युक्त तथा अच्छी स्मरण शक्ति और सामान्य धनवान होता है। (3) जातक मन्द दृष्टि, स्थिर वाणी, अधिक परिश्रमी नम्र व लम्बा देह होता है। ऐसा यवन स्वामी अर्थात् यवनाचार्य ने कहा है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 2) योगजनक ग्रह : सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि।

125 वेशि योग (शुभ)

सूर्य से द्वितीय स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई शुभ ग्रह हो।

जातक सुवक्ता, धनवान तथा अपने शत्रुओं को नष्ट करनेवाला होता है।

126 वेशि योग (अशुभ)

सूर्य से द्वितीय स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई अशुभ ग्रह हो।

जातक सुवक्ता, धनवान तथा अपने शत्रुओं को नष्ट करनेवाला होता है।

127 वेशि योग (भौम)

सूर्य से द्वितीय स्थान में मंगल हो।

अधिक चलने वाला व परोपकारी होता है। मार्गलघुः क्षितिपुत्रे परोपकारी नरो वेशौ। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 4)

128 वेशि योग (बुध)

सूर्य से द्वितीय स्थान में बुध हो।

यदि वेशि योग कर्त्ता बुध हो तो जातक बहुत कार्य करने वाला, निर्धन, कोमल, नम्र और लज्जा करने वाला होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 4)

129 वेशि योग (गुरु)

सूर्य से द्वितीय स्थान में गुरु हो।

धन का संग्रही, विद्वान्, सुन्दर मित्रों से युत जातक होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 3)

130 वेशि योग (शुक्र)

सूर्य से द्वितीय स्थान में शुक्र हो।

जातक भयभीत (डरपोक), कार्य में अस्थिर, स्वल्प इच्छा करने वाला और परतन्त्र होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 3)

131 वेशि योग (शनि)

सूर्य से द्वितीय स्थान में शनि हो।

जातक दूसरे की स्त्री में आसक्त, उग्रस्वभाव, बड़ी आकृति वाला, शठ (मूर्ख, धूर्त), घृणी (ग्लानि करने वाला) और धनी होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 5)

132 वोशि योग

सूर्य से द्वादश स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त ग्रहों के रहने से वोशि योग बनता है।

वोशियोगज जातक कुशल, दानशील, बली, विद्वान, कीर्तिमान् होता है। वाशौ च निपुणो दाता यशोविद्याबलान्वितः।। (बृहत्पाराशर) जातक उत्कृष्ट (अच्छी) वाणी वाला, स्मरण शक्ति वाला, उद्योगी, तिरछी दृष्टि वाला, स्थूल शरीर धारी, राजा के तुल्य व सात्विकी होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 6) योगजनक ग्रह : मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि

133 वोशि योग (शुभ)

सूर्य से द्वादश स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई शुभ ग्रह हो।

जातक देखने में सुन्दर, सुखी, गुणनिधि, धीर, धार्मिक, दाता, राजा का प्रिय (अच्छे पद वाला) और विख्यात हो(उसको सब लोग चाहें। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 9)

134 वोशि योग (अशुभ)

सूर्य से द्वादश स्थान में चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई अशुभ ग्रह हो।

दूसरों की निन्दा करनेवाला, कान्तिहीन हो, छोटे आदमी की सोहबत करे और स्वयं दुर्जन हो। मायावी, दुष्टों का मित्र, स्वयं दुराचरण करने वाला लेकिन शास्त्रों की दुहाई देने वाला हो। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 10)

135 वोशि योग (मंगल)

सूर्य से द्वादश स्थान में मंगल ग्रह हो।

संग्राम (युद्ध) में विख्यात (विजय प्राप्त कर्त्ता) तथा एक वाणी वाला (पाठान्तर से अपने भाग्य से जीने वाला) होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 8)

136 वोशि योग (बुध)

सूर्य से द्वादश स्थान में बुध हो।

जातक प्रिय (प्यारी) वाणी बोलने वाला, लाल शरीर वाला, एवं दूसरों की आज्ञा का पालन करने वाला होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 8)

137 वोशि योग (गुरु)

सूर्य से द्वादश स्थान में गुरु हो।

जातक धैर्य बल बुद्धि से युत एवं वाणी में तत्व वाला होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 7)

138 वोशि योग (शुक्र)

सूर्य से द्वादश स्थान में शुक्र हो।

वीर, विख्यात, गुणी, यशस्वी, जातक होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 7)

139 वोशि योग (शनि)

सूर्य से द्वादश स्थान में शनि हो।

जातक बनिया (व्यापारी) के कुल के समान स्वभाव वाला, (पाठान्तर से दुष्ट स्वभाव वाला) दूसरे के धन को चुराने वाला, गुरुजनों से शत्रुता करने वाला व निर्लज्ज, (पाठान्तर से तपस्विनी स्त्री का स्वामी) होता है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 9)

140 वोशि योग (शनि)

सूर्य से द्वादश स्थान में शनि हो।

जातिका व्यापारी कुल के समान स्वभाव वाली, (पाठान्तर से दुष्ट स्वभाव वाली) दूसरे के धन को चुराने वाली, गुरुजनों से शत्रुता करने वाली व निर्लज्ज, (पाठान्तर से तपस्विनी स्त्री) होती है। सारावली (अध्याय 14, श्लोक 9)

141 उभयचर योग

सूर्य से द्वितीय, द्वादश दोनों में चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य ग्रहों के रहने से उभयचर योग होता है।

फल : (1) 'पाप' उभयचरोत्पन्न जातक रोगग्रस्त, दरिद्री, अस्वतन्त्र कर्म करने वाला होता है। 'शुभ' उभयचरोत्पन्न जातक राजा तुल्य धनी, ऐश्वर्यशाली, बलवान्, सुखी, सुशील, दयावान् बनाते हैं। (2) जातक समस्त कार्यभार को सहन करने वाला, कल्याण से युत (पाठान्तर से सुन्दर समदृष्टि वाला), समान शरीर वाला, अधिक बलवान्, अधिक ऊँची देह से रहित, समस्त वस्तु व साधनों से पूर्ण, विद्यावान्, सुन्दर ऐश्वर्य से युत, अधिक नौकर व धन से युत, अपने बन्धु बान्धवों का रक्षक, राजा के सदृश, पूर्ण उत्साही, प्रसन्न चित्त व सुख भोग करने वाला होता है। योगजनक ग्रह : सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि।

142 सफल अमल कीर्तियोग

लग्न से दशम स्थान में शुभ ग्रह स्थिति हो तो 'अमल योग' बनता है।

फल : इसमें उत्पन्न जातक राजपूज्य, भोगेन्द्र, दानी, बन्धुजनप्रिय, परोपकारी तथा गुणवान् होता है।। जो अमला योग में पैदा होता है, वह आचारवान् धर्म में मति रखने वाला, प्रसन्न, सौभाग्यवान्, राजा द्वारा सम्मानित, मृदु स्वभाव का, मुस्कराकर बोलने वाला और धनी

होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 12) (3) अमला योग में जन्म लेने वाला मनुष्य निर्मल कीर्ति वाला तथा स्थायी धनवान् होता है। योगजनक ग्रह : चन्द्रमा और बुध शुक्र बृहस्पति।

143 सफल अमल कीर्तियोग

चन्द्रमा से दशम स्थान शुभग्रह मात्र से युक्त हो तो अमलकीर्ति योग होता है।

इसमें उत्पन्न जातक राजपूज्य, भोगेन्द्र, दानी, बन्धुजनप्रिय, परोपकारी तथा गुणवान् होता है। राजपूज्यो महाभोगी दाता बन्धुजनप्रियः। परोपकारी गुणवानमला योगसम्भवः।। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 5, 6) (2) जो अमला योग में पैदा होता है, वह आचारवान् धर्म में मति रखने वाला, प्रसन्न, सौभाग्यवान्, राजा द्वारा सम्मानित, मृदु स्वभाव का, मुस्कराकर बोलने वाला और धनी होता है।

144 शुभ कर्तरी योग

लग्न से द्वितीय, द्वादश दोनों मे शुभ ग्रहों के रहने से शुभ कर्तरी योग होता है।

बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 1) शुभयोगोत्पन्न जातक वाग्मी, सौन्दर्यशील तथा गुणयुक्त होता है और पापयोगोत्पन्न कामुक पापकर्मकारी तथा परधनापहारक होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 2) जो व्यक्ति शुभ कर्तरी योग में उत्पन्न होता है वह दीर्घायु, सुखी लक्ष्मीवान् और वैभव से युक्त होता है। उसे शत्रुओं तथा रोगों से भय नहीं होता अर्थात् न तो उसके शत्रु होते हैं न रोग होते हैं।

145 पाप कर्तरी योग

लग्न से दूसरे तथा बारहवें स्थानों में पापग्रह के होने पर पाप कर्तरी योग होता है।

दरिद्र, अपवित्र, दुःखी अंगहीन, अल्पायु, भार्यारहित, पुत्ररहित होता है। यह आवश्यक नहीं कि सब लक्षण अक्षरशः मिलें, भावार्थ लेना चाहिये।

146 लग्नाधियोग

लग्न से 6, 7, 8 में शुभग्रह हो पापग्रहों की दृष्टि योग उन पर नहीं हो तो लग्नाधियोग होता है।

जातक सुखी तथा विद्वान् होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 37)

147 पर्वतयोग

षष्ठाष्टम स्थान ग्रहरहित या शुभग्रहयुक्त हो और केन्द्रस्थान शुभग्रहयुत हो तो पर्वतयोग होता है।

पर्वतयोगोत्पन्न जातक यशस्वी, तेजस्वी, भाग्यवान्, दानी, वक्ता, विनोदी, पुरनायक, शास्त्रवेत्ता तथा कामी होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 7, 8) योगजनक ग्रह : सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि

148 पर्वत योग

लग्न तथा द्वादश भाव का स्वामी यदि एक दूसरे से केन्द्र में हों और मित्रों से दृष्ट हों तो भी 'पर्वत' योग बनता है।

जातक यशस्वी, तेजस्वी, भाग्यवान्, दानी, वक्ता, विनोदी, पुरनायक, शास्त्रवेत्ता तथा कामी होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 8) योगजनक ग्रहः सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

149 काहल योग

यदि नवमेश तथा चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में स्थित हों तथा लग्नेश बलवान हो तो 'काहल' योग बनता है।

जातक ओजस्वी, साहसी, राज्य संपदा से युक्त तथा छोटी सेना अथवा किसी गाँव का प्रमुख होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 9, 10) योगजनक ग्रहः सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

150 काहलयोग

दशमेश सहित सुखेश स्वभवन या स्वोच्चस्थ हों तो भी काहल योग होता है।

तेजस्वी, साहसी, मूर्ख, चतुरगं सैनिकों से युक्त कतिपय ग्रामों का स्वामी होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 9, 10) योगजनक ग्रहः सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

151 चामरयोग

उच्च स्थित लग्नेश यदि केन्द्रगत हो और गुरु से देखा जाय तो चामर योग होता है।

जातक राजा या राजवन्द्य, वक्ता तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 11, 12) योगजनक ग्रहः सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

152 चामर योग

दो शुभ ग्रह लग्न, नवम, दशम, या सप्तम भावगत हों तो भी चामर योग होता है।

जातक राजा या राजवन्द्य, वक्ता तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 11, 12) योगजनक ग्रहः सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि

153 चामर योग

यदि लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों और लग्नेश अस्त न होकर उत्तम स्थान में स्वराशि का या स्वक्षेत्री होकर बैठा हो तो चामर योग होता है।

जातक शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह वृद्धिको प्राप्त होता है। शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भाँति सुन्दर और सुशील भी होता है। ऐसा व्यक्ति लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान्, दीर्घायु और जनपति (अनेक जनों पर हुकूमत करने वाला) होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 44, 45)

154 धेनु योग

यदि दूसरे घर में शुभ ग्रह हों या दूसरे घर को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे घर का मालिक उदित होकर स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग होता है।

जातक सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होता है। राजराज के दो अर्थ हैं राजाओं का राजा और कुबेर। भावार्थ यह है कि ऐसा व्यक्ति धनी होता है। दूसरे घर से विद्या, कुटुम्ब, भोजन, पान (पीने की वस्तु) आदि का भी विचार किया जाता है। और दूसरा स्थान तथा दूसरे स्थान के स्वामी के बलवान् होने से ऐसे व्यक्ति को उत्तम भोजन, पेय पदार्थ, विद्या, बडे कुटुम्ब का सुख, आदि प्राप्त होंगे। दक्षिण भारत में दूसरे घर से भी विद्या का विचार किया जाता है। वास्तव में दूसरा घर मुख, जिह्व या वाणी का है। वाणी और विद्या में बहुत समानता है।

155 शौर्य योग

तृतीय भाव में शुभ ग्रह हों या इस भाव को शुभ ग्रह देखते हों और तृतीय भाव का स्वामी अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान मे हो तो 'शौर्य' योग होता है।

जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृभक्त होते हैं। इसके भाई लोग जातक की प्रशंसा भी करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई बहिन, पराक्रम सम्बन्धी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं भी बहुत यशस्वी होता है और राज्य कार्य में निरत रहता है। फलितार्थ यह है कि अच्छे सरकारी ओहदे पर आसीन होता है। मन्त्रेश्वर महाराज ने तो यह भी लिखा है कि "राम" के समान पराक्रमी हो किन्तु इसे अर्थवाद समझना चाहि,।

156 जलधि योग

चतुर्थ स्थान मे शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह चौथे स्थान को देखते हों, चतुर्थेश अस्त न हो और अपनी स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो अम्बुधि या जलधि योग होता है। अम्बुधि या जलधि समुद्र को कहते हैं।

जातक को गो सम्पत्ति (गाय, बैल आदि) धन धान्य, आदि पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं। इसका मकान बहुत सुन्दर होता है। बन्धुओं की बहुतायत रहती है। अर्थात् बन्धुओं से सुख प्राप्त होता है। उत्तम स्त्री, रत्न, वस्त्र, भूषण आदि के साथ-साथ आदरणीय उत्तम स्थान प्राप्त होता है। ऐसे मनुष्य का सुख स्थिर होता है अर्थात् दीर्घ काल तक वह सुखी रहता है। उसे हाथी, घोडे, पालकी आदि का पूर्ण सुख प्राप्त हो और राजा भी उसका सम्मान करे। ऐसे मनुष्य देवताओं और ब्राह्मणों के भक्त अर्थात् धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं और कुँआ खुदवाना, प्याऊ लगवाना आदि कार्य करते रहते हैं।

157 छत्र योग

पंचम भाव में शुभ ग्रह हों या इसे देखते हों और पांचवें घर का मालिक अस्त न हो और अपनी राशि का या अपनी उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो छत्र योग होता है।

जातक संसार के सब सौभाग्यों से युक्त, सन्तान सुख वाला, धनी, यशस्वी बुद्धिमान्, उत्तम भाषण करने वाला, तीक्ष्ण बुद्धि, जिसको बहुत स्फूर्ति हो (जिसके विचार में उत्तम बुद्धि की नवीन बातें जागृत हों) राजा का मन्त्री होता है। ऐसे व्यक्ति को राजा या सरकार से सम्मान प्राप्त होता है। संक्षेप में पंचम भाव और पंचम भावेश के सुधर जाने से पंचम भाव सम्बन्धी सब सुख प्राप्त होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 44, 49)

158 अस्त्र योग

परिभाषा: छठे भाव का स्वामी अस्त न होकर स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो और छठा भाव शुभ ग्रह युत या शुभग्रहों से दीक्षित हो तो अस्त्र योग होता है।

जातक बड़े बडे बलवान् शत्रुओं को अपनी जबर्दस्त ताकत से दबा देता है। बहुत क्रूर प्रवृत्ति वाला अभिमानी होता है। ऐसे व्यक्ति के शरीर के अवयव दृढ (मजबूत) होते हैं(किन्तु शरीर में व्रण के चिन्ह भी होते हैं। अस्त्र योग में उत्पन्न व्यवित विवादकारी होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 50)

159 काम योग

सप्तम स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और सप्तम स्थान में शुभ ग्रह बैठे हों , व सप्तम स्थान का स्वामी स्वराशि या उच्चराशि का होकर उत्तम स्थान पर बैठा हो तो "काम" योग होता है। सप्तमेश अस्त नहीं होना चाहिए।

जातक परदारा पराडमुख होते हैं अर्थात् व्यभिचारी नहीं होते। ऐसे व्यवित को उत्तम स्त्री, सन्तान और बन्धुओं का सुख प्राप्त होता है। ऐसा आदमी अपने शुभ गुणों से बहुत लक्ष्मी प्राप्त करता है और अपने पिता से अधिक उच्च पदवी प्राप्त करता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 51)

160 असुर योग

अष्टम स्थान में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह इस स्थान को देखते हों और अष्टमेश स्वराशि, उच्चराशि का अस्तंगत न होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो असुर योग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 44,52)

इसका फल निकृष्ट है। जातक स्वार्थी कुकर्मी, दरिद्री, दुराग्रही (बुरी तरह जिद करने वाला) चुगलखोर और दूसरों का काम बिगाड़ने वाला होता है। अपने किये हुये दुष्ट कार्यों के परिणाम स्वरुप ऐसा मनुष्य स्वयं हानि और दुःख उठाता है।

161 भाग्य योग

नवम भाव में शुभ ग्रह बैठे हों, नवम भाव को शुभ ग्रह देखते हों, नवम भाव का स्वामी सूर्य किरणों के सान्निध्य से अस्तंगत न होकर अपनी राशि या अपनी उच्चराशि में स्थित होता हुंआ उत्तम स्थान में बलवान् बैठा हो तो 'भाग्य' योग होता है।

जातक जब पालकी में जाता है तो उसके दोनों ओर चंवर रहते हैं और उसके साथ-साथ आगे पीछे बाजे बजते हुये चलते हैं। प्राचीन समय में इस प्रकार की सवारी प्राप्त होना चंवर पालकी और बाजों के साथ, परम ऐश्वर्य समझा जाता था। जातक को सदैव रहने वाली लक्ष्मी प्राप्त होती है अर्थात् सदैव पूर्ण धनी रहता है। बड़े-बड़े आदमी जातक को नमस्कार करते है। जातक अपने माता पिता का, पितरों, ब्राह्मणों, और देवताओं का पूजन कर सदैव उनको प्रसन्न रखता है। भाग्य योग में उत्पन्न व्यक्ति अपने कुल की कीर्ति को बढ़ाने वाला, आचारनिष्ठ, सहृदय होता है।

162 ख्याति योग

दशम भाव में शुभ ग्रह बैठे हों और दशम भाव को शुभ ग्रह देखते हों तथा दशम का मालिक अस्त न होकर उत्तम स्थान में बैठकर अपनी उच्चराशि या स्वराशि में स्थित हो तो ख्याति योग होता है।

जातक उत्तम कर्म करता है और उसके कार्य की सब प्रशंसा करते हैं। ऐसा व्यक्ति नृप होकर अपनी प्रजा की अच्छी रक्षा करता है । और लोक में ख्याति प्राप्त करता है। ऐसे जातक को स्त्री, पुत्र, मित्र और धन का पूर्ण सुख प्राप्त होता है और भाग्यवान् होता है। फलदीपिका (अध्याय 6 श्लोक 44, 54)

163 सुपारिजात योग

लाभेश अस्त न होकर अपनी स्वयं की राशि या उच्चराशि में स्थित होकर लग्न से उत्तम स्थान बैठा हो और लाभ स्थान में शुभ ग्रह बैठे हों या एकादश को शुभ ग्रह देखते हों तो सुपारिजात योग होता है।

जातक अच्छे कुटुम्ब वाला, अर्थ संग्रह करने से धनी, नित्य मंगल (शुभ) कार्यों में भाग लेने वाला, पुण्य कथाओं के सुनने में तथा भक्ति में समय लगाने वाला, विद्वान् और सत्कर्म करने वाला होता है। फलदीपिका (अध्याय 6 श्लोक 44, 55)

164 मुसल योग

बारहवें घर में शुभ ग्रह बैठे हों या इस घर को शुभ ग्रह देखते हों और इस घर का मालिक स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर लग्न से उत्तम स्थान में बैठा हो तो मुसल योग होता है।

जातक को बड़ी कठिनता से धन प्राप्ति होती है। उसकी सम्पत्ति चंचल होती है अर्थात् कभी धन रहता है और कभी नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति बहुत व्यय करने वाला होता है परन्तु वाजिब काम में ही खर्च करता है। ऐसे व्यक्ति को अन्य लोग (शत्रु) दबा लेते हैं। मुसलयोग में उत्पन्न व्यक्ति चपल और मूर्ख होता है किन्तु उसे जीवन के अन्त में स्वर्ग प्राप्ति होती है।

165 अवयोग

लग्नेश दुःस्थान में हो तो 'अवयोग' होता है।

जातक की स्थिति बहुत चंचल होती है। ऐसा व्यक्ति असज्जनों के साथ रहता है न उसका चरित्र ही अच्छा होता है। जातक स्वल्पायु और अप्रसिद्ध रहता है(और घोर दरिद्रता, तथा अपमान को प्राप्त होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 57, 58)

166 निःस्वयोग

दूसरे घर का मालिक 6, 8, 12 इन तीनों स्थानों में से कहीं हो तो "निःस्वयोग" होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 59)

"निःस्व" का अर्थ है जिसके पास अपना कुछ न हो अर्थात् दरिद्री। जातक के दांत और नेत्र खराब होते हैं। अच्छे वचन नहीं बोलता। कुटुम्ब भी विफल होता है। जिसके कुटुम्ब में बहुत से आदमी हों वह सफल कुटुम्ब जिसके घर में स्त्री, पुत्र कन्या आदि न हों मान लीजिये कि केवल मात्र स्त्री है तो वह विफल कुटुम्ब हुआ। निःस्व योग वाला मनुष्य अच्छी संगति में नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति बुद्धि, पुत्र, विद्या और वैभव से हीन होता है। उसके धन को शत्रु लोग हर लेते हैं।

167 मृति योग

तृतीय स्थान का स्वामी दुःस्थान में स्थित हो तो 'मृति' योग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 60)

जातक शत्रुओं से पराजित, अनुचित कर्म करने वाला, परिश्रम से खिन्न (बहुत परिश्रम करना पडे जिसके कारण चित्त में खेद हो) और निर्लज्ज हो। उसके बल और धन का हरण हो जाता है। उसे भाई बहिनों का सुख न हो। ऐसे व्यक्ति का अपने ऊपर काबू नहीं रहता। इस कारण ऐसे कर्म करता है जिसके लिये उसे बाद में पश्चाताप होता है।

168 कुहूयोग

चतुर्थेश 6, 8, 12 इन स्थानों में से किसी में हो तो कुहूयोग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 61)

जातक को माता, सवारी, मित्र, आभूषण तथा बन्धुओं का सुख प्राप्त नहीं होता। चौथा घर सुख स्थान कहलाता है और इस घर के बिगड़ जाने से मनुष्य सुखहीन होता है। ऐसे व्यक्ति को कहीं आश्रय नहीं मिलता, कोई न कोई संकट ऐसा उपस्थित हो जाता है कि अपना स्थान छोडना पडता है। ऐसा व्यक्ति कुस्त्री (खराब औरत) में अभिरत होता है। अनुभव है कि शनि यदि चौथे घर में हो और चौथे घर का मालिक भी बिगडा हो तो बुढापा बहुत दरिद्रता में बीतता है।

169 पामर योग

यदि पंचमेश दुःस्थान में पड़ा हो तो पामर योग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 62)

जातक दुःख से जीवन व्यतीत करता है। ऐसा व्यक्ति असत्य बोलने वाला अविवेकी तथा वंचक (दूसरे को ठगने वाला) होता है। ऐसे जातक को संतान सुख नहीं होता या तो संतान होवे ही नहीं या होकर मर जावे। यदि सन्तान चिरजीवी हों तो भी उनसे सुख प्राप्त न हो पिता के प्रति कर्तव्य पालन न करने वाली बल्कि पिता को संताप देने वाली पितृद्वेषी सन्तान होती है। ऐसा व्यक्ति नास्तिक होता है और छोटे तथा दुष्ट आदमियों की सोहबत करता है। ऐसे व्यक्ति बहुत अधिक भोजन करते हैं अर्थात् पेटू होते हैं।

170 दुष्कृति योग

सप्तमेश दुःस्थान में पड़ा हो तो दुष्कृति योग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 64)

जातक को सप्तम स्थान सम्बन्धी सभी कष्ट प्राप्त होते हैं अपनी पत्नी का वियोग (चाहे वह मर जाय चाहे उससे अलग रहना पड़े या रोगिणी हो), दूसरे की स्त्री से रति हो, इसकी इच्छा रहे (हृदय जलता रहे सुख की प्राप्ति न हो) कष्टमय मंजिल (सफर) करनी पडे।

जातक के बन्धु लोग उसे धिक्कारें, इस कारण उसे शोक प्राप्त हो। राजा या सरकार से पीडा मिले। सप्तम स्थान से जननेन्द्रिय का विचार किया जाता है। सप्तम भाव और सप्तमेश दोनों बिगड़े हों तो प्रमेह (सुजाक, आतशक आदि) इन्द्रिय सम्बन्धी एक या अधिक रोग हों।

171 निर्भाग्य योग

नवे भवन का स्वामी लग्न से 6, 8 या 12 वें भाव में हो तो 'निर्भाग्य' योग होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 66)

जातक बहुत दुःख उठाने वाला, पुराने कपड़े पहनने वाला दुर्गति को प्राप्त होता है। नवम भाव धर्म भाव है यह बिगडने से मनुष्य साधुओं की और गुरुओं की निन्दा करता है। ऐसे व्यक्ति को जो कुछ पैतृक सम्पति प्राप्त होती है (घर, खेत, जमीन, जायदाद) वह सब नष्ट हो जाती है।

172 दुर्योग

दशमेश 6, 8 या 12 स्थान में पड़ा हो तो 'दुर्योग' होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 67)

जातक के द्वारा पूर्ण परिश्रम से किए हुये कार्यों में भी सफलता प्राप्त नहीं होती। उसके प्रयास निष्फल होते हैं। ऐसा मनुष्य प्रायः प्रवासी (घर से बाहर परदेश में) रहता है। दुर्योग में उत्पन्न मनुष्य का आदर नहीं होता। वह और लोगों से द्रोह करता रहता है और अपने पेट पालने की ही फिक्र में रहता है। फलदीपिका (अध्याय 6 श्लोक 57, 67)

173 दरिद्रयोग

एकादशेश त्रिक में हो तो 'दरिद्रयोग' होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 68)

जातक कर्जदार, अत्यन्त दरिद्री कान की बीमारी से तकलीफ पाने वाला, अच्छे भाइयों से हीन, दुष्कार्य करने वाला, अप्रशस्त वचन बोलने वाला, दूसरे का नौकर और दुःख उठाने वाला होता है।

174 शंख योग

पंचमेश और षष्ठेश यदि एक दूसरे से केन्द्र में हों और लग्नेश बलवान हो तो 'शंख' योग बनता है।

शंखयोगोत्पन्न जातक दयालु, पुण्यवान्, विद्वान, पुत्र, धन, स्त्री से युक्त, दीर्घायु, तथा शुभ आचरण वाला होता है। मानवतावादी, सत्कर्म में रुचि, धार्मिक, विद्वान तथा आनंदप्रिय, पत्नीण्संतान और भूमि से युक्त दीर्घायु होता है। दूसरों के प्रति व्यवहार मधुर और सौम्य होता है तथा पारिवारिक दृष्टि से सफल होता है। योगजनक ग्रहः सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

175 शंखयोग

लग्नेश और दशमेस चर राशि में हों और भाग्येश बलि हो तो 'शंख योग' होता है।

शंखयोगोत्पन्न जातक दयालु, पुण्यवान्, विद्वान, पुत्र, धन, स्त्री से युक्त, दीर्घायु, तथा शुभ आचरण वाला होता है। मानवतावादी, सत्कर्म मे रुचि, धार्मिक, विद्वान तथा आनंदप्रिय, पत्नीण्संतान और भूमि से युक्त दीर्घायु होता है। दूसरों के प्रति व्यवहार मधुर और सौम्य होता है तथा पारिवारिक दृष्टि से सफल होता है। योगजनक ग्रहः सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

176 भेरीयोग

भाग्येश प्रबल हो और सभी ग्रह लग्न, द्वितीय, सप्तम, द्वादश स्थानों में हों तो भेरी योग होता है।

जातक सद्व्यवहारयुक्त, सुखभोगों से पूर्ण, स्त्री, पुत्र धन, यश, तथा सद्गुणवान् राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 15, 16)

177 भेरीयोग

भाग्येश प्रबल हो और केन्द्र में लग्नेश, गुरु तथा शुक्र हों तो भेरी योग होता है।

जातक सद्व्यवहारयुक्त, सुखभोगों से पूर्ण, स्त्री, पुत्र धन, यश, तथा सद्गुणवान् राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 15, 16)

178 भेरीयोग

भाग्येश प्रबल हो और लग्नेश, गुरु तथा शुक्र आपस में केन्द्र में हों तो भेरी योग होता है।

जातक सद्व्यवहारयुक्त, सुखभोगों से पूर्ण, स्त्री, पुत्र धन, यश, तथा सद्गुणवान् राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 15, 16)

179 खड्गयोग

भाग्येश धन स्थान में और धनेश भाग्य स्थान में हो और लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो यह योग बनता है।

जातक बुद्धि बल सुखण्धन से परिपूर्ण, शास्त्रज्ञ, कृतज्ञ तथा कार्यकुशल होता है। (2) जातक पारिजात के अनुसार जातक समस्त वेदशास्त्रों के अर्थों से भिज्ञ, बुद्धिमान, प्रतापवान, निरभिमानी, कुशल और कृतज्ञ होता है। योगजनक ग्रहः सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि।

180 लक्ष्मीयोग

लग्नेश प्रबल हो, भाग्येश स्वभवन, स्वोच्च या मूलत्रिकोणस्थ होकर केन्द्रगत हो तो लक्ष्मीयोग होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 27,28)

जातक सुन्दर, धमिष्ठ, धनी, गुणी, यशस्वी राजा तथा अनेक पुत्रों से परिपूर्ण होता है।

181 महाभाग्य योग

यदि पुरुष का दिन में जन्म हो और लग्न, सूर्य व चन्द्र तीनों विषम राशियों में स्थित हों तो 'महाभाग्य' योग बनता है।

जातक सचरित्र, दूसरों के लिये सुख का स्रोत, उदार, प्रसिद्ध, शासक या शासक के समकक्ष तथा दीर्घायु होता है। जो व्यक्ति महाभाग्य योग में उत्पन्न होता है वह सबके नेत्रों को आनन्द देने वाला, उदार, विख्यात, निर्मल चरित्र का, भूमि का स्वामी राजा के समान ऐश्वर्य शाली होता है।

182 महाभाग्य योग

किसी स्त्री का जन्म रात्रि के समय हो और लग्न, सूर्य तथा चन्द्र तीनो सम राशियों में स्थित हो तो 'महाभाग्य' योग होता है।

जिन स्त्रियों की कुण्डलियों में यह योग हो वह उत्तम चरित्र की, सौभाग्य शलिनी, धनवती होती हैं। पति, पुत्र, पौत्रों का सुख उन्हें चिरकाल तक प्राप्त होता है और सदैव सौभाग्यवती रहती हैं।

183 दरिद्र योग

नवम् भाव में चन्द्रमा और शनि हो तथा लग्नेश नीच राशि में हो तो भिक्षुक योग होता है।

ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 2, श्लोक 300) जातक भिक्षुक होता है।

184 दरिद्र योग

दशमेश तृतीयेश के साथ हो, और निर्बल हो, नीच राशि का हो या अस्त हो तो दरिद्र योग होता है।

ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 2, श्लोक 296) जातक भिक्षुक होता है।

185 कर्मसिद्धि योग

दशमेश लग्न, चतुर्थ, सप्तम या दशम में शुभ ग्रह के साथ हो तो कर्मसिद्धि योग होता है।

ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 2, श्लोक 329) जातक के कर्म एवं प्रयास सफल होते हैं।

186 चन्द्रमंगल योग

चन्द्रमा मंगल की युति या परस्पर दृष्टि हो तो 'चन्द्रमंगल योग' होता है।

विभिन्न प्रकार से धर्नाजन होता है। योगजनक ग्रहः चन्द्रमा, मंगल

187 लग्न मालिका योग

यदि लग्न से आरंभ कर सप्तम तक सातों घरों मे ग्रह हों। मालिका कहते है माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों मे हों तो मालिका योग होता है।

जातक राजा, अनेक हाथियों और घोड़ों (वाहनों) का स्वामी हो।

188 धन मालिका योग

यदि द्वितीय से अष्टम तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों मे हों तो मालिका योग होता है।

खजाने का मालिक (अर्थात् धनी), पिता में भक्ति रखने वाला, विशेष धौर्य युक्त स्वरुपवान्, गुणी और चक्रवर्ती हो। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 132)

189 विक्रम मालिका योग

तृतीय से नवम तक सातों घरों मे ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों मे हों तो मालिका योग होता है।

जातक, राजा शूरवीर, धनी किन्तु रोगी होता है। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 133)

190 सुख मालिका योग

सुख से दशम तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों मे हों तो मालिका योग होता है।

जातक बहुत देशों मे भाग्यवान्, भोगी, महादानी, राजा हो। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 133)

191 पुत्र मालिका योग

पुत्र स्थान (जन्म लग्न से पंचम) से ग्यारहवें तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों में हों तो मालिका योग होता है।

राजा, यज्ञ करने वाला अथवा कीर्तियुक्त हो। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 134)

192 शत्रु मालिका योग

छठे घर से बारहवें घर तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों में हों तो मालिका योग होता है।

धन और सुख की प्राप्ति हो और कभी दरिद्र हो जायें। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 134)

193 कलत्र मालिका योग

सप्तम से लग्न तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों में हों तो मालिका योग होता है।

अनेक स्त्रियों का प्यारा (स्वामी) हो और राजा हो। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 134)

194 रन्ध्र मालिका योग

अष्टम से द्वितीय तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों में हों तो मालिका योग होता है।

दीर्घायु किन्तु निर्धन, मनुष्यों में श्रेष्ठ किन्तुं स्त्रीनिर्जित (स्त्री या स्त्रियों के दबाव में रहने वाला) हो। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 134)

195 भाग्य मालिका योग

धर्म स्थान (लग्न से नवम) से तृतीय तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों में हों तो मालिका योग होता है।

गुणनिधि, यज्ञ करने वाला तपस्वी, विभु (समर्थ, अन्य जनों पर अधिकारी) होता है। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 135)

196 कर्म मालिका योग

परिभाषाः कर्म स्थान (लग्न से दशम) से चतुर्थ तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों में हों तो मालिका योग होता है।

जातक धर्म कर्म निरत और सज्जनों से सम्पूजित होता है। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 135)

197 लाभ मालिका योग

लाभ (एकादश) से पंचम तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते है माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों में हों तो मालिका योग होता है।

राज्य, वीरांगना (उत्तम स्त्री, वीरांगना कहते है उस स्त्री को जो कुल, सौन्दर्य, गुण विद्या, बुद्धि, सौशील्यादि, धर्म कर्म निष्ठादि आचार विचार में श्रेष्ठ हो) युक्त हो तथा रत्नों का स्वामी हो। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 135)

198 व्यय मालिका योग

व्यय (बारहवें घर) से छठे तक सातों घरों में ग्रह हों। मालिका कहते हैं माला को। जब सूर्यादि सात ग्रह (राहु केतु को इनमें नहीं लेना चाहिये) निरन्तर सात राशियों मे हो तो मालिका योग होता है।

जातक बहुत व्यय करने वाला, सर्वत्र पूज्य होता है। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 135)

199 चतुस्सागर योग

चारों केन्द्रों में ग्रह हों या चारों चर राशियों में सभी ग्रह हों तो यह योग बनता है।

जातक प्रसिद्ध, नेतृत्व गुण से युक्त, दीर्घजीवी, स्वस्थ, भ्रमणप्रिय होता है तथा विदेश यात्राएँ करता है।

200 सरस्वती योग

बुध, बृहस्पति और शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हों अथवा बृहस्पति या द्वितीय भाव बलवान् हो तो सरस्वती योग होता है।

जातक उच्च कोटि का विद्वान, गद्य और पद्य में निष्णात् तथा धार्मिक ज्ञान व गणित का जानकार होता है।

201 हत् हन्त योग

एकादश में चन्द्रमा हो तथा सूर्य कर्क राशि में हो तो हत् हन्त योग होता है।

जातक अपने मूर्खता एवं अहंकारपूर्ण कार्य से मृत्यु प्राप्त करता है।

202 नीचभंग राजयोग

यदि कोई ग्रह नीच राशि का हो और यदि उस नीच राशि का स्वामी, यदि लग्न से अथवा चन्द्र लग्न से केन्द्र में स्थित हो तो 'नीचभंग' राजयोग बनता है।

जातक धार्मिक तथा राजा के समान पदवी प्राप्त करता है।

203 नीचभंग राजयोग

यदि कोई ग्रह नीच राशि का हो और उस राशि का स्वामी जहाँ वह ग्रह उच्च होता है, यदि लग्न से केन्द्र मे स्थित हो तो 'नीचभंग' राजयोग बनता है।

जातक धार्मिक तथा राजा के समान पदवी प्राप्त करता है।

204 नीचभंग राजयोग

नीच ग्रह जिस राशि में उच्च का होता है, उसका स्वामी चन्द्र से केन्द्र में हो तो नीचभंग राजयोग होता है।

नीच ग्रह की नीचता (निर्बलता) निरस्त हो जाती है तथा वह ग्रह शुभ फल व राजयोग देता है।

205 नीचभंग राजयोग

नीचस्थ ग्रह अपने राशि स्वामी से युक्त या दृष्ट हो तो नीचभंग राजयोग होता है।

नीच ग्रह की नीचता (निर्बलता) निरस्त हो जाती है तथा वह ग्रह शुभ फल व राजयोग देता है।

206 नीचभंग राजयोग

नीचस्थ ग्रह अपने उच्च राशि स्वामी से युक्त या दृष्ट हो तो नीचभंग राजयोग होता है।

फल: नीच ग्रह की नीचता (निर्बलता) निरस्त हो जाती है तथा वह ग्रह शुभ फल व राजयोग देता है।

207 नीचभंग राजयोग

नीचस्थ ग्रह अपने राशि के स्वामी से स्थान परिवर्तन करे तो नीचभंग राजयोग होता है।

नीच ग्रह की नीचता (निर्बलता) निरस्त हो जाती है तथा वह ग्रह शुभ फल व राजयोग देता है।

208 नीचभंग राजयोग

दो नीच ग्रहों की परस्पर दृष्टि हो तो नीचभंग राजयोग होता है।

नीच ग्रह की नीचता (निर्बलता) निरस्त हो जाती है तथा वह ग्रह शुभ फल व राजयोग देता है।

209 नीचभंग राजयोग

नीचस्थ ग्रह किसी उच्चस्थ ग्रह के साथ हो तो नीचभंग राजयोग होता है।

नीच ग्रह की नीचता (निर्बलता) निरस्त हो जाती है तथा वह ग्रह शुभ फल व राजयोग देता है।

210 मृदंग योग

लग्नेश प्रबल हों और सभी ग्रह अपने भवन या उच्चस्थ होकर केन्द्र या कोण में हों तो मृदंग योग होता है।

जातक राजा अथवा राजसदृश होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 17)

211 श्री नाथ योग

उच्चस्थ सप्तमेश जायेश कर्मस्थानगत हो, भाग्येश कर्मेश का संयोग हो तो श्री नाथ योग होता है।

इन्द्र सदृश राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 18)

212 शारद योग

कर्मेश पंचमस्थ हो, बली बुध सूर्य स्वक्षेत्री होकर केन्द्रस्थ हों तो शारद योग होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 19,20)

जातक राजमान्य, विद्वान्, सुख-तप-धर्म से युक्त, तथा स्त्री-पुत्र धनपूर्ण होता है।

213 शारद योग

चन्द्रमा से नवम या पंचम में बुध व गुरु और एकादश में भौम हो तो शारद योग होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 19,20)

जातक राजमान्य, विद्वान्, सुख-तप-धर्म से युक्त, तथा स्त्री-पुत्र धनपूर्ण होता है।

214 मत्स्ययोग

लग्न तथा नवम में शुभग्रह, पंचम में शुभ तथा पाप और चतुर्थ अष्टम में पाप ग्रह हों तो मत्स्ययोग होता है।

जातक दयालु, कालवेत्ता, विद्वान्, सौन्दर्य, बुद्धि तथा गुणों से युक्त एवं यश, बल, तपस्या से परिपूर्ण होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 21, 22)

215 मत्स्ययोग

लग्न तथा नवम में अशुभग्रह, पंचम में शुभ तथा पाप और चतुर्थ अष्टम में पाप ग्रह हों तो मत्स्ययोग होता है।

जातक दयालु, कालवेत्ता, विद्वान्, सौन्दर्य, बुद्धि तथा गुणों से युक्त एवं यश, बल, तपस्या से परिपूर्ण होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 21, 22)

216 कूर्मयोग

मित्रगृह, उच्च या स्वक्षेत्र में शुभग्रह पंचम, षष्ठ या सप्तम में हों, पापग्रह लग्न, तृतीय या एकादश में स्वराशि या उच्च के हों तो कूर्म संज्ञक योग होता है।

जातक गुणी, सुखी, यशस्वी तथा धमिष्ठ होता है। वह जनोपकार करने वाला जननायक अथवा राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 23, 24)

217 कूर्मयोग

मित्रगृह, उच्च या स्वक्षेत्री शुभग्रह 1,3,11 भाव में हों तो कूर्म योग होता है।

जातक गुणी, सुखी, यशस्वी तथा धमिष्ठ होता है। वह जनोपकार करने वाला जननायक अथवा राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 23, 24)

218 कुसुमयोग

स्थिर लग्न हो, शुक्र केन्द्रगत हों, शुभग्रह युक्त चन्द्रमा नवम या पंचम में हों शनि दशमस्थ हों तो कुसुम योग होता है।

जातक सर्वसौख्यसम्पन्न राजा या राजदश विद्वान्, गुणी, भोगेन्द्र एवं वंशख्यात होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 29॰30)

219 कुसुम योग

लग्न में बृहस्पति हो, सातवें चन्द्रमा हो व चन्द्रमा से दूसरे (लग्न से अष्टम) सूर्य हो तो कुसुम योग होता है।

जातक उज्जवल वंश परम्परा का राजा, प्रसिद्ध, अति गुणवान्, विद्वान, सभी सुखों से युक्त तथा धरती के शासकों से आदर प्राप्त करता है।

220 कलानिधि योग

द्वितीय या पंचम में स्थित गुरु, बुध शुक्र से युत या दृष्ट हो।

जातक विद्या, धन, गुण से युक्त, सुखी, राजमान्य, नीरोग, निर्भय तथा कामुक होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 31, 32)

221 कलानिधि योग

द्वितीय या पंचम में स्थित गुरु, बुध शुक्र क्षेत्र (मिथुन कन्या वृष तुला) में स्थित हों तो कलानिधियोग होता है।

जातक विद्या, धन, गुण से युक्त, सुखी, राजमान्य, नीरोग, निर्भय तथा कामुक होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 31, 32)

222 हरि योग

आठवें, बारहवें स्थानों में शुभग्रह हों तो हरियोग होता है।

जातक सुखी, विद्वान् धनी तथा पुत्रवान् होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40, श्लोक 35, 36)

223 हर योग

सप्तमेश से 4, 8, 9 स्थानों में शुभग्रह हों तो हरयोग होता है।

जातक सुखी, विद्वान् धनी तथा पुत्रवान् होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 35, 36)

224 ब्रह्म योग

सप्तमेश से 4, 8, 9 स्थानों में शुभग्रह (गुरु, बुध, चन्द्र) हों तो ब्रह्मयोग होता है।

जातक सुखी, विद्वान् धनी तथा पुत्रवान् होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 37, श्लोक 35, 36)

225 हरि हर ब्रह्म योग

लग्नेश से दूसरे, दसवें, ग्यारहवें स्थानों में शुभग्रह हों तो हरि हर ब्रह्म योग होता है।

जातक सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य का जानने वाला, प्रमुख विद्वान, सत्यवादी, धनवान, गुणवान, सभी सुविधाओं से सम्पन्न तथा लोगों की भलाई करने वाला होता है।

226 हरि हर ब्रह्म योग

लग्नेश से दूसरे, दसवें और ग्यारहवें स्थानों में सूर्य, शुक्र और मंगल हों तो हरि हर ब्रह्म योग होता है।

जातक सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य का जानने वाला, प्रमुख विद्वान, सत्यवादी, धनवान, गुणवान, सभी सुविधाओं से सम्पन्न तथा लोगों की भलाई करने वाला होता है।

227 पुष्कल योग

यदि चन्द्र राशि का स्वामी लग्नेश के साथ केन्द्र में अधिमित्र की राशि में स्थित हो और लग्न को कोई बलवान ग्रह देखता हो या लग्न में स्थित हो तो 'पुष्कल' नाम का योग होता है।

जातक धनवान, शुभ (मधुर) वाणी बोलने वाला, प्रसिद्ध, महान व्यक्तियों से सम्मानित होता है। योगजनक ग्रह: लग्नेश व चन्द्र राशि का स्वामी।

228 पुष्कल योग

यदि लग्नेश और चन्द्रराशि का स्वामी दोनों केन्द्र में हो अथवा परम मित्र की राशि में हो, लग्न को देख रहे हों तथा लग्न में बलवान ग्रह हो तो पुष्कल योग होता है।

जातक राज पूज्य, धनवान, प्रसिद्ध, सुवक्ता तथा बहुत से लोग उसके आराम का ध्यान रखने वाले होते हैं।

229 भास्कर योग

सूर्य से द्वितीय में बुध हो, बुध से एकादश में चन्द्रमा हो और चन्द्रमा से त्रिकोण में बृहस्पति हो तो भास्कर योग होता है।

जातक बहादुर, राजा जैसा, धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञाता, देखने में सुन्दर तथा कार्यकुशल होता है। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 5, श्लोक 33, 34)

230 इन्द्र योग

चन्द्रमा से तृतीय में मंगल हो, मंगल से सप्तम में शनि हो, शनि से सप्तम में शुक्र हो, शुक्र से सप्तम में गुरु हो तो इन्द्र योग होता है।

जातक विख्यात, राजा या राजा के समान, सौम्य, वाक्पटु धनवान और भाग्यशाली होता है।

231 इन्दु योग

चन्द्रमा से तृतीयमें मंगल हो, मंगल से द्वादश में शनि हो, शनि से सप्तम में शुक्र हो, और शुक्र से सप्तम में बृहस्पति हो तो इन्दु योग होता है।

जातक प्रसिद्ध, गुणवान, राजा या राजा के समान, वाक्पटु धनवान आभूषण से युक्त तथा बहादुर होता है। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 5, श्लोक 35, 36)

232 इन्द्र योग

यदि पंचम और एकादश भाव के स्वामियों में परिवर्तन हो तथा चन्द्रमा पंचम हो तो इन्द्र योग होता है।

जातक प्रसिद्ध तथा उच्च कोटि का नेता या शासक होता है, साहसी होता है तथा 36 वर्ष की आयु तक विशेष सुखी होता है।

233 अखण्ड साम्राज्य योग

लग्न से द्वितीय नवम् एकादश में से किसी एक भाव का स्वामी चन्द्रमा से केन्द्र में हो तथा लग्न से द्वितीय, पंचम, नवम् में से किसी एक भाव का स्वामी बृहस्पति हो तो अखण्ड सामाज्य योग बनता है।

जातक विस्तृत राज्य का स्वामी होता है। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 5, श्लोक 30)

234 मरुत (वायु) योग

यदि शुक्र से त्रिकोण में बृहस्पति हो, बृहस्पति से पंचम में चन्द्रमा हो तथा चन्द्र से केन्द्र में सूर्य हो तो मरुत योग होता है।

जातक की छाती चौडी, पेट भारी, वाणी धारा प्रवाह, धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञाता तथा राजा या राजा के समान होता है। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 5, श्लोक 37, 38)

235 सिंहासन योग

सभी ग्रह द्वितीय, षष्ठ, अष्टम और द्वादश भावों में हो तो सिंहासन योग होता है।

जातक को सिंहासन की प्राप्ति होती है।

235 Buddha Yoga

Jupiter is in Lagna, Moon in a Kendra from Jupiter, Rahu in the 2nd from Moon, Sun and Mars in 3rd from Lagna.

The person has matchless strength, is conversant with scriptures, very talented and renowned.

236 ध्वज योग

सभी पापग्रह अष्टम में, तथा शुभग्रह लग्न में हों तो ध्वज योग होता है।

जातक सेनापति होता है, जिसके आदेश का अन्य लोग अनुकरण करते हैं।

237 योग हंस योग

सभी ग्रह लग्न, पंचम, सप्तम, नवम में हो तो हंस योग होता है।

जातक अपने से नीचे लोगों का आहार ग्रहण करता है।

238 कारिका योग

सभी ग्रह सप्तम, दशम और एकादश भाव में हो।

जातक सामान्य कुल में पैदा हो तो भी राज्य प्राप्त करता है।

239 अमर योग

सभी पापग्रह केन्द्र में हो।

जातक विस्तृत भूमि का स्वामी बनता है।

240 अमर योग

सभी शुभग्रह केन्द्र में हो।

जातक अधिक धन प्राप्त करता है।

241 महापातक योग

चन्द्रमा के साथ राहु हो, जिस पर पापग्रह से युत गुरु की दृष्टि हो तो महापातक योग होता है।

जातक घोर पापी होता है।

242 राज लक्षण योग

बृहस्पति, शुक्र, बुध और चन्द्रमा लग्न में हो या अन्य केन्द्रों में हो तो राज लक्षण योग होता है।

जातक देखने में आकर्षक होता है तथा उसमें माननीय व्यक्तियों के सभी गुण होते हैं।

243 वंचन चोर भीति योग

पापग्रह लग्न में हो, गुलिक त्रिकोण में हो।

जातक को अपने आस-पास के लोगों पर संदेह रहता है कि वे उसे धोखा न दे दें। ठग चोरों से भय होता है। सर्वार्थ चिन्तामणि (अध्याय 2, श्लोक 76)

244 वंचन चोर भीति योग

गुलिक केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी से युक्त हो।

जातक को अपने आस-पास के लोगों पर संदेह रहता है कि वे उसे धोखा न दे दें। ठग चोरों से भय होता है। सर्वार्थ चिन्तामणि (अध्याय 2, श्लोक 76)

245 वंचन चोर भीति योग

लग्नेश पापयुक्त (शनि, राहु या केतु के साथ) हो।

जातक को अपने आस-पास के लोगों पर संदेह रहता है कि वे उसे धोखा न दे दें। ठग चोरों से भय होता है। सर्वार्थ चिन्तामणि (अध्याय 2, श्लोक 76)

246 गौरी योग

दशमेश जिस नवांश में हो उसका स्वामी यदि जन्मकुण्डली में दशम स्थान में लग्नेश के साथ हो तो गौरी योग होता है।

जो गौरी योग में उत्पन्न हो वह सुन्दर शरीर वाला, राजा का मित्र, सद्‌गुणों और पुत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला, प्रशंसित हो। उसकी वंश की सब लोग प्रशंसा करें और उसका मुख कमल के समान हो। संक्षेप में, इसे भी बहुत शुभ योग माना गया है। (फल दीपिका 6, 25)

247 मदनगोपाल योग

लग्न और सप्तमभाव के स्वामी स्थान परिवर्तन कर रहे हों तथा इनमें से एक शुक्र के साथ हो तो मदनगोपाल योग बनता है।

फल-जातक-जातिका के कई स्त्रियोंध्पुरुषों से घनिष्ठ सम्बन्ध होते हैं। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 2, श्लोक 200)

248 मदनगोपाल योग

सप्तम में शुक्र उच्च राशि में हो तथा सप्तमेश पर दृष्टि हो या सप्तमेश की दृष्टि हो तो मदनगोपाल योग बनता है।

फल-जातक-जातिका के कई स्त्रियों पुरुषों से घनिष्ठ सम्बन्ध होते हैं। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 2, श्लोक 200)

249 भारती योग

द्वितियेश जिस नवांश में हो उसका स्वामी जन्मकुण्डली में उच्च राशि में हो, तथा नवम् भाव में हो या नवमेश के साथ हो तो भारती योग होता है।

जातक विश्व प्रसिद्ध और विख्यात् विद्वान, धार्मिक, संगीत और रोमांस में रुचि, आर्कषक तथा सम्मोहक नेत्र होते हैं।

250 भारती योग

पंचमेश जिस नवांश में हो उसका स्वामी यदि उच्च राशि में हो तथा नवमेश के साथ हो या वही ग्रह स्वयं नवमेश हो तो 'भारती योग' होता है।

जातक विश्व प्रसिद्ध और विख्यात् विद्वान, धार्मिक, संगीत और रोमांस में रुचि, आर्कषक तथा सम्मोहक नेत्र होते हैं।

251 भारती योग

एकादशेश जिस नवांश में हो उसका स्वामी जन्मकुण्डली में उच्च राशि में हो, तथा नवम् भाव में हो या नवमेश के साथ हो तो भारती योग होता है।

जातक विश्व प्रसिद्ध और विख्यात् विद्वान, धार्मिक, संगीत और रोमांस में रुचि, आर्कषक तथा सम्मोहक नेत्र होते हैं।

252 चाप योग

लग्नेश उच्च राशि में हो तथा चतुर्थेश व दशमेश का स्थान परिवर्तन करें तो चाप योग होता है।

जातक को राजाश्रय प्राप्त होता है तथा खजांची होता है। जातक बलवान और धनवान होता है।

253 अंशावतार योग

बृहस्पति और शुक्र केन्द्र में हों और शनि अपनी उच्च राशि में केन्द्र में हो, चर लग्न में जन्म हो तो यह अंशावतार योग होता है।

पुण्य आचरण वाला, तीर्थसेवी या तीर्थाटन करने वाला, कला समझने में निष्णात, कामासक्त, यथाकाल कार्य करने वाला, जितात्मा (संयमी), वेदान्तज्ञ, वेदशास्त्राधिकारी, अतिलक्ष्मीवान् राजा (मूल में राजश्रीधर कहा गया है अर्थात् राजोचित ऐश्वर्यो से सम्पन्न) होता है। जातक पारिजात (अध्याय 7, श्लोक 160, 161)

254 बृहज्जातक योग

मीन लग्न हो ग्यारहवें मंगल और बारहवें शनि हो तो बृहज्जातक योग होता है।

जातक भाग्यवान्, चरित्रवान् तथा अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त करता है। भावार्थ रत्नाकर (अध्याय 1, मीन लग्न, श्लोक 13, 14)

255 महाराज योग

लग्नेश पंचमभावस्थ और पंचमेश लग्नस्थ हो, आत्मकारक तथा पुत्रकारक ग्रह कारकांश लग्न, पंचम, स्वक्षेत्र स्वनवांश या अपने उच्च में स्थिर होकर शुभग्रह से दृष्ट हों तो महाराज योग है।

जातक विख्यात तथा सुखी होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 6, 7)

256 केन्द्र त्रिकोण राज योग

लग्नेश का सम्बन्ध केन्द्र (4, 7, 10) या त्रिकोण (5, 9) भावों के स्वामियों से हो तो 'राजयोग' बनता है।

ग्रहों के योग चार प्रकार से बनते हैं - 1. जब दो ग्रह परस्पर देखते हों। 2. जब एक ग्रह दूसरे को देखता हो। 3. जब दो ग्रहों में राशि परिवर्तन हो। 4. जब दो ग्रह एक ही राशि में हों। राजसी स्वभाव, सम्मान तथा सभी प्रकार के वैभव से युक्त होता है। योगजनक ग्रहः के स्वामीण्सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, चन्द्रमा।

257 केन्द्र त्रिकोण राज योग

यदि चतुर्थेश (केन्द्र) का सम्बन्ध पंचमेश या नवमेश (त्रिकोण) से हो तो राजयोग होता है।

सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

258 राज योग

पंचमेश का सप्तमेश या दशमेश से परस्पर सम्बन्ध हो तो राजयोग बनता है।

सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

259 राज योग

सप्तमेश तथा नवमेश में परस्पर सम्बन्ध हो तो राजयोग बनता है।

सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

260 राज योग (धर्मकर्माधिपति योग)

नवमेश तथा दशमेश में परस्पर सम्बन्ध हो तो धर्मकर्माधिपति राजयोग बनता है।

सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। यह प्रथम श्रेणी का राजयोग है। जातक यशस्वी, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला, तथा समाज में सम्मानित होता है। योगजनक ग्रहः के स्वामी ण सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, चन्द्रमा

261 राज योग

पंचमेश तथा नवमेश में परस्पर सम्बन्ध हो तो राजयोग बनता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 33,34)

नवमेश मन्त्री होता है और पंचमेश विशेषतः मंत्री (मुख्यमन्त्री) होता है। दोनों में पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध हो तो जातक राज्याधिकारी होता है। जहाँ कहीं भी दोनों संयुक्त हों या एक दूसरे से सप्तम स्थानगत हो तो राजवंशोत्पन्न बालक निश्चयतः राजा होता है। राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। (आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है)।

262 राज योग

चतुर्थेश दशमस्थ हो और दशमेश चतुर्थस्त हो और नवमेश, पंचमेश की उस पर दृष्टि या युति हो तो राज योग होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 35)

जातक राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

263 राज योग

सुखेश व कर्मेश, पंचमेश या नवमेश के साथ संयुक्त हो तो राज योग होता है। (बृहत्पाराशर होराशास्त्र, अध्याय 40, श्लोक 37)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

264 राज योग

पंचमेश धर्मेश या लग्नेश के साथ 1, 4, 10 स्थानों में से कहीं हो तो मनुष्य राजा होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 38)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

265 राज योग

सभी शुभ ग्रह केन्द्रगत हों, सभी पाप ग्रह त्रिषडाय (3, 6, 11) में स्थित हों तो राज योग होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 19)

निःसंशय दुष्कुलज भी जातक राजा होता है। या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

266 राज योग

6, 8, 12वें के स्वामी अस्तंगत, नीचप्राप्त या शुभग्रहगत हों, और स्वभवन या स्वोच्च का लग्नेश लग्न को देखता हो तो राजयोग होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 20)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

267 राज योग

नीच के ग्रह तृतीय, षष्ठ या अष्टम स्थानगत हों, अपने क्षेत्र या उच्च का लग्नेश लग्न को देखता हो तो राजयोग युक्त जातक होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 19)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। (आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है)। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

268 राज योग

ुक्र संयुक्त गुरु अपने भवन धर्मस्थान (नवम) में हो या पंचमेश से युक्त हो तो राजयोग होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् (अध्याय 40)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

269 राज योग

लग्नस्थ शुक्र पर गुरु चन्द्र की युति या दृष्टि हो, तो जातक राजवर्गीय (राजसम्बन्ध या राजा ही) होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 11)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

270 राज योग

कारकांश या उससे पंचम में स्थित शुक्र पर गुरु या चन्द्र की दृष्टि या योग हो तो जातक राजवर्गीय (राजसम्बन्ध या राजा ही) होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 11)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

271 राज योग

स्वभवन या अपने उच्च का राज्येश यदि लग्न को देखे, व सभी शुभग्रह केन्द्रगत हों तो जातक निश्चयतः राजयोग भागी होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 40, श्लोक 21)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

272 राज योग

राहु केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी के साथ हो तो योगकारक होते हैं। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 35, श्लोक 17)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

273 राज योग

केतु केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी के साथ हो तो योगकारक होता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र (अध्याय 35, श्लोक 17)

राजा या राजसी पद प्राप्त होता है। सफलता, सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। आधुनिक संदर्भ में उच्च राजकीय पद मिलता है।

274 हर्ष योग

यदि छठे घर का मालिक दुःस्थान (6, 8 या 12) में स्थित हो तो हर्ष योग होता है।

जातक भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाला, सुखी, भोगी, शत्रुओं को पराजित करने वाला और पाप भीरु होता है। विख्यात और प्रधान व्यक्तियों का प्यारा होता है। और उसे धन, पुत्र, मित्र का पूर्ण सुख मिलता है। हर्ष योग वाले व्यक्ति यशस्वी होते हैं और उनके चेहरे पर शोभा रहती है।

275 सरल योग

यदि अष्टम भाव का स्वामी (6, 8 या 12) में बैठा हो तो सरल योग होता है।

जातक दीर्घायु दृढ़ मति (मुस्तकिल मिजाज) निर्भय, लक्ष्मीवान्, विद्या, पुत्र और धन से युत, अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला निर्मल और शत्रुओं को जीतने वाला, विख्यात पुरुष होता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 65)

276 विमल योग

यदि 12 वें घर का मालिक दुःस्थान (6, 8 या 12) में हो तो विमल योग होता है।

जातक व्यय थोड़ा करता है। उसके धन की अधिक वृद्धि होती है। ऐसा मनुष्य सुखी, स्वतन्त्र, अपने सद्गुणों के लिये विख्यात, उत्तम कार्य करने वाला होता है और सब व्यक्तियों के अनुकूल आचरण करता है। फलदीपिका (अध्याय 6, श्लोक 69)

277 राजयोग

उच्च राशि का बुध केन्द्र में हो तो राजयोग होता है।

जातक अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार शक्ति या राज्य प्राप्त करता है। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 5/17)

278 राजयोग

उच्च राशि का कोई भी शुभ्र ग्रह केन्द्र में हो तो राजयोग होता है।

जातक अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार शक्ति या राज्य प्राप्त करता है। ज्योतिषार्णव नवनीतम् (अध्याय 5/17)

279 राजयोग

मीन लग्न में जन्म हो, बृहस्पति दशम में हो तो निश्चय ही राजयोग होता है।

मीनजातस्य पुंसस्तु लग्नराज्याधिपो गुरुः। राज्ये स्थितो यदि भवेद्योगदश्च भवे ध्रुवम्।। भावार्थ रत्नाकर (अध्याय 1/12/11)

280 राजयोग

मीन लग्न में जन्म हो, चन्द्रमा वृष राशि में हो, सूर्य सिंह में हो, बुध कन्या में हो, शुक्र तुला में हो और बृहस्पति धनु में हो तो राजयोग होता है।

मीनजातस्य वृषभे चेन्दुस्सिंहे रविर्यदि। कन्यायां सोमपुत्रस्तु घटे शुक्रो धनुर्गुरुः।।12।। भावार्थ रत्नाकर (अध्याय 1/12/12)

281 राजयोग

मकर लग्न में जन्म हो, चन्द्रमा कर्क में और मंगल मकर में हो तो राजयोग होता है।

मकरे जायमानस्य चन्द्रः कर्कटके स्थितः। मकरस्थ धरासूनु राजयोगप्रदो भवेत्।। भावार्थ रत्नाकर (अध्याय 1/10/10)

282 राजयोग

तुला लग्न में जन्म हो, लग्न में शनि तथा कर्क में चन्द्रमा हो तो राजयोग होता है।

तुलायां जायमानस्य मन्दो लग्ने स्थितो यदि। कर्कटे यदि चन्द्रस्तु राजयोग उदीरितः।। भावार्थ रत्नाकर (अध्याय 1/7/14)

283 राजयोग

तुला लग्न में जन्म हो सूर्य, शनि और बुध की युति मंगल या चन्द्रमा के साथ हो तो राजयोग होता है।

तुलालग्ने तु जातस्य रवेस्सौरेरबुधस्य च। कुजस्यवेंदुसंबधो राजयोग उदीरितः।। भावार्थ रत्नाकर (अध्याय 1/7/7)

284 राजयोग

कर्क लग्न में जन्म हो तथा एकादश भाव में चन्द्रमा बुध और शुक्र हों, बृहस्पति लग्न में हो तथा सूर्य दशमभाव में हो तो राजयोग होता है।

इस योग में जन्म होने से राज्य प्राप्ति अथवा राजकीय पद प्राप्त होता है। भावार्थ रत्नाकर (अध्याय 1/4/6)

285 राजयोग

लग्न में कर्क राशि हो, गुरु (बृहस्पति) विराजमान हो, दशम् भाव में सूर्य एवं एकादश भाव में बुध, चन्द्र और शुक्र हों तो राजयोग होता है । (भावार्थ रत्नाकर 4/6)

जातक राजपद वाला तथा राजकीय प्रतिष्ठा वाला होता है ।

286 राजयोग

एक ग्रह जो दुर्बल हो, पर उदित हो या उसका अंश अधिक हो या वक्री हो तथा अनुकूल भाव में बैठा हो तो राजयोग होता है । (फलदीपिका 7/3)

जातक की शासक के समान प्रतिष्ठा होती है तथा वह समस्त राजकीय चिन्हों को धारण करता है ।

287 राजयोग

चन्द्र पूर्ण बली हो और स्वक्षेत्री ग्रह या उच्च ग्रह से दृष्ट हो तो राजयोग होता है । (फलदीपिका 7/7)

जातक यद्यपि सामान्य घर में जन्म लेता है तथापि शासक बनता है ।

288 राजयोग

यदि चन्द्र लग्न में हो, बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो, शुक्र दशम् भाव में हो, शनि उच्च का अथवा स्वक्षेत्री हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/9)

जातक शासक अथवा शासक के समान उच्च पद प्राप्त करता है ।

289 राजयोग

चन्द्र अथवा लग्न से केन्द्र में स्वक्षेत्री या उच्च ग्रह के साथ यदि दुर्बल ग्रह की युति हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/13)

जातक राजा होता है अथवा राजा के समान उच्च पद प्राप्त करता है ।

290 राजयोग

चन्द्र केन्द्र में हो परन्तु लग्न में न हो और (बृहस्पति) गुरु से दृष्ट हो और बली हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/14)

जातक राजकीय प्रतिष्ठा वाला या फिर शासक के समान प्रभावशाली, शक्तिशाली, समृद्धिशाली होता है ।

291 राजयोग

ग्रह यदि दुर्बल राशि में हो परन्तु नवमांश में उच्च के हों तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/15)

जातक राजकीय प्रतिष्ठा वाला होता है अथवा शासक के समान प्रभावशाली, शक्तिशाली, समृद्धिशाली होता है ।

292 राजयोग

यदि लग्न में बृहस्पति हो बुध केन्द्र में हो और क्रमशः नवम् एवं एकादश भाव के स्वामी द्वारा दृष्ट हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/20)

जातक राजकीय प्रतिष्ठा वाला होता है और शासक के समान प्रभावशाली, शक्तिशाली और समृद्धशाली होता है।

293 राजयोग

यदि लग्न मे बृहस्पति हो बुध केन्द्र में हो और क्रमशः प्रथम एवं नवम् भाव के स्वामी द्वारा दृष्ट हों तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/20)

जातक राजा या राजकीय प्रतिष्ठा वाला, शासक के समान शक्तिशाली, प्रभावशाली एवं समृद्धशाली होता है ।

294 राजयोग

शनि उच्च का केन्द्र अथवा मूल त्रिकोण में हो और दशम् भाव के स्वामी से दृष्ट हों तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/22)

जातक राजा बनता है या राजा के समान उच्च पद प्राप्त करता है ।

295 राजयोग

चन्द्र और मंगल की युति यदि द्वितीय अथवा तृतीय भाव में हो और राहू पंचम भाव में हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/19)

जातक राजा होता है अथवा राजा के समान उच्च पद प्राप्त करता है ।

296 राजयोग

दशम् भाव का स्वामी यदि नवम् भाव में उत्तमांश प्राप्त हो और नवमांश में उच्च राशि अथवा मित्र राशि में हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/23)

जातक शासक होता है अथवा शासक के समान उच्च पद प्राप्त करता है ।

297 राजयोग

लग्न से पंचम स्थान पर बृहस्पति और चन्द्र से केन्द्र में (बृहस्पति) हो तथा लग्न की राशि स्थिर हो जिसका स्वामी दशम् भाव में हो तो राजयोग होता है।(सर्वार्थ चिन्तामणि 9/26)

जातक शासक होता है अथवा शासक के समान उच्च पद प्राप्त करता है ।

298 राजयोग

नवमांश राशि के स्वामी यदि चन्द्र के आधिपत्य में हो और केन्द्र अथवा लग्न अथवा बुध से त्रिकोण में हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/28)

जातक सेनापति अथवा शासक के समान होता है ।

299 राजयोग

नवमांश का स्वामी दुर्बल ग्रह के आधिपत्य में हो, केन्द्र में या लग्न में त्रिकोण में हो, लग्न चर राशि हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/36)

जातक शासक होता है अथवा शासक के समान उच्च पद प्राप्त करता है ।

300 राजयोग

लग्नेश और दुर्बल ग्रह की युति हो, राहू और शनि दशम् भाव में स्थित हों और नवम् भाव के स्वामी से दृष्ट हो तो राजयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/37)

जातक राजा या राजा के समान उच्च पद प्राप्त करता है ।

301 राजयोग

एकादश नवम् अथवा द्वितीय में से किसी भाव का स्वामी यदि चन्द्र से केन्द्र में हो तथा बृहस्पति द्वितीय, पंचम अथवा एकादश भाव के स्वामी हो तो राजयोग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक महापुरुष अथवा सम्मानित शासक होता है ।

302 राजयोग

बृहस्पति, बुध और शुक्र या चन्द नवम् स्थान पर हों मित्र ग्रहों से युत हों अथवा दृष्ट हों और क्रूर दृष्टि से मुक्त हों तो राजयोग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक महापुरुष अथवा सम्मानित शासक होता है ।

303 राजयोग

लग्न में वृष राशि हो चन्द्र स्थित हो, शनि दशम् भाव में हो सूर्य चतुर्थ भाव में हो और बृहस्पति सप्तम स्थान पर हों तो राजयोग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 17/19)

जातक सफलता, प्रसिद्धि तथा प्रतिष्ठा के शिखर तक जाता है । एक शास्त्रीय उक्ति है - "राजा जब आक्रमण करेगा तो दिन को भी अंधकार के आवरण में ले लेगा ।"

304 राजयोग

सूर्य और चन्द्र दोनों पूर्ण बली हों तथा उच्च राशि में स्थित हों तो राजयोग होता है । (महर्षि गर्गाचार्य)

जातक प्रसिद्धि, सफलता तथा प्रतिष्ठा के शिखर तक ले जाता है ।

305 जैमिनी राजयोग

नवम् स्थान का स्वामी और आत्मकारक लग्न, पंचम या सप्तम स्थान में स्थित हों और शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो राजयोग होता है । (के- एन- राव)

जातक को प्रसिद्धि, सफलता तथा प्रतिष्ठा के शिखर क ले जाता है ।

306 जैमिनी राजयोग

यदि शुभ ग्रह लग्न या आत्मकारक से द्वितीय, चतुर्थ या पंचम स्थान पर स्थित हों और अनिष्ट ग्रह तृतीय तथा षष्टम् स्थान पर हों तो राजयोग होता है ।(के- एन- राव)

जातक को प्रसिद्धि, सफलता तथ प्रतिष्ठा मिलती है ।

307 जैमिनी राजयोग

चन्द्र और शुक्र की युति हो या चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो तो राजयोग होता है । (के- एन-राव)

जातक को प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा तथा सफलता मिलती है ।

308 जैमिनी राजयोग

चन्द्र यदि कई ग्रहों व द्वारा दृष्ट हो तो राजयोग होता है । (के- एन-राव)

जातक को प्रसिद्धि, सफलता तथा प्रतिष्ठा मिलती है ।

309 राज भंग योग

चन्द्र यदि अत्यन्त दुर्बलता के अंश में हो तो राज भंग योग होता है । (भाव कुतुहलम् 8/56)

जातक के किसी भी प्रकार के राजयोग को भंग करता है ।

310 धन योग

मिथुन लग्न हो चन्द्र और मंगल एकादश भाव में हो शनि नवम् भाव पर हो तो धन योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर 3/8)

जातक अति सम्पन्न होता है ।

311 धन योग

शुक्र पंचम स्थान पर स्वक्षेत्री हो और मंगल एकादश भाव पर हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/2)

जातक अति सम्पन्न होता है ।

312 धन योग

यदि बुध स्वक्षेत्री पंचम भाव में स्थित हो और चन्द्र मंगल तथा बृहस्पति एकादश भाव में हों तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/3)

जातक अत्यन्त समृद्धिशाली होता है ।

313 धन योग

पंचम स्थान पर सूर्य यदि स्वक्षेत्री हो और शनि चन्द्र और बृहस्पति एकादश भाव में स्थित हों तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/3)

जातक अत्यन्त सम्पन्न होता है ।

314 धन योग

यदि शनि पंचम स्थान पर स्वक्षेत्री हो और नक्षत्र एकादश भाव में हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/5)

जातक अत्यन्त धनवान होता है ।

315 धन योग

बृहस्पति स्वक्षेत्री पंचम स्थान पर हो और बुध एकादश स्थान पर हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/6)

जातक अत्यन्त धनवान होता है ।

316 धन योग

पंचम भाव में मंगल स्वक्षेत्री हो और शुक्र एकादश भाव में हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/7)

जातक अत्यन्त धनवान होता है ।

317 धन योग

पंचम स्थान पर चन्द्र स्वक्षेत्री हो और शनि एकादश स्थान पर हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/8)

जातक अत्यन्त समृद्धशाली होता है ।

318 धन योग

लग्न में सूर्य स्वक्षेत्री हो और मंगल और बृहस्पति की युति हो अथवा दृष्ट हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/9)

जातक पर अपार धन की वर्षा होती है ।

319 धन योग

लग्न में चन्द्र स्वक्षेत्री हो और बुध और बृहस्पति से दृष्ट हो या युति हो तो धन योग होता है ।(बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/10)

जातक धनवान होता है ।

320 धन योग

लग्न में मंगल स्वक्षेत्री हो और बुध, शुक्र और शनि से दृष्ट हों अथवा साथ हों तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/11)

जातक अत्यन्त धनवान होता है ।

321 धन योग

लग्न में बुध स्वक्षेत्री हो और शनि और बृहस्पति की युति हो या से दृष्ट हों तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/12)

जातक को अपार धन सम्पदा मिलती है ।

322 धन योग

लग्न में बृहस्पति स्वक्षेत्री हो बुध और मंगल से दृष्ट हों या युति हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/13)

जातक धनवान होता है ।

323 धन योग

शुक्र लग्न में स्वक्षेत्री हो और शनि और बुध द्वारा देखे जाते हों या साथ में हों तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/14)

जातक धनवान होता है ।

324 धन योग

ानि लग्न में स्वक्षेत्री हो और मंगल और बृहस्पति से दृष्ट हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/15)

जातक पर अपार धन की वर्षा होती है ।

325 धन योग (दशा)

नवम् स्थान का स्वामी पंचम भाव के स्वामी के साथ हो तो धन योग होता है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्र 43/2)

जातक के जिन ग्रहों के द्वारा यह योग बनता है उनके दशा काल में जातक अपार धन का उपभोग करता है ।

326 धन योग

लग्न के स्वामी का यदि द्वितीय या पंचम या नवम् या एकादश भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो तो धन योग होता है । (डॉं- के- एस- चरक)

जातक धनवान होगा !

327 धन योग

यदि द्वितीय स्थान के स्वामी का यदि पंचम या नवम् या एकादश भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो तो धन योग होता है । (डॉं- के- एस- चरक)

जातक धनवान होता है ।

328 धन योग

यदि पंचम भाव के स्वामी का नवम् अथवा एकादश भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध हो तो धन योग होता है । (डॉं- के- एस- चरक)

जातक धनवान होता है ।

329 धन योग

यदि नवम् स्थान के स्वामी का एकादश भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो तो धन योग होता है । (डॉं- के- एस- चरक)

जातक धनवान होता है ।

330 दान योग

यदि नवम् स्थान का स्वामी अपनी उच्च राशि में हो और शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो और नवम् भाव स्वयं भी शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो दान योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/43)

जातक बेहद दानी होता है यदि सम्पन्न न हो तो भी दान पुण्य से जुड़ा रहता है । राज योग और भाग्य योग की उपस्थिति इसके परिणाम को अधिक बढ़ाती है ।

331 दान योग

नवम् भाव का स्वामी पर्वतांश में हो और बृहस्पति से दृष्ट हो तथा लग्न का स्वामी शुक्र से दृष्ट हो तो दान योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/44)

जातक अत्यन्त दानी होता है यदि सम्पन्न न हो तब भी दान पुण्य से जुडा रहता है । भाग्य योग्य ,वं राज्य योग इसके परिणाम को अधिक बढ़ाते है ।

332 दान योग

लग्न या लग्न का स्वामी नवम् भाव के स्वामी से दृष्ट हो जो कि केन्द्र में अथवा त्रिकोण में हो तो दान योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/45)

जातक अति दानशील होता है यदि सम्पन्न न हो तब भी दान पुण्य के कार्यों से जुड़ा रहता है । भाग्य योग और राजयोग इसके परिणाम में अभिवृद्धि करते है ।

333 दान योग

नवम् भाव का स्वामी यदि सिंहासन में हो और लग्न के स्वामी तथा दशम् के स्वामी से दृष्ट हो तो दान योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/46)

जातक अति दानशील होता है यदि सम्पन्न न हो तो भी दान पुण्य के कार्यों से जुड़ा रहता है । भाग्य योग और राजयोग इसके परिणाम में अभिवृद्धि करते है ।

334 दान योग

नवम् भाव का स्वामी यदि चतुर्थ भाव में हो, दशमेश यदि केन्द्र में हो, द्वादशेश यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो दान योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/50)

जातक अति दानशील होता है यदि सम्पन्न न हो तब भी दान पुण्य से जुडा रहता है । भाग्य योग और राजयोग इसके परिणाम में अभिवृद्धि करते हैं ।

335 दान योग

यदि उच्च का बुध नवमेश से दृष्ट हो और एकादशेश केन्द्र में स्थित हो तो दान योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/51)

जातक अति दानी होता है यदि सम्पन्न न हो तब भी दान पुण्य से जुड़ा रहता है । भाग्य योग और राजयोग इसके परिणाम में अभिवृद्धि करते हैं ।

336 बहुद्रव्यार्जन धन योग

लग्नेश यदि द्वितीय भाव में हो और द्वितीयेश यदि एकादश भाव में हो तथा एकादशेश यदि लग्न में हो तो बहुद्रव्यार्जन योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/54)

जातक यथेष्ट धन अर्जित करता है ।

337 स्ववीर्य धन योग

लग्नेश सबसे अधिक शक्तिशाली ग्रह हो केन्द्र में हो, बृहस्पति के साथ हो और द्वितीयेश के साथ वैशेषिकांश हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/55)

जातक अपने पराक्रम से धन अर्जित करता है ।

338 स्ववीर्य धन योग

द्वितीयेश लग्नेश से केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो या स्वाभाविक शुभ ग्रह (मित्र ग्रह) द्वितीयेश उच्च का हो या उच्च के ग्रह के साथ हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3)

जातक स्वयं के पराक्रम से अर्थ अर्जित करता है ।

339 अन्त्यव्यासी धन योग

राशिपति जिसमें लग्नेश और द्वितीयेश पूर्ण बली होकर शुभ ग्रहों से युत हों और लग्न में स्थित हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/58)

जातक को जीवन के उत्तरार्द्ध में धन की प्राप्ति होती है ।

340 बाल्य धन योग

द्वितीयेश और दशमेश की युति केन्द्र में हो और नवमांश का स्वामी लग्नेश के साथ हो तो बाल्य धन योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/54)

जातक अपनी बाल्यावस्था में ही बहुत सा द्रव्य अर्जित करता है ।

341 भ्रातृमूलार्धन प्राप्ति योग

लग्नेश और द्वितीयेश की युति तृतीय भाव में हो तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/59)

जातक को छोटे भाई बहिन से या रिश्तेदारों से धन की प्राप्ति होती है ।

342 भ्रातमूलार्धन प्राप्ति योग

तृतीय भाव का स्वामी गुरु के साथ द्वितीय स्थान पर स्थित हो और लग्नेश द्वितीय स्थान पर स्थित हो और लग्नेश से दृष्ट हो जो कि वैशेषिकांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/60)

जातक को अपने परिजन अथवा छोटे भाई बहिन से धन प्राप्ति होती है ।

343 मातृमूलार्धन योग

द्वितीयेश बली हो और चतुर्थेश के साथ हो अथवा दृष्ट हो जो कि वैशेषिकांश में भी हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/54)

जातक को अपनी माँ से अथवा मातृ सम्बन्धों के सहयोग से धन की प्राप्ति होती है ।

344 पुत्रमूलार्धन योग

द्वितीयेश बली हो और पंचमेश अथवा बृहस्पति के साथ युति हो और लग्नेश वैशेषिकांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/65)

जातक को अपने पुत्रों से अथवा उनके सहयोग से धनार्जन होता है ।

345 शत्रुमूलार्धन योग

द्वितीयेश बली हो षष्टमेश निर्बल हो या मंगल से युत हो या दृष्ट हो जबकि लग्नेश वैशेषिकांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/67)

जातक को अपनु शत्रुओं से (शायद प्रतिस्पर्धा की मदद से) धन का प्राप्ति होती है ।

346 कलत्रमूलार्धन योग

बली द्वितीयेश सप्तेश और शुक्र से युत हो या दृष्ट हो तथा लग्नेश भी बली हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/67)

जातक को अपने जीवन साथी से धन की प्राप्ति होती है !

347 अयत्न धन लाभ योग

लग्नेश यदि द्वितीय भाव में हो और द्वितीयेश यदि लग्न में हो तो अयत्न धन लाभ योग होता है । (मूल स्त्रोत - अज्ञात)

जातक के बिना अधिक परिश्रम के धन लाभ होता है ।

348 कर्मजीव योग

यदि नवमांश का स्वामी दशम स्थान पर हो और दशमेश सूर्य हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक 10/2)

जातक का जीविकोपार्जन एवं सम्पत्ति सुगन्धित द्रव्य, सोना, ऊन और दवाइयों से प्राप्त होता है । जातक चिकित्सा के क्षेत्र से जुड़ा होता है तथा पिता से भी धनार्जन होता है । (सूर्य)

349 कर्मजीव योग

लग्न से या चन्द्र से दशम स्थान पर सूर्य हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक का व्यवसाय एवं सामाजिक प्रतिष्ठा सुगन्धित द्रव्य, सोना ऊन और दवाओं द्वारा होती है । जातक चिकित्सक अथवा चिकित्सक का सहायक होता है । (सूर्य)

350 कर्मजीव योग

चन्द्र या लग्न से सूर्य दशम स्थान (यह अन्य कर्मजीव योग से कम अंश का है) का स्वामी हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक के लिए ग्रहों की यह स्थिति सूर्य से सम्बन्धित व्यवसायों में सहायक होती है । जातक सुगन्धित द्रव्य, ऊन और दवाइयों से जुड़ा होता है अथवा चिकित्सक या सहायक चिकित्सक हो सकता है ।

351 कर्मजीव योग

नवमांश का स्वामी दशम स्थान पर हो और दशमेश यदि चन्द्र हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक 10/2)

जातक को सम्पदा एवं जीविकोपार्जन कृषि, जल सम्बन्धी उत्पादन, मूंगा, मोती से, सीपी मिलेगा और जातक महिला के ऊपर निर्भर होगा । किसी प्रकार माँ के द्वारा धनार्जन होगा । (चन्द्रमा)

352 कर्मजीव योग

लग्न या सूर्य से चन्द्र यदि दशम स्थान पर हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक को व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा कृषि - जलीय उत्पादन मूंगा मोती सीप से मिलती है और जातक महिला पर निर्भर होता है । माँ द्वारा भी किसी रुप में धनार्जन होता है ।

353 कर्मजीव योग

यदि सूर्य या लग्न से दशम स्थान का स्वामी चन्द्र हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक के लिए ग्रहों की यह स्थिति चन्द्र से सम्बन्धित व्यवसायो के लिए होती है तथा कृषि सम्बन्धित - जल सम्बन्धित मूंगा, मोती, सीप सम्बन्धित व्यवसायों के लिए भी सहायक होती है । जातक महिला पर निर्भर होता है ।

354 कर्मजीव योग

लग्न से या सूर्य से दशम स्थान चन्द्र से युत हो या दृष्ट हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक के ग्रहों की यह स्थिति चन्द्र से सम्बन्धित व्यवसायों, कृषि से सम्बन्धित जलीय उत्पादों से सम्बन्धित, मूंगाण्मोतीण्सीप आदि से सम्बन्धित व्यवसायों के लिए सहायक होती है । जातक महिला पर निर्भर करता है ।

355 कर्मजीव योग

नवमांश का स्वामी दशम में हो और दशमेश मंगल हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक को जीविकोपार्जन एवं सम्पदा खनिज तत्वों, अग्नि तत्वों (पटाखे, रसोई, इंजन चालक, अग्नि और ताप से सम्बन्धित कार्य), शस्त्रों, रोमांचकारी कार्यों, बाहुबल से मिलती है । जातक को शत्रु द्वारा धनार्जन होता है । (मंगल)

356 कर्मजीव योग

लग्न, सूर्य या चन्द्र से यदि मंगल दशम स्थान पर हो तो यह कर्मजीव योग होता है । (बृहत जातक)

जातक का व्यवसाय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा खनिज तत्वों, अग्नि या ताप (पटाखे, रसोई, इंजन चालक), शस्त्र, रोमांचकारी कार्यों और बाहुबल से मिलती है । जातक को शत्रु द्वारा भी धन प्राप्त हो सकता है । (मंगल)

357 कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्र या सूर्य से दशम स्थान का स्वामी यदि मंगल हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक)

ग्रहों की स्थिति मंगल से सम्बन्धित व्यवसायों खनिज तत्वो, अग्नि तत्वों (पटाखे, रसोई, इंजन चालक, अग्नि और ताप से सम्बन्धित कार्य) शस्त्रों, रोमांचकारी कार्यों और बाहुबल कार्यों में सहायक होती है ।

358 कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्र या सूर्य से दशम स्थान का स्वामी मंगल से युत हो या दृष्ट हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक) (यह अन्य कर्मजीव योग से कम अंश का है)

यह योग मंगल से सम्बन्धित व्यवसायों, खनिज तत्वों, अग्नि (पटाखे, रसोई, इंजन चालन एवं अग्नि और ताप), हथियार, रोमांचकारी एवं बाहुबल से जुडे व्यवसाय में सहायक है ।

359 कर्मजीव योग

नवमांश का स्वामी दशम स्थान पर हो और दशमेश बुध हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक 10/2)

जातक की सम्पदा और जीविका लेखन, गणित, काव्य और ललित कलाओं द्वारा होती है । जातक अभियान्त्रिक, चित्रकार, मूर्त्तिकार, वास्तुकार, नक्काश या सुगन्धित द्रव बनाने वाला होता है । जातक को मित्र से धनार्जन हो सकता है । (बुध)

360 कर्मजीव योग

लग्न या चन्द्र से दशम स्थान पर बुध हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक का व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा लेखन, गणित, काव्य एवं ललित कला द्वारा होती है । जातक लेखक, चित्रकार, मूर्त्तिकार, नक्काश, वास्तुकार, अभियान्त्रिक या इत्र बनाने वाला हो सकता है । जातक को अपने मित्र से धनार्जन हो सकता है । (बुध)

361 कर्मजीव योग

लग्न, सूर्य या चन्द्र से दशम स्थान के स्वामी बुध हों तो यह योग होता है । (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग से यह योग कम अंश का है)

यह योग बुध से सम्बन्धित व्यवसाय जैसे मैकेनिक, चित्रकार, मूर्त्तिकार, नक्काश, वास्तुकार एवं इत्र निर्माता आदि के लिए सहायक होता है ।

362 कर्मजीव योग

लग्न, सूर्य या चन्द्र से दशम स्थान के स्वामी बुध से युत हो या दृष्ट हों तो यह योग होता है । (अन्य कर्मजीव योग से यह योग कम अंश का है) (बृहत् जातक)

यह योग बुध से सम्बन्धित व्यवसाय जैसे मैकेनिक, चित्रकार, मूर्त्तिकार, नक्काश, वास्तुकार एवं इत्र निर्माता हेतु सहायक होता है ।

363 कर्मजीव योग

नवमांश का स्वामी बृहस्पति दशमेश हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक 10/3)

जातक को सम्पदा और उपजीविका शिक्षित वर्ग के सम्पर्क से, ज्ञान से, कानून, धर्म, मन्दिरों, दानपुण्य एवं साधना, तीर्थ यात्रा, आध्यात्मिक अनुसरण आदि से प्राप्त होती है । जातक को धनार्जन अगली पीढी से, बच्चों से हो सकती है ।

364 कर्मजीव योग

चन्द्र, लग्न या सूर्य से दशम स्थान पर बृहस्पति हों तब यह योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक को व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा शिक्षित वर्ग के जुड़ाव से, ज्ञान से, कानून से, धर्म से, मन्दिरों से, दान पुण्य से, साधना से, तीर्थ यात्रा से तथा आध्यात्मिक अनुसरण आदि से प्राप्त होती है । जातक को धनार्जन अगली पीढ़ी से बच्चों से हो सकता है ।

365 कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्र या सूर्य से दशम भाव का स्वामी बृहस्पति हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग से यह कम अंश का है)

ग्रहों की स्थिति जातक को बृहस्पति से जुडे व्यवसाय में सहायक होती है जैसे शिक्षित वर्ग के सम्पर्क से, ज्ञान से, कानून से, धर्म से, मन्दिरों से, दान से, साधना से, तीर्थ यात्राओं से तथ आध्यात्म से जुडे व्यवसाय ।

366 कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्र या सूर्य से दशमेश से बृहस्पति युत हो या दृष्ट हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग से यह कम अंश का है)

यह ग्रह स्थिति जातक को बृहस्पति से जुडे व्यवसाय में सहायक होती है, जैसे शिक्षित वर्ग के सम्पर्क से, ज्ञान, धर्म, मंदिर, दान, साधना, तीर्थ यात्रा तथ आध्यात्म से जुडे व्यवसाय ।

367 कर्मजीव योग

नवमांश का स्वामी यदि दशमेश शुक्र हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक 10/3)

व्यक्ति के पास धन तथा रोजी रत्न, चांदी, गाय, भैंस अथवा कोई भी मूल्यवान वस्तु अथवा संवेदिक प्रसन्नता अथवा सौंदर्य सम्बन्धी साधनों से होती है । जातक को आय या संपदा का माध्यम स्त्री अथवा जीवनसाथी द्वारा प्राप्त हो सकता है ।

368 कर्मजीव योग

लग्न या चन्द्र से शुक्र दशम स्थान पर होने पर यह योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक का व्यवसाय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा - रत्न, चांदी, भैंस, गाय या किसी मूल्यवान वस्तु या संवेदिक प्रसन्नता या सौंदर्य से सम्बन्धित व्यवसाय द्वारा मिल सकती है । जातक को आय या सम्पदा का माध्यम स्त्री अथवा जीवनसाथी द्वारा प्राप्त हो सकता है ।

369 कर्मजीव योग

लग्न से, चन्द्र से या सूर्य से दशम स्थान का स्वामी शुक्र हो तब यह योग होता है । (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग की तुलना में यह कम अंश का होता है)

ग्रहों की स्थिति शुक्र से जुड़े व्यवसायों में सहायक होती है । जैसे रत्न व्यवसाय, चांदी, गाय, भैंस और मूल्यवान वस्तु या आनन्दित करने वाला कार्य या सौंदर्य से जुड़ा व्यवसाय ।

370 कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्र या सूर्य से दशमेश शुक्र से दृष्ट हो या युत हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग से यह योग कम अंश का होता है)

ग्रहों की स्थिति शुक्र से सम्बन्धित व्यवसायों में सहायक होती है । जैसे रत्न, चांदी, गाय, भैंस, मूल्यवान वस्तु, आनन्दित करने वाला या सौंदर्य सम्बन्धी कार्य ।

371 कर्मजीव योग

नवमांश का स्वामी दशम स्थान पर हो और उसका स्वामी शनि हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक 10/3)

जातक के पास धन तथा आजीविका मेहनत से आती है । जैसे भार वहन करना, निम्न स्तर का व्यापार करना, जो पारिवारिक प्रतिष्ठा के विपरीत हो । आजीविका का मूल नौकर द्वारा हो सकता है । (शनि)

372 कर्मजीव योग

लग्न से दसवें भाव में शनि उपस्थित हो या सूर्य या चन्द्र से दसवें भाव में शनि हो तो कर्मजीव योग होता है ।(बृहत् जातक)

व्यक्ति का व्यवसाय या सामाजिक स्तर परिश्रम सम्बन्धित होता है - जैसे भार वहन करना या निम्न स्तर का व्यापार करना जो कि पारिवारिक परंपराओं के खिलाफ हो । (शनि)

373 कर्मजीव योग

लग्न, सूर्य या चन्द्र से दसवें भाव मे शनि की उपस्थिति से कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक) (अन्य कर्मजीव योग से यह योग कम अंश का होता है)

ग्रहों की स्थिति शनि से सम्बन्धित व्यवसायों का संकेत देती है । जैसे - कर्म से जुड़े व्यवसाय, भार वहन करना अथवा पारिवारिक प्रतिष्ठा के विरुद्ध निम्न स्तर का व्यापार करना ।

374 कर्मजीव योग

लग्न, सूर्य या चन्द्र से दशमेश की यदि शनि से युति हो अथवा दृष्ट हो तो कर्मजीव योग होता है । (बृहत् जातक)(अन्य कर्मजीव योग से यह योग कम अंश का होता है)

जातक को यह ग्रह स्थिति शनि से जुड़े व्यवसाय से जोड़ती है – जैसे परिश्रमी कार्य, भर वहन करना अथवा निम्न स्तर के व्यापार जो परिवार के मान के विरुद्ध हों ।

375 कर्मजीव योग

दशमेश यदि चर राशी में स्थित हो और नवमांश में हो तो कर्मजीव योग होता है । (शंभु होरा प्रकाशन 15/15)

जातक को धन और प्रसन्नता की प्राप्ति विदेश में होती है ।

376 कर्मजीव योग

दशमेश यदि स्थिर राशी में तथा नवमांश में स्थित हो तो कर्मजीव योग होता है । (शंभु होरा प्रकाशन 15/15)

जातक को धन तथा प्रसन्नता मातृभूमि पर प्राप्त होती है ।

377 कर्मजीव योग

दशमेश यदि द्विस्वभाव राशी में हो और नवमांश में हो तो कर्मजीव योग होता है । (शंभु होरा प्रकाशन 15/15)

जातक को धन व सुख विदेश तथा स्वदेश, दोनों में प्राप्त होते है ।

378 कर्मजीव योग

चन्द्रमा से दसवें भाव में बुध यदि बलि हो तथा अनिष्टकर दृष्टि से रहित हो तो कर्मजीव योग होता है । (शंभु होरा प्रकाशन 15/17)

जातक की प्रतिष्ठा में चहुँ ओर से वृद्धि होती है ।

379 कर्मजीव योग

चन्द्रमा से दसवें भाव में बुध स्वक्षेत्री हो तथा अनिष्टकर दृष्टि रहित हो तो कर्मजीव योग होता है । (शंभु होरा प्रकाशन 15/17)

जातक की प्रतिष्ठा में चहुँ ओर से वृद्धि होती है ।

380 कर्मजीव योग

लग्न से दसवें भाव में यदि बलि बुध हो तथा अनिष्टकर दृष्टि रहित हों तो कर्मजीव योग होता है । (शंभु होरा प्रकाशन 15/17)

जातक की प्रतिष्ठा में हर ओर से वृद्धि होती है ।

381 गज योग

ग्यारहवें भाव से नवमेश यदि ग्यारहवें भाव में ही स्थित हो, चन्द्र से युत हो तथा एकादशेश द्वारा दृष्ट हो तो गज योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक मवेशी, घोड़ों तथा हाथियों का स्वामी होता है तथा सदा एक सम्पन्न तथा खुशहाल जीवन व्यतीत करता है ।

382 देवेन्द्र योग

यदि लग्न राशी स्थिर हो, लग्नेश एकादश भाव में तथा एकादशेश लग्न में हों । साथ ही द्वितीयेश दशम भाव में तथा दशमेश द्वितीय भाव में उपस्थित हों तो देवेन्द्र योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक अत्यन्त आकर्षक तथा रमणीय प्रतीत होता है तथा एक शासक होकर जीवन का आनन्द अनुभव करता है और मान प्रतिष्ठा वाला होता है ।

383 मुकुट योग

गुरु नवमेश से नवम् भाव में स्थित हो, गुरु से नवम् भाव में कोई शुभ ग्रह की उपस्थिति हो तथा शनि दसवें भाव में हो तो मुकुट योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक जंगली आदिवासी या फिर शिकारी दल का शासक होता है । वह शक्तिशाली, सफल, क्रूर मानसिकता का तथा एक अच्छा धावक होता है ।

384 चन्द्रिका योग

नवमांश के स्वामी का षष्टमेश पर आधिपत्य हो और नवमांश के स्वामी का नवमेश पर आधिपत्य हो या सूर्य की युति हो तो चन्द्रिका योग होता है । (मूल सन्दर्भ प्अज्ञात)

जातक सम्पन्न और उत्साही धार्मिक दान दाता होता है और दीर्घ सुखी एवं प्रसिद्ध जीवन जीता है ।

385 चन्द्रिका योग

नवमांश के स्वामी का षष्टमेश पर आधिपत्य हो तथा नवमांश के स्वामी का नवमेश पर आधिपत्य हो या सूर्य से युति हो, षष्टमेश से प्रभावित होकर स्थिर राशि में, केन्द्र में स्थित हो । ग्रहों की इस स्थिति में चन्द्रिका योग होता है । (मूल स्त्रोत

जातक सम्पन्न और उत्साही दान दाता होता है और दीर्घ, सुखी और प्रसिद्ध जीवन जीता है ।

386 जय योग

छठे भाव का स्वामी दुर्बल हो तथा दशम भाव का स्वामी हो तो जय योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक अपने शत्रु पर विजय और प्रसन्नत्ता पाता है । जातक को हर जोखिम या अपने किसी साहसिक कार्य में आजीवन सफलता प्राप्त होती है ।

387 विद्वत योग

एकादशेश यदि अति उच्च का हो और शुक्र से युति हो और लग्नेश से केन्द्र में हो तो विद्वत योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक दान दाता होता है । प्रसन्नता चाहने वाला, कोषागार का अध्यक्ष, महान शासक या इसके समकक्ष हो सकता है ।

388 गंधर्व योग

दशमेश यदि काम भाव में हो, लग्नेश की युति बृहस्पति के साथ हो, सूर्य अति उच्च का हो तथा चन्द्रमा नवम् भाव में स्थित हो तो गंधर्व योग होता है । (मूल सन्दर्भ अज्ञात)

जातक कलाकार होता है तथा अच्छे कपड़े और प्रसन्नता का शौकीन होता है । जातक 68 साल की उम्र तक ख्याति प्राप्त करता है ।

389 शिव योग

पंचमेश नवम् भाव में हो, जबकि नवमेश दशम भाव में हो तथा दशमेश पंचम् भाव में हो तो शिव योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक व्यावसायिक कार्यों में सफलता पाता है, विजयी होता है, सेनापति होता है । जातक बुद्धिमानी होने के साथ्साथ ईमानदारी से जीवन व्यतीत करता है ।

390 विष्णु योग

नवमांश के स्वामी के साथ नवमेश तथा दशमेश की युति यदि द्वितीय भाव में हो तो विष्णु योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक प्रसन्नता तथा आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करता है । जातक विदेशी भूमि पर धन अर्जित करता है तथा बुद्धिमान और अच्छा संवाद पटु होता है । वह शासकों द्वारा पसन्द किया जाता है और अपने 100 साल की आयु तक पूर्ण धन का आनन्द लेता है ।

391 ब्रह्म योग

नवमेश से बृहस्पति केन्द्र में हो और शुक्र एकादशेश से केन्द्र में हो और बुध लग्नेश से केन्द्र में हो या दशमेश से केन्द्र में हो तो ब्रह्म योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक उत्तम प्रकार के भोजनादि का (शाही भोजन का) शौकीन होता है । भोग विलास की वस्तुओं का शौकीन होता है । जातक का सम्मान ज्ञानी तथा आध्यात्मिक व्यक्ति के रुप में होता है । जातक सुशिक्षित, नैतिक तथा दानी होता है तथा दीर्घायु होता है ।

392 सूर्य योग

सूर्य दशम भाव में हो तथा दशमेश की शनि से युति यदि तृतीय भाव में हो तो सूर्य योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक पन्द्रह वर्ष की आयु में अत्यधिक प्रसिद्धि पाता है । शासक की ओर से उसे सम्मान प्राप्त होता है । विज्ञान का ज्ञाता सादा भोजन पसन्द करने वाला, कमल नयन वाला और उन्नत वक्षस्थल वाला होता है ।

393 गरुड़ योग

नवमांश राशि के स्वामी का चन्द्रमा उच्च का होकर अधिपति हो । जन्म समय दिन का हो जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष दिखाई देता हो तो गरुड़ योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक बराबर वालों से सम्मान प्राप्त करता है, सत्य भाषी, बलवान जिससे शत्रु भय खाते हैं, होता है तथा उम्र के चौतींसवें वर्ष में जहर द्वारा संकटग्रस्त हो सकता है ।

394 गौ योग

बली, बृहस्पति द्वितीयेश के साथ अपने मूल त्रिकोण का अधिपति हो जबकि लग्नेश उच्च का हो तब गौ योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक प्रतिष्ठित परिवार में पला बढ़ा होता है । सम्पन्न एवं शक्तिशाली होता है । शासक होता है या शासक के समान होता है ।

395 गोला योग

पूर्ण चन्द्र नवम् भाव में हो शुक्र और बृहस्पति के साथ हो जबकि बुध नवमांश लग्न में हो तो गोला योग होता है । (मूल स्त्रोत - अज्ञात)

जातक दीर्घायु होता है, पौष्टिक भोजन प्राप्त करने वाला, विनयशील, सुशिक्षित, कस्बे का नेता या न्यायाधीश होता है ।

396 त्रिलोचन योग

सूर्य, चन्द्र और मंगल एक दूसरे से तीसरे स्थान पर हों तो त्रिलोचन योग होता है । (मूल स्त्रोत - अज्ञात)

जातक सम्पन्न तथा अत्यन्त बुद्धिमान होता है । शत्रु को भयग्रस्त रखता है तथा दीर्घजीवी होता है ।

397 शरीर सुख्य योग

लग्नेश बृहस्पति या शुक्र केन्द्र में हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/98)

जातक को दीर्घ जीवन एवं सम्पदा मिलती है तथा राजनीतिक शक्तियों द्वारा सम्बन्ध बनता है ।

398 देहापुष्टि योग

लग्नेश चर राशि मे हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो देहापुष्टि योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/108)

जातक को पूर्ण विकसित देहयष्टि के साथ जीवन में प्रसन्न्ता सम्पदा एवं आनन्द की प्राप्ति होती है ।

399 देहकष्ट योग

लग्नेश यदि पापग्रह के साथ हो या अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/109)

जातक को शारीरिक सुख के अभाव में जीवन यापन करना होगा ।

400 रोगग्रस्त योग

लग्नेश लग्न में षष्टमेश, अष्टमेश या द्वादशेश के साथ हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/74)

जातक का शारीरिक गठन दुर्बल होगा तथा रोगी होगा ।

401 रोगग्रस्त योग

दुर्बल लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो रोगग्रस्त योग होता है ।(सर्वार्थ चिन्तामणि 2/74)

जातक दुर्बल शरीर वाला और रोगी होता है ।

402 कृसंग योग

लग्नेश यदि शुष्क राशि में हो या उस राशि में हो जिसका स्वामी शुष्क ग्रह हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/83)

जातक को शारीरिक कष्ट और पीडा होगी तथा जातक कृशकाय होगा ।

403 कृसंग योग

नवमांश लग्नेश शुष्क ग्रह हो और पापग्रह लग्न में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/2)

जातक को शारीरिक कष्ट और पीड़ा होगी तथा कृशकाय होगा ।

404 देहस्थूल्य योग

नवमांश में लग्न का स्वामी तथा लग्न कुण्डली लग्नेश यदि जलीय राशि में स्थित हों तब यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/85)

जातक बलिष्ठ शरीर वाला होगा ।

405 देहास्थूल्य योग

बृहस्पति लग्न में हो या जलीय राशि से लग्न को देखें तब यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/87)

जातक बलिष्ठ शरीर वाला होगा ।

406 देहास्थूल्य योग

लग्न में जलीय राशि हो तथा शुभ ग्रह से युत हो अथवा लग्नेश जलीय ग्रह हो तब यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/87)

जातक बलिष्ठ शरीर वाला होगा ।

407 सदा संचार योग

लग्न का स्वामी अथवा राशि का स्वामी चर राशि में लग्नेश के आधिपत्य में हो तब सदा संचार योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 2/91)

जातक सदा भ्रमणशील रहेगा ।

408 परिहासक योग

नवमांश राशि के स्वामी में सूर्य हो वैशेषिकांश द्वितीय भाव में हो तब यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/47)

जातक हाजिर जवाब और विनोदी वक्ता होता है ।

409 असत्यवादी योग

द्वितीयेश यदि शनि अथवा मंगल के घर में हों और पापग्रह केन्द्र और त्रिकोण में हो तो असत्यवादी योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/46)

जातक असत्यवादी होगा ।

410 जड योग

द्वितीयेश दशम भाव में पापग्रहों के साथ हो या द्वितीय स्थान पर सूर्य और मांदी या द्वितीयेश सूर्य और मांदी के साथ हो तो जड योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/4)

जातक विफल हो जाता है । समूह के समक्ष बोलने पर अपना संतुलन खो बैठता है ।

411 मूक योग

यदि द्वितीयेश (बृहस्पति) गुरु के साथ यदि अष्टम भाव में स्थित हो तो मूक योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/30)

जातक गूंगा हो जाएगा ।

412 नेत्रांस योग

दशमेश एवं षष्टमेश और द्वितीयेश यदि लग्न को देखें या सभी नीचमांश में हो (जबकि सूर्य और चन्द्र ज्यादा बली न हो) तब यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक अपने जीवन काल में अंधा हो जा,गा । संभावना है कि ऐसा शासकों के सम्पर्क में आने पर या उनमें असंतोष के कारण हो ।

413 अंध योग

चन्द्र और बुध द्वितीय भाव में हो या लग्नेश और द्वितीयेश सूर्य के साथ द्वितीय भाव में हों तब अंध योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/2/9)

जातक या तो रतौंधी से पीडित होता है अथवा जन्मांध होता है ।

414 अंध योग

मंगल, चन्द्र, शनि और सूर्य क्रमशः दूसरे, छठे, बारहवें तथा आठवें स्थान पर हो तब अंध योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 9/2/9)

जातक या तो अंधा हो सकता है अथवा उसमें भारी दृष्टि दोष हो सकता है ।

415 सुमुख योग

द्वितीयेश यदि केन्द्र में हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभ ग्रह द्वितीय भाव में हों तो सुमुख योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/26)

जातक खुश मिजाज और आकर्षक चेहरे वाला होता है ।

416 सुमुख योग

द्वितीयेश यदि केन्द्र में स्वक्षेत्री हो, मित्र के घर में या उच्च राशि में हो तथा केन्द्र का स्वामी गोपुरांश में हो तो सुमुख योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/26)

जातक प्रसन्न एवं आकर्षक चेहरे वाला होता है ।

417 दुर्मुख योग

पापग्रह द्वितीय भाव में हो और द्वितीयेश निर्बल हो या पापग्रह से युत हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/27)

जातक का चेहरा अनाकर्षक और बिगड़ा हुआ होगा । (या तो जन्म से अथवा दुर्घटनावश होगा) उसके चेहरे के भाव आसानी से उसमें नकारात्मक भावों को व्यक्त कर देते हैं ।

418 दुर्मुख योग

द्वितीयेश पापग्रह हो तथा गुलिका से युत हो अथवा शत्रु या दुर्बल नवमांश में पापग्रहों के साथ हो तो दुर्मुख योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/28)

जन्म से अथवा दुर्घटनावश जातक का चेहरा बिगड़ा हुआ तथा अनाकर्षक होगा । उसके चेहरे के भाव उसके नकारात्मक भावों की सरलता से बता देंगे ।

419 भोजनसुख योग

द्वितीयेश बली हो तथा वैशेषिकांश में स्थित हो तथा बृहस्पति या शुक्र से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/133)

जातक अपार धन अर्जित करता है तथा उत्तम प्रकार के भोजनादि का आनन्द उठाता है ।

420 अन्नदान योग

द्वितीयेश वैशेषिकांश में हो तथा बृहस्पति या बुध द्वारा दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/34)

जातक स्वभाव से आतिथेय होता है तथा असाधारण संख्या में लोगों को भोजन करवाता है ।

421 परान्न भोजन योग

द्वितीयेश दुर्बल हो या प्रतिकूल नवमांश राशि में स्थित हो और किसी दुर्बल ग्रह द्वारा दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/141)

जातक पराये व्यक्ति पर निर्भर (भोजन के लिए) करता है तथा दोषपूर्ण भोजन प्राप्त करता है ।

422 श्राद्धान्नभुक्ता योग

द्वितीयेश शनि हो या द्वितीयेश शनि से युत या द्वितीय भाव अथवा द्वितीयेश दुर्बल शनि से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/142)

जातक अस्वच्छ या मृत भोजन या मृत्यु भोज (सम्बन्धी का नहीं) प्राप्त करता है ।

423 सर्पगंधा योग

द्वितीय भाव में राहू मांदी युत हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/150)

जातक सर्पदंश से असुरक्षित रहेगा । (यह योग गलत भी हो सकता है क्योंकि मूल सन्दर्भ में स्पष्टतया के स्थान पर गुलिका है)

424 सर्पगंधा योग

द्वितीय भाव में राहू के साथ गुलिका हो तब यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/150)

जातक सर्पदंश से असुरक्षित रह सकता है ।

425 वाक्चालन योग

पापग्रह यदि द्वितीय भाव में स्थित हों तथा क्रूर नवमांश से युत हो तथा द्वितीय भाव शुभ ग्रह रहित हो या शुभ ग्रह से न देखा जाये तो वाक्चालन योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/152)

जातक में हकलाने जैसा वाणी दोष होगा ।

426 विषप्रयोग योग

द्वितीय भाव में पापग्रह हो अथवा पापग्रह से दृष्ट हो और द्वितीयेश क्रूर नवमांश में पापग्रह द्वारा दृष्ट हो तो विषप्रयोग योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 3/143)

जातक को दूसरों से विषपान सम्बन्धी संकट उत्पन्न हो सकता है । (दूसरों द्वारा उसे जहर दिया जा सकता है)

427 भ्रातृवृद्धि योग

तृतीयेश या मंगल या तृतीय स्थान शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या युत हो और शक्तिशाली हो तो यह योग होता है ।(सर्वार्थ चिन्तामणि 4/16)

जातक भाईयों या आश्रितों द्वारा अच्छा भाग्य बनेगा जो कि बेहद सम्पन्न होंगे ।

428 सहोदरांश योग

मंगल और तृतीयेश यदि अष्टम में हो और पापग्रहों से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/2)

जातक के छोटा भाई बहिन नहीं होगा । या तो कम छोटे भाई बहिन होंगे या बिल्कुल नहीं होंगे ।

429 सहोदरांश योग

मंगल और तृतीयेश यदि तृतीय स्थान पर हों तथा पापग्रह से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/2)

जातक के छोटे भाई बहिन नहीं होते । या तो बहुत कम होते हैं या बिल्कुल नहीं होते ।

430 सहोदरांश योग

मंगल और तृतीयेश यदि चतुर्थ या सप्तम भाव में हों और पापग्रहों से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/2)

जातक के छोटे भाई बहिन या तो कम होते हैं या बिल्कुल नहीं होते । (यह मूल से शायद सही अनुवादित नहीं है)

431 सहोदरांश योग

मंगल और तृतीयेश यदि दुःस्थान पर (षष्टम, अष्टम और द्वादश भाव में) हों, पापग्रह से युत हों या दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/11)

जातक के छोटे भाई बहिन या तो कुछ या बिल्कुल नहीं होते ।

432 सहोदरांश योग

नवमांश में बैठा तृतीयेश यदि दुर्बल होकर अष्टम स्थान पर बैठा हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/6)

जातक के छोटे भाई बहिन नहीं होते । या तो बहुत कम भाई बहिन छोटे होते हैं या बिल्कुल नहीं होते ।

433 इकमगिनी योग

बुध तृतीय भाव में हो, तृतीयेश के साथ चन्द्र हो और मंगल दुर्बल हो, शनि के साथ हो तो यह योग होता है । (मूल स्त्रोत - अज्ञात)

जातक के केवल एक बहिन होगी ।

434 द्वादश सहोदर योग

यदि तृतीयेश केन्द्र में हो और उच्च का मंगल बृहस्पति के साथ तृतीयेश से त्रिकोण में हो तो द्वादश सहोदर योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक बारह भाई बहिनों में तीसरे नम्बर का होगा ।

435 सप्तसंख्या सहोदर योग

द्वादशेश की मंगल से युति हो, चन्द्र बृहस्पति के साथ तृतीय भाव में हो शुक्र की दृष्टि न हां तो सप्तसंख्या सहोदर योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के सात भाई होंगे ।

436 पराक्रम योग

तृतीयेश शुभ नवमांश की राशि से युत हो या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और मंगल शुभ राशि में हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जाातक पराक्रमी होता है।

437 युद्धात्पूर्वाद्रिधाचित्त योग

तृतीयेश उच्च का होकर अष्टम में पापग्रह से युत चर राशि या नवमांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/34)

युद्ध से पूर्व जातक में साहस होगा, परन्तु युद्ध आरम्भ होते ही वह अपना आत्म विश्वास व संतुलन खो देगा ।

438 युद्धात्पश्चाद्‌दृधा योग

तृतीयेश यदि स्थिर राशि में हो और नवमांश क्रूर षष्टिमांश राशि में हो और लग्नेश निर्बल हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक अपना साहस युद्ध के उपरान्त पाता है और जबकि आरम्भ में वह स्वयं को कमजोर और संकटग्रस्त समझता है ।

439 सत्कथादिश्रवण योग

तृतीय भाव में शुभ राशि हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और तृतीयेश शुभ नवमांश में हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक सर्दव उच्च कोटि के साहित्य में रुचि लेने वाला और धार्मिक एवं दार्शनिक भाषण देने वाला होता है ।

440 उत्तम गृहयोग

चतुर्थेश केन्द्र अथवा त्रिकोण में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो उत्तम गृहयोग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि)

जातक का स्वयं का अच्छा घर होता है ।

441 विचित्र सौध प्रकार योग

चतुर्थेश और दशमेश एक साथ शनि और मंगल से युत हो तो विचित्र सौध प्रकार योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/62)

जातक अनेक प्रासादों, हवेलियों का स्वामी होता है ।

442 अयत्न गृह प्राप्त योग

लग्नेश और सप्तमेश लग्न में हों या चतुर्थ भाव में स्थित हों शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/55)

जातक बहुत कम प्रयत्न से यथेष्ट जायदाद प्राप्त करता है ।

443 अयत्न गृह प्राप्त योग

नवमेश केन्द्र में हो जबकि चतुर्थेश स्वक्षेत्री होकर या उच्च का मूल त्रिकोण में हो तो अयत्न गृह प्राप्त योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/58)

जातक बहुत कम प्रयत्न से यथेष्ट जायदाद प्राप्त करता है ।

444 गृहांश योग

चतुर्थेश यदि द्वादश भाव में हो तथा पापग्रहों से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/63)

जातक गृह सम्पत्ति में अत्यधिक नुकसान भुगतेगा या सहेगा ।

445 गृहांश योग

नवमांश राशि का स्वामी तथा चतुर्थेश द्वादश भाव में स्थित हों तो गृहांश योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/63)

जातक को गृह सम्पत्ति से अत्यधिक नुकसान होगा ।

446 बंधु पूज्य योग

चतुर्थेश शुभ ग्रह हो, शुभ ग्रह से दृष्ट हों तथा बुध लग्न में हो तो बंधु पूज्य योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/64)

जातक परिवार एवं मित्रजनों से आदर प्राप्त करता है ।

447 बंधु पूज्य योग

चतुर्थ भाव या चतुर्थेश (बृहस्पति) गुरु से युत हों या गुरु से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/65)

जातक परिवार एवं मित्रजनों से आदर प्राप्त करता है ।

448 बंधुमीष्ट्यक्ता योग

यदि चतुर्थेश पापग्रहों से जुड़ा हो या नीच षष्टिमांश में हो या शत्रु राशि में या दुर्बल राशि में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/68)

जातक अपने निकटवर्त्ती परिजनों के कारण संकटग्रस्त होगा तथा गलतफहमी का शिकार हो उनके द्वारा त्याग दिया जा,गा ।

449 मातृदीर्घायुर योग

चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हों जबकि चतुर्थेश उच्च का हो तथा चन्द्रमा बली हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/130)

जातक की माता दीर्घ जीवन प्राप्त करती है ।

450 मातृदीर्घायुर योग

नवमांश का स्वामी राशि का स्वामी चतुर्थेश के साथ बली होकर लग्न या चन्द्र चन्द्र से केन्द्र में हो तो मातृदीर्घायुर योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/132)

जातक की माता दीर्घजीवी होगी ।

451 मातृशां योग

चन्द्रमा यदि पापग्रहों के बीच पीडित (फँसे) जा, या पापग्रहों से युत हो या दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/133)

जातक की माँ का निधन शीघ्र हो जाता है ।

452 मातृगामी योग

चन्द्र और शुक्र केन्द्र में हो, पापग्रह से युत या दृष्टि हों जबकि चतुर्थ भाव में पापग्रह स्थित हों तो मातृगामी योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/115)

जातक स्वयं की माँ से परगमन कर जा,गा ।

453 सहोदरिसंगम योग

सप्तमेश और शुक्र चतुर्थ स्थान पर साथ हों पापग्रहों से दृष्ट या युत हों या क्रूर षष्टिमांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/117॰118)

जातक अपने भाई बहिनों के साथ कौटुम्बिक व्याभिचार करता है ।

454 दृक् सन्स्थावसिता योग

स्त्री की कुण्डली में शनि और शुक्र एक दूसरे से दृष्ट हों लग्न वृष या तुला हों नवमांश लग्न कुंभ हों तो यह योग होता है । (बृहत् जातक 24/7)

स्त्री जातक अपनी कामवासना की संतुष्टि ऐसी स्त्री से करेगी जो पुरुष परिधान पहिने ।

455 दृक् सन्स्थावसिता योग

स्त्री की कुण्डली मे शनि और शुक्र एक दूसरे के नवमांश में हो और राशि में आपस में एक दूसरे को देखते हों तो यह योग होता है । (बृहत् जातक 24/7)

स्त्री जातक अपनी कामवासना की संतुष्टि ऐसी स्त्री से करेगी जो पुरुष परिधान पहिने ।

456 दृक् सन्स्थावसिता योग

स्त्री की कुण्डली में वृष या तुला लग्न के साथ कुंभ नवमांश लग्न हों तो यह योग होता है । (बृहत् जातक 24/7)

स्त्री जातक अपनी कामवासना की संतुष्टि ऐसी स्त्री से करेगी जो पुरुष परिधान पहिने ।

457 कपट योग

चतुर्थेश पापग्रहों से दृष्ट हो या युत हो और चतुर्थ भाव में यदि पाप ग्रह हो तो कपट योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/139)

जातक पाखण्डी होगा अपनी भावनाओं को गुप्त रखेगा और कभी अपनी मानसिक स्थिति को प्रकट कर देगा ।

458 कपट योग

चतुर्थ भाव में शनि, मंगल और राहू हो और दशमेश पापग्रह हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो कपट योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/140)

जातक पाखण्डी होगा अपनी भावनाओं को गुप्त रखेगा और कभी अपनी मानसिकता स्थिति को प्रकट कर देगा ।

459 कपट योग

चतुर्थेश शनि, मांदी और राहू से युत हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो कपट योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/140)

जातक पाखण्डी होगा अपनी भावनाओं को गुप्त रखेगा और कभी अपनी मानसिक स्थिति को प्रकट कर देगा ।

460 निष्कपट योग

चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हो या स्वक्षेत्री या मित्र राशि में या उच्च का हो या चतुर्थ भाव में शुभ राशि हो तो निष्कपट योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/143)

जातक निष्कपट सरल हृदयी होता है और गुप्त मंत्रणाओं एवं पाखण्ड से सदा दूर रहता है।

461 निष्कपट योग

लग्नेश चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा युत हो या पर्वत या उत्तमांश हो तो निष्कपट योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/145)

जातक निष्कपट सरल हृदयी होता है और दुराव छिपाव एवं पाखण्ड से सदा दूर रहता है ।

462 मातृ शत्रु योग

मिथुन लग्न में बुध यदि पापग्रह के साथ हो अथवा दृष्ट हो तो मातृ शत्रु योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक अपनी माँ से घृणा करेगा अथवा माँ को नापसन्द करेगा ।

463 मातृ स्नेह योग

लग्नेश और चतुर्थेश यदि एक हो या लग्नेश और चतुर्थेश लौकिक हो या नैसर्गिक मित्र हो या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो मातृ स्नेह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/148)

जातक और उसका अपनी माता के साथ सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेगा ।

464 वाहन योग

लग्नेश चतुर्थ भाव या नवम् भाव हो या एकादश भाव में हो तो वाहन योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/162)

जातक का स्वयं का वाहन होगा तथा अन्य भौतिक सुविधाँ, प्राप्त होगी ।

465 वाहन योग

चतुर्थेश उच्च का हो तथा उस उच्च राशि का स्वामी केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तो वाहन योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/152)

जातक का स्वयं का वाहन होगा तथा अन्य भौतिक सुविधाँ, प्राप्त होगी ।

466 अनापाथ्य योग

बृहस्पति, लग्नेश, पंचमेश तथा सप्तमेश यदि दुर्बल हो तो अनापाथ्य योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/14)

जातक निःसन्तान होगा ।

467 सर्पशाप योग

पंचम भाव में राहू पंचम भाव का स्वामी हो या मंगल पंचम भाव का स्वामी हो और इस भाव में राहू हो तो सर्पशाप योग होता है । (मूल सन्दर्भ॰ अज्ञात)

जातक को अपने बच्चों की अकाल मृत्यु भुगतनी पड़ती है । (सर्प द्वारा अभिशप्त होने के कारण)

468 सर्पशाप योग

पंचमेश राहू से युत हो, जबकि शनि पंचम भाव में चन्द्रमा से दृष्ट या युत हो तो सर्पशाप योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के बच्चों की अकाल मृत्यु हो जाती है ।(सर्प द्वारा अभिशप्त होने के कारण)

469 सर्पशाप योग

बृहस्पति या पुत्रकारक, मंगल के साथ में युत हो, साथ ही राहू लग्न में स्थित हो और पंचमेश दुःस्थान (षष्टम्, अष्टम् अथवा द्वादश) पर हो, तो सर्पशाप योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को अपने बच्चों की अकाल मृत्यु देखनी पड़ती है । (सर्प द्वारा अभिशप्त) होने के कारण ।

470 सर्पशाप योग

पंचमेश यदि मंगल हो, जिसमें राहू स्थित हो तथा वह बुध से दृष्ट या युत हो तो सर्पशाप योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक अपने बच्चों की अकाल मृत्यु भोगता है । (सर्प द्वारा अभिशप्त होने के कारण)

471 पितृशाप सुताक्षय योग

दुर्बल सूर्य यदि पंचम भाव में हो, या सूर्य पंचम भाव में मकर या कुंभ की संधि में हो या पापग्रहों के बीच पड़ा हुआ हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ प्अज्ञात)

जातक (पिता के श्राप या क्रोध के कारण) को अपने बच्चों की अकाल मृत्यु का सामना करना पडता है ।

472 मातृशाप सुताक्षय योग

अष्टमेश तथा पंचमेश अपने स्थानों का आदान प्रदान कर लें तथा चन्द्रमा और चतुर्थेश की युति यदि षष्टम् भाव में हो, तो मातृशाप सुताक्षय योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के बच्चों की अकाल मृत्यु, उसकी माँ द्वारा दिये गये अभिशाप के कारण हो जाती है ।

473 भ्रातृशाप सुताक्षय योग

लग्नेश तथा पंचमेश की युति अष्टमेश में हो तथा तृतीयेश यदि पंचम भाव में राहू और मंगल के साथ हो तो भ्रातृशाप सुताक्षय योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के बच्चों की अकाल मृत्यु अपने भाई या बहन द्वारा दिये गये अभिशाप के कारण हो जाती है ।

474 प्रेतशाप योग

सूर्य और शनि की युति पंचम भाव में हो, चन्द्रमा सप्तम् भाव में दुर्बल हो तथा राहू लग्न और बृहस्पति द्वादश भाव में स्थित हों तो प्रेतशाप योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के बच्चों की अकाल मृत्यु हो जाती है । (प्रेत द्वारा दिये गये अभिशाप के कारण)

475 बहुपुत्र योग

राहू पंचम भाव में हो तथा शनि के नवमांश में न हो तो बहुपुत्र योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को बहुत सारे पुत्र प्राप्त होते हैं ।

476 औरसपुत्र योग

पंचम भाव में शुभ ग्रह हों या इस भाव में शुभ राशि स्थित हो या यह भाव शुभग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो औरसपुत्र योग होता है । (सारावली 34/25)

जातक को स्वयं भी वैद्य पत्नी से वैद्य संतान होगी ।

477 औरसपुत्र योग

बृहस्पति, लग्न, सूर्य अथवा चन्द्रमा को देखें तो औरसपुत्र योग होता है । (सारावली 35/26)

जातक को वैद्य पत्नी द्वारा स्वयं की वैद्य संतान होगी ।

478 क्षेत्रजपुत्र योग

बुध यदि पंचम् भाव का स्वामी हो तथा यहीं स्थित हो जो कि शनि से दृष्ट हो लेकिन बृहस्पति, मंगल या सूर्य की दृष्टि रहित हो तो क्षेत्रजापुत्र योग होता है । (सारावली 35/28)

पति की सलाह एवं जानकारी से पत्नी उस शिशु को जन्म देगी जो पति के शुक्राणु का नहीं हो । (आधुनिक सन्दर्भ में परखनली शिशु को जन्म देने वाली माँ इसका प्रतिनिधित्व करती है)

479 क्षेत्रजपुत्र योग

पंचमेश बुध हो जो कि शनि द्वारा दृष्ट हो तो क्षेत्रजापुत्र योग होता है । (सारावली 35/28) (यह ग्रह स्थिति अन्य से कम अंश की होती है)

पति की जानकारी एवं सलाह से पत्नी उस शिशु को जन्म देगी जो पति के शुक्राणु से नहीं हो । (आधुनिक सन्दर्भ में परखनली शिशु इसका उदाहरण है)

480 क्षेत्रजपुत्र योग

पंचमेश यदि बुध हो जो कि शनि द्वारा दृष्ट हो किन्तु बृहस्पति, मंगल अथवा सूर्य की दृष्टि रहित हो तो यह योग होता है । (सारावली 35/28) (यह ग्रह स्थिति अन्य क्षेत्रजापुत्र योगों की अपेक्षा कम अंश की है)

पति की जानकारी एवं सलाह से पत्नी ऐसे शिशु को जन्म देगी जो उसके पति के शुक्राणु से न हो । (आधुनिक सन्दर्भ में परखनली शिशु)

481 दत्तकपुत्र योग

बुध यदि पंचमेश हो और वहीं स्थित हो और चन्द्रमा द्वारा दृष्ट हो तो दत्तकपुत्र योग होता है । (सारावली 35/29)

जातक द्वारा संतान गोद ली जाती है ।

482 दत्तकपुत्र योग

बुध यदि पंचमेश होकर स्वक्षेत्री हो और चन्द्रमा द्वारा दृष्ट हो तो दत्तकपुत्र योग होता है । (सारावली 35/29)

जातक संतान गोद लेता है ।

483 दत्तकपुत्र योग

मंगल तथा शनि पंचम् भाव में स्थित हों तथा लग्नेश बुध की राशि में स्थित होकर बुध द्वारा दृष्ट या युत हो तो दत्तकपुत्र योग होता है । (सारावली 35/29) (यह ग्रह स्थिति अन्य दत्तकपुत्र योग से कम अंश की होती है)

जातक खरा संतान गोद ली जाती है ।

484 दत्तकपुत्र योग

सप्तमेश यदि एकादश भाव में हो जबकि पंचमेश किसी शुभग्रह तथा मंगल से युत हो तथा शनि पंचम् भाव में स्थित हो तो दत्तकपुत्र योग होता है । (सारावली 35/29) (यह ग्रह स्थिति अन्य योग से कम अंश की है)

जातक द्वारा पुत्र/पुत्री गोद ली जाती है ।

485 दत्तकपुत्र योग

पंचम् भाव में मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो तथा इस भाव में शनि या मंडी स्थित हो या फिर उनकी दृष्टि हो तो दत्तकपुत्र योग होता है । (फलदीपिका 12/8)

जातक संतान गोद लेता है ।

486 दत्तकपुत्र योग

पंचमेश दुर्बल हो तथा लग्नेश और सप्तमेश से किसी भी प्रकार से सम्बन्धित न हो तो दत्तकपुत्र योग होता है । (फलदीपिका 12/8)

जातक द्वारा संतान गोद ली जाती है ।

487 दत्तकपुत्र योग

दशम् भाव तथा दशमेश के साथ शनि हो या शनि की दृष्टि हो तो दत्तकपुत्र होने की स्थिति बनती है । (उत्तरकाल मित्र 5/37)

जातक के द्वारा संतान गोद लेने की संभावना रहती है ।

488 कृत्रिमपुत्र योग

पंचम भाव में शनि हो अन्य ग्रहों से दृष्ट न हो और पंचम भाव सप्तमांश में पड़ता हो जो मंगल के आधिपत्य में हो तो कृत्रिमपुत्र योग होता है । (सारावली 35/30)

जातक अपने अभिवावकों की सहमति के बिना किशोर को गोद लेगा ।

489 कृत्रिमपुत्र योग

सप्तमांश में पंचम भाव में मंगल शनि के साथ हो अन्य ग्रहों से दृष्ट न हो तो कृत्रिमपुत्र योग होता है । (सारावली 35/30)

जातक अपने माता पिता की सहमति के बिना किशोर को गोद लेगा ।

490 मन्दावलोकिता योग

चन्द्र पंचम भाव में हो शनि के प्रभाव में हो जबकि पंचम भाव मंगल के नवमांश में हो तो मन्दावलोकिता योग होता है । (सारावली 35/31)

जातक को मन्द बुद्धि या मूर्ख संतान की प्राप्ति होती है ।

491 मन्दावलोकिता योग

चन्द्र पंचम स्थान पर हो शनि के प्रभाव में तथा मंगल के नवमांश मे चन्द्र हो तो यह योग होता है । (सारावली 35/31)

जातक को मन्द बुद्धि या मूर्ख संतान की प्राप्ति होती है ।

492 मन्दावलोकिता योग

पंचम स्थान पर मंगल के अंश में चन्द्र हो, शनि के प्रभाव में हो तथा उस पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो यह योग होता है । (सारावली 35/31)

जातक को मूर्ख या मन्द बुद्धि संतान की प्राप्ति होती है ।

493 गुढ़ोत्पन्न योग

चन्द्र पंचम भाव में ही एकमात्र शनि से दृष्ट हो और पंचम भाव मंगल के नवमांश में हो तो यह योग होता है । (सारावली 35/31)

पत्नी से संतान गुप्त रुप से जन्म ले सकती है पति की जानकारी के बिना उस संतान का पिता पति की ही तरह की कद ऊँचाई या महत्ता वाला हो सकता है ।

494 गुढ़ोत्पन्न योग

पंचम भाव में चन्द एकमात्र शनि से दृष्ट हो जबकि चन्द्रमा मंगल के नवमांश में हो । (सारावली 35/31)

पत्नी से संतान गुप्त रुप से जन्म ले सकती है । पति की जानकारी के बिना उस संतान का पिता पति की ही तरह कद, ऊँचाई या महत्ता वाला हो सकता है ।

495 गुढ़ोत्पन्न योग

पंचम भाव में मंगल के अंश में चन्द्र हो शनि से दृष्ट हो अन्य किसी ग्रह से देखा न जाता हो तो यह योग होता है । (सारावली 35/31)

पत्नी से संतान गुप्त रुप से हो सकती है पति की जानकारी के बिना उस संतान का पिता पति की ही तरह ऊँचाई, कद या महत्ता वाला हो सकता है ।

496 पुनर्भव योग

(पुनर्भव योग) पंचम भाव में चन्द्र और शनि हों, शनि के वर्ग में हो, शुक्र और सूर्य से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सारावली 34/34)

जातक ऐसी संतान गोद लेगा जो विवाह पूर्ण सम्बन्ध या पत्नी के पूर्व सम्बन्ध से हो । (शास्त्रों के अनुसार - पुनर्विवाह के समय विधवा गर्भवती हो)

497 कानिनपुत्र योग

सप्तम भाव में चन्द्र, सूर्य के साथ हो या सूर्य से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सारावली 34/35) पुरुषः

जातक अविवाहित कन्या द्वारा संतान प्राप्त करेगा । (कुमारी)

498 कानिनपुत्र योग

पंचम भाव में चन्द्र, सूर्य के साथ हो या सूर्य से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सारावली 34/35) पुरुषः

जातक अविवाहित कन्या द्वारा संतान प्राप्त करेगा । (कुमारी)

499 कानिनपुत्र योग

पंचम भाव में कर्क राशि हो सूर्य स्थित हो या सूर्य से पंचम भाव दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सारावली 34/35) पुरुष:

जातक अविवाहित कन्या द्वारा संतान प्राप्त करेगा । (कुमारी)

500 कानिनपुत्र योग

चन्द्र सप्तम स्थान सूर्य के साथ हो या सूर्य से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सारावली 34/35)

हालांकि शास्त्रों के अनुसार यह योग केवल पुरुष जातक के लिए है कि अविवाहित कन्या से संतान प्राप्त करेगा, परन्तु आधुनिक सन्दर्भ में यह दोनों ही लिंग यानि स्त्री व पुरुष पर लागू हो सकता है । यदि स्त्री जातक के यह योग हो तो वह कम उम्र के पुरुष अविवाहित से संतान प्राप्त करेगी । (कुमारी)

501 कानिनपुत्र योग

चन्द्र के साथ सूर्य पंचम स्थान पर हो या पंचम स्थान पर चन्द्र हो और सूर्य से दृष्ट हो तो कानिनपुत्र योग होता है । (सारावली 34/35)

यद्यपि शास्त्रों के अनुसार यह योग पुरुष जातक अविवाहित कुमारी (कन्या) से संतान प्राप्त करेगा । ऐसा है परन्तु आधुनिक सन्दर्भ में यह योग स्त्री व पुरुष जातक दोनों के लिए हो सकता है । यदि स्त्री जातक के यह योग हो तो यह कम उम्र के अविवाहित पुरुष से संतान प्राप्त करेगी । (कुमारी)

502 कानिनपुत्र योग

पंचम भाव में कर्क राशि हो सूर्य स्थित हो अथवा सूर्य से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सारावली 34/35)

यद्यपि शास्त्रों के अनुसार यह योग पुरुष जातक अविवाहित कन्या से पुत्र प्राप्त करेगा। ऐसा है परन्तु आधुनिक सन्दर्भ में यह योग पुरुष व स्त्री दोनों के लिए हो सकता है। यदि स्त्री जातक के यह योग हो तो वह कम उम्र के अविवाहित पुरुष से संतान प्राप्त करेगी ।

503 सहोदपुत्र योग

सूर्य एवं चन्द्र दोनों पंचम भाव में हो केवल शुक्र से दृष्ट हो और पंचम भावसूर्य या चन्द्र के अंशों में विभक्त हो तो सहोदपुत्र योग होता है । (सारावली 34/36)

शास्त्रों के अनुसार इस योग का प्रभाव पुरुष जातक पर होता है । वह ऐसी स्त्री से संतान प्राप्त करता है जो विवाह के समय गर्भवती हो । शास्त्रों में यह स्पष्ट नहीं है कि यह बालक जातक का होता है या नहीं । यह योग स्त्री जातक पर भी लागू हो सकता है ।

504 दासी प्रभाव योग

पंचम भाव शुक्र के नवमांश मे हो और शुक्र से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सारावली 34/46)

शास्त्रों के अनुसार अवैध जन्म या बालक का जन्म (स्त्री) दासी या नौकरानी द्वारा होता है । यद्यपि आधुनिक सन्दर्भ में इसका यह अर्थ हो सकता है कि जातक की रखैल से संतान हो अथवा कष्टकर स्थिति में विवाहेतर सम्बन्ध से संतान हो ।

505 दासी प्रभाव योग

पंचम भाव चन्द्र के नवमांश में हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सारावली 35/38)

शास्त्रों के अनुसार अवैध जन्म या बालक का जन्म (स्त्री) दासी या नौकरानी द्वारा होता है । आधुनिक सन्दर्भ में इसका अर्थ हो सकता है कि जातक की रखैल से संतान हो या कष्टकर स्थिति में विवाहेतर सन्बन्ध से संतान हो ।

506 सुता योग

बृहस्पति उच्च का होकर पंचम भाव में स्थित हो तो सुता योग होता है । (फलदीपिका 12/5)

जातक को अनेक पुत्री रत्न का वरदान मिलेगा ।

507 पुत्र योग

पंचम भाव में कर्क राशि में शनि हो तो पुत्र योग होता है । (फलदीपिका 12/5)

जातक को अनेक पुत्रों का वरदान प्राप्त होगा ।

508 तनयभक्कला योग

सूर्य पंचम भाव में हो निसंतान राशि में हो (वृश्चिक, सिंह, कन्या) और शनि और मंगल क्रमशः अष्टम भाव में तथा लग्न में हो तो यह योग होता है ।(फलदीपिका 12/4)

जातक को जीवन काल में कुछ प्रयत्नों द्वारा देर से संतान प्राप्त होगी ।

509 तनयभ्ककला योग

पंचम भाव में निसंतान राशि हो (वृश्चिक, सिंह, कन्या) शनि, बृहस्पति और मंगल क्रमशः लग्न, अष्टम और द्वादश भाव को देखें तो यह योग होता है । (फलदीपिका 12/4)

जातक को जीवन काल में कुछ प्रयत्नों द्वारा देरी से संतान प्राप्ति होगी ।

510 अपुत्र योग

पंचम स्थान पर पाप राशि हो और पाप ग्रह स्थित हों और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो अपुत्र योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/18)

जातक के संतान नहीं होगी ।

511 अपुत्र योग

पंचमेश दुःस्थान (6, 8, 12 वें भाव में) में स्थित हो (तथा पंचम भाव बली न हो और पूर्ण चन्द्र या शुक्ल पक्ष से रहित हो) तो अपुत्र योग होता है । (फलदीपिका 12/2)

जातक निसंतान होगा ।

512 एकपुत्र योग

पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के केवल एक पुत्र होगा । (या कन्या)

513 सत्पुत्र योग

पंचमेश बृहस्पति हो और सूर्य अनुकूल भाव में हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के योग्य संतान होगी । (पुत्र या पुत्री)

514 कालानिर्देसत् पुत्र योग

बृहस्पति पंचम स्थान पर हो और पंचमेश शुक्र के साथ हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

पुत्र (या पुत्री) बत्तीसवें, तैतीसवें या चालीसवें वर्ष में प्राप्त होगा ।

515 कालानिर्देसत् पुत्र योग

बृहस्पति नवम् स्थान पर हो शुक्र पंचम स्थान पर हो (नवाँ घर बृहस्पति से) लग्नेश से युत हो तो यह योग होता है ।

जातक को 32 वें, 33 वें या 40 वें वर्ष में संतान प्राप्ति होगी ।

516 कालानिर्देसत् पुत्र योग

राहू पंचम भाव में हो, पंचम भाव मे पाप ग्रह हो और बृहस्पति दुर्बल हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक की उम्र के बत्तीसवें और चालीसवें वर्ष में संतान हानि हो सकती है ।

517 कालानिर्देसत् पुत्रांशा योग

बृहस्पति और लग्न से पापग्रह पंचम भाव में हों तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को उम्र के बत्तीसवें और चालीसवें वर्ष में संतान हानि होगी ।

518 बुद्धमातुर्य योग

पंचमेश शुभ ग्रह हो, शुभ ग्रह से दृष्ट हो या शुभ राशि में स्थित हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/32)

जातक अत्यन्त बुद्धिमान एवं सत्चरित्र होता है ।

519 तीव्रबुद्धि योग

नवमांश राशि को स्वामी जिसमें पंचम भाव का शुभ स्वामी बैठा हो जो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/33)

जातक अविश्वसनीय बुद्धिमान होता है ।

520 बुद्ध जड़ योग

लग्नेश पापग्रह से युत या दृष्ट हो शनि पंचम भाव और लग्नेश से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/46)

जातक जड़ बुद्धि होता है या ज्ञान की कमी होती है ।

521 त्रिकालग्न योग

बृहस्पति मृदुमांश में हो अपनी नवमांश राशि में हो या गोपुरांश हो जबकि शुभ ग्रह से दुष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/53)

जातक भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों कालों का ज्ञाता होता है ।

522 पुत्र सुख योग

बृहस्पति और शुक्र पंचम भाव में हो या बुध पंचम भाव में हो या पंचम भाव में शुभ राशि हो तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को संतान से सुख की प्राप्ति होगी ।

523 जारा योग

दशमेश यदि दशम् स्थान पर द्वितीयेश और सप्तमेश के साथ हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के विपरीत लिंग के कई लोगों के साथ विवाहेतर सम्बन्ध होते हैं ।

524 जारज पुत्र योग

पंचमेश और सप्तमेश बली हों, षष्टमेश से युत हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक अप्रजायी होगा लेकिन उसकी पत्नी के अन्य पुरुष से संतान होगी ।

525 जपध्यान समाधि योग

दशमेश यदि नवम् भाव में हो बली हो या शुभ ग्रहों के साथ हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/40)

जातक जप ध्यान एवं समाधि में रत रहेगा ।

526 जपध्यान समाधि योग

नवमांश राशि का स्वामी बली दशमेश के साथ हो तथा नवमेश एवं दशमेश के बीच आपसी सम्बन्ध हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/41)

जातक जप, ध्यान और समाधि में रत रहेगा ।

527 समाधि योग

दशमेश या नवमेश देवलोकमांश या पर्वतामांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/42)

जातक सर्वोच्च शक्ति से अपना तादात्म्य स्थापित कर लेगा ।

528 समाधि योग

नवमेश या दशमेश देवलोकमांश या पर्वतामांश में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/42)

जातक सर्वोच्च शक्ति से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लेगा ।

529 बहुस्त्री योग

लग्नेश और सप्तमेश साथ हो या आपस में एक दूसरे से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के कई पति / पत्नी होगें ।

530 सत्कलत्र योग

सप्तमेश या शुक्र, बृहस्पति या बुध से युत हों या दृष्ट हों तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक का जीवन साथी (पत्नी) कुलीन और नैतिक चरित्र वाला होता है ।

531 भाग चुम्बन योग

सप्तमेश चतुर्थ भाव में शुक्र से युत हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक हस्तमैथुन में अत्यधिक आसक्त रहेगा ।

532 भाग चुम्बन योग

लग्नेश राशि अथवा नवमांश में दुर्बल हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक हस्तमैथुन में अत्यधिक आसक्त रहेगा ।

533 भाग्य योग

लग्न, तृतीय भाव या पंचम भाव में बली और शुभ ग्रह हो और नवम् भाव को देखे तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक अत्यधिक भाग्य सम्पदा और आनन्द का उपभोग करता है ।

534 जननात्पूर्वम् पितृ मरण योग

सूर्य दुःस्थान पर (षष्टम, अष्टम और द्वादश भाव) हो जबकि द्वादश भाव का स्वामी लग्न में हो तथा षष्टमेश पंचम भाव में हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक जब संसार में आता है (शायद शल्य क्रिया द्वारा) तब उसकी माँ का या पिता का निधन हो चुका होता है । (जन्म के बाद)

535 जननात्पूर्वम् मातृ मरण योग

चन्द्र यदि दुःस्थान (षष्टम, अष्टम या द्वादश भव) में हो जबकि अष्टमेश नवम् स्थान पर हो और द्वादशेश लग्न में हो तथा षष्टमेश पंचम स्थान पर स्थित हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक के संसार में आते ही उसकी माँ का निधन होगा । (जन्म के बाद)

536 सत्कीर्त्ति योग

दशमेश शुभ ग्रह हो उच्च राशि में, स्वक्षेत्री या मित्र राशि में हो तथा शुभ षष्टिमांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 8/22)

जातक को जीवन में प्रसिद्धि मिलती है ।

537 सत्कीर्त्ति योग

दशमेश शुभ ग्रह हो देवलोकमांश में हो और सूर्य के नवमांश में हो तथा पूर्ण बली हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 8/23)

जातक को जीवन काल में प्रसिद्धि मिलती है ।

538 धातृत्व योग

नवमेश उच्च राशि का हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो नवम् भाव में शुभ ग्रह हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 7/2/43)

जातक अपनी अति उदारता के कारण पहचाना जायेगा ।

539 अपकीर्त्ति योग

दशम् भाव में सूर्य और शनि हों जो कि पाप क्षेत्र हों या पापग्रहों से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक कुख्यात होगा या खराब छवि वाला होगा ।

540 अरिष्ट योग

लग्नेश यदि षष्टमेश, अष्टमेश या द्वादशेश के साथ हो या एक दूसरे से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (यदि द्वितीयेश और सप्तमेश का दखल हो तो इसका प्रभाव और अधिक गम्भीर हो जाता है) (डॉ- के- एस- चरक)

जातक का स्वास्थ्य खराब रहेगा । (ग्रह जो यह योग बनाते हैं वे इस सम्बन्ध में विशिष्ट जानकारी दे सकते हैं)

541 अरिष्ट योग

यदि षष्टमेश अष्टमेश या द्वादशेश के साथ हो या आपस में एक दूसरे से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (यदि द्वितीयेश और सप्तमेश का दखल हो तो इसका प्रभाव और अधिक गम्भीर हो जाता है) (डॉ- के- एस- चरक)

जातक का स्वास्थ्य खराब रहेगा । (ग्रह जो यह योग बनाते है उनसे इस सम्बन्ध में विशिष्ट जानकारी मिल सकती है)

542 अरिष्ट योग

अष्टमेश द्वादशेश से युत हो या आपस में एक दूसरे से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (द्वितीयेश और सप्तमेश का दखल हो तो प्रभाव और अधिक गम्भीर हो जाता है) (डॉ- के- एस- चरक)

जातक का स्वास्थ्य खराब रहेगा । (वे ग्रह जो यह योग बनाते हैं उनसे इस सम्बन्ध में विशिष्ट जानकारी मिल सकती है)

543 अरिष्ट गलकर्ण योग

मांदी और राहू तृतीय भाव में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 4/47)

जातक कर्ण (कान के रोग) रोगों से ग्रस्त रहेगा ।

544 अरिष्ट व्रण योग

षष्ट्मेश यदि पापग्रह हो और लग्न में स्थित हो, अष्टम् भाव में स्थित हो या दशम् भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/2/2)

जातक अल्सर, ट्यूमर या कैन्सर से ग्रस्त रह सकता है ।

545 अरिष्ट शिष्नाव्याधि योग

लग्न में बुध हो, षष्टमेश से युत हो या अष्टमेश से युत हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/2/11)

जातक असुरक्षित असाध्य रति रोगों से ग्रस्त रहेगा ।

546 अरिष्ट शिष्नाव्याधि योग

लग्न में बुध हो शुक्र से युत हो या किसी एक दुःस्थान का स्वामी हो या किसी दुःस्थान के स्वामी (6, 8, 12 वें भाव) से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि)

जातक असुरक्षित असाध्य रति रोगों से ग्रस्त रहेगा ।

547 अरिष्ट कलात्रशंदा योग

सप्तमेश, षष्टम् भाव में शुक्र से युत हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/2/12)

जातक का जीवन साथी अप्रजायी/बंध्या होगा ।

548 अरिष्ट कुष्ठ रोग योग

लग्नेश यदि मंगल से युत हो, बुध चतुर्थ भाव में या द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को कुष्ठ रोग होगा ।

549 अरिष्ट कुष्ठ रोग योग

बृहस्पति षष्टम् स्थान पर हो शनि और चन्द्र से युत हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को कुष्ठ रोग होगा ।

550 अरिष्ट क्षय रोग योग

लग्नेश अष्टम् में हो जबकि मांदी केन्द्र में हो और राहू षष्टम् स्थान पर हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को क्षय रोग हो सकता है ।

551 अरिष्ट बन्धन योग

लग्नेश षष्टमेश के साथ और शनि, राहू या केतु से युत केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/2/13)

जातक को कैद या बन्धक बनने का खतरा उत्पन्न हो सकता है ।

552 अरिष्ट करच्छेद योग

शनि और बृहस्पति यदि नवम् या पंचम भाव में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/2/18)

जातक को हाथ कटने का खतरा हो सकता है ।

553 अरिष्ट सिरच्छेद योग

षष्ट्मेश यदि शुक्र से युत हो और शनि या सूर्य, राहू से युत, पाप षष्टिमांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि)

जातक की मृत्यु उसके सिर कटने से हो सकती है ।

554 अरिष्ट दुर्मरण योग

चन्द्र यदि लग्नेश से दृष्ट हो और दुःस्थान (छटें, आठवें, बारहवें भाव में) में हो, शनि, मांदी या राहू के साथ हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/2/22)

जातक की मृत्यु अस्वाभाविक कारणों से होगी ।

555 अरिष्ट युद्ध मरण योग

षष्टमेश मंगल या अष्टमेश मंगल तृतीयेश से युत हो और राहु शनि या मांदी पाप प्रभाग में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि 5/2/26)

जातक युद्ध स्थल पर मारा जाता है ।

556 अरिष्ट संघटक मरण योग

सूर्य, राहु और शनि बुरे प्रभाग में और अष्टमेश से दृष्ट हो तो अरिष्ट संघटक मरण योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक सामूहिक मौत में मारा जायेगा । (प्राकृतिक आपदा या सामूहिक दुर्घटना में मौत होगी ।)

557 अरिष्ट पिनासा रोग योग

षष्टम भाव में चन्द्र हो तो अष्टम भाव में शनि हो और द्वादश भाव में पापग्रह हो और लग्नेश अशुभ नवमांश में हो तो यह योग होता है । बुध का पीड़ित होना इस योग के बल में वृद्धि करता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 5/2/41)

जातक नासिका रोगों से असुरक्षित रहेगा । नासिका विवर में सीजिश, नासिका का बहना, रक्त संकुलता या नासिका के अन्य रोगों से प्रभावित होगा ।

558 अरिष्ट पित्त रोग योग

षष्टम भाव में सूर्य हो, पापग्रह से युत हो और दूसरे किसी पाप ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट पित्त रोग योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 5/2/32)

जातक को पित्त विकार या पित्त असंतुलन रहेगा । (आयुर्वेदिक निरुपण) यदि पित्त की अधिकता हो तो सामान्य से अधिक शरीर का ताप, अल्सर, यकृत या हृदय रोग, त्वचा या नेत्र विकार हो सकता है । यदि पित्त की कमी हो तो पाचन सम्बन्धी विकार और सर्दी से उत्पन्न विकार हो सकता है ।

559 अरिष्ट पित्त रोग योग

बली, सूर्य और मंगल चतुर्थ भाव में स्थित हो तो अरिष्ट पित्त रोग योग होता है । (संकेत निधि 4/28)

जातक पित्त की अधिकता या पित्त के असंतुलन से पीड़ित होगा । (आयुर्वेदिक निरुपण) विशेषतया अल्सर से पीड़ित होगा ।

560 अरिष्ट विकलांग पत्नी योग

शुक्र और सूर्य पंचम, सप्तम या नवम भाव में बुरे प्रभाग में हो या पाप ग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक का (जीवन साथी) पत्नी के अंग (अवयव) विकृत हो सकते है ।

561 अरिष्ट पुत्रकलत्रहीना योग

चन्द्र क्षय हो, पंचम स्थान में हो और पाप ग्रह लग्न में, सप्तम भाव में और द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को संतान और पारिवारिक जीवन से वंचित होने का संकट उत्पन्न होगा ।

562 अरिष्ट भार्यासह व्यभिचार्या योग

शुक्र, शनि और मंगल सप्तम स्थान में साथ-साथ हों तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक और उसका जीवन साथी दोनों ही व्यभिचारी होते हैं ।

563 अरिष्ट वामशद्धेद योग

चन्द्र दशम् भाव में हो तो शुक्र सप्तम भाव में हो और एक पाप ग्रह चतुर्थ भाव में हो तो यह योग होता है । (फल दीपिका - 12/6)

जातक अपनी वंशावली में अन्तिम हो सकता है/सकती है ।

564 अरिष्ट वामशद्धेद योग

पाप ग्रह लग्न, पंचम भाव अष्टम और द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (फल दीपिका - 12/6)

जातक अपनी वंशावली में अन्तिम हो सकता है/सकती है ।

565 अरिष्ट वामशद्धेद योग

बुध और शुक्र सप्तम भाव में हो बृहस्पति पंचम भाव हो औ पापग्रह चतुर्थ भाव में हो तो यह योग होता है । (फल दीपिका - 12/6)

जातक अपनी वंशावली में अन्तिम हो सकता है/सकती है ।

566 अरिष्ट वामशद्धेद योग

चंद्र पंचम भाव में और पापग्रह लग्न अष्टम और द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (फल दीपिका - 12/6)

जातक अपनी वंशावली में अन्तिम हो सकता है/सकती है ।

567 अरिष्ट गुह्यरोग योग

चन्द्र पाप ग्रह से युत कर्क या वृश्चिक राशि के नवमांश में हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक जननांग रोगों से असुरक्षित हो सकता है ।

568 अरिष्ट अंगहीना योग

चन्द्र दशम् भाव में हो, मंगल सप्तम भाव में हो और शनि स्थान पर हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि)

जातक अपना कोई अंग खो (अंग-भंग हो) सकता है ।

569 अरिष्ट श्वेतकुष्ठरोग योग

मंगल, द्वितीय भाव में हो, शनि द्वादश भाव में हो, चन्द्र लग्न में हो और सूर्य सप्तम भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि)

जातक कुष्ठ रोग से ग्रसित हो सकता है ।

570 अरिष्ट पिशाचग्रस्थ योग

राहु चन्द्र के साथ लग्न में हो और पाप ग्रह त्रिकोण में हो (यदि शनि भी लग्न में हो या लग्न को देखे तो यह योग और बली होता है) तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक पिशाच के वश में या पिशाच के प्रभाव से असुरक्षित रहता है ।

571 अरिष्ट अंध योग

राहु सूर्य के साथ लग्न मे हो और पापग्रह त्रिकोण में स्थित हों तो अरिष्ट अंध योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि)

जातक पूर्ण जन्मांध होगा ।

572 अरिष्ट अंध योग

द्वितीयेश सूर्य और शुक्र लग्नेश के साथ षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि)

जातक पूरी तरह जन्मांध होगा ।

573 अरिष्ट वात योग

बृहस्पति लग्न में और शनि सप्तम भाव में हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक वात (वायु) असंतुलन से असुरक्षित रहेगा ।(आयुर्वेदिक निरुपण) यह अधिकता विश्रान्तिहीन, अनिद्रा, कब्ज शरीर में द्रव की कमी, सर्दी और निराशा के बीच रह सकता है ।

574 अरिष्ट मतिभ्रम योग

गुरु लग्न में हो और मंगल सप्तम भाव में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/9/9)

जातक मानसिक असंतुलन के विकसित होने से असुरक्षित रहता है ।

575 अरिष्ट मतिभ्रम योग

शनि लग्न में हो और मंगल नवम्, पंचम् या सप्तम भाव में हो तो अरिष्ट मतिभ्रम योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/2/10)

जातक मानसिक असंतुलन के विकसित होने से असुरक्षित रहता है ।

576 अरिष्ट मतिभ्रम योग

शनि लग्न में हो और सूर्य द्वादश भाव में और चन्द्र या मंगल त्रिकोण भाव में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/2/10)

जातक को मानसिक असंतुलन, वाणी में दोष और स्वभाव में नटखटपन का विकार हो सकता है ।

577 अरिष्ट मतिभ्रम योग

शनि द्वादश भाव में हो चन्द्र से युत हो जो कि दुर्बल या क्षीण हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि)

जातक मनोविकार से ग्रस्त हो सकता है ।

578 अरिष्ट मतिभ्रम योग

चन्द्र और बुध केन्द्र में हों किसी अन्य ग्रह से युत या दृष्ट हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/2/12)

जातक मानसिक असंतुलन से ग्रस्त हो सकता है ।

579 अरिष्ट मतिभ्रम योग

क्षीण चन्द्र अनिष्ट नवमांश में केन्द्र में हो जबकि बुध पापग्रहों से युत हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मानसिक असंतुलन से ग्रसित रह सकता है ।

580 अरिष्ट मतिभ्रम योग

चन्द्र, दुर्बल शनि के साथ हो अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मानसिक असंतुलन से ग्रस्त हो सकता है ।

581 अरिष्ट मतिभ्रम योग

चन्द्र मंगल से युत हो, राहु और शनि किसी दुःस्थान पर हों तो यह योग होता है । (षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में विशेषतः अष्टम भाव में) (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मानसिक असंतुलन से ग्रसित हो सकता है ।

582 अरिष्ट मतिभ्रम योग

चन्द्र दुर्बल और क्षीण हो अष्टम भाव में हो राहु से युत हो और पापग्रहों से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मानसिक असंतुलन से ग्रस्त हो सकता है ।

583 अरिष्ट मतिभ्रम योग

चन्द्र और बुध केन्द्र में हो दोनों पापग्रहों से युत या दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/2/12)

जातक मानसिक असंतुलन का मरीज हो सकता है ।

584 अरिष्ट मतिभ्रम योग

चन्द्र और बुध केन्द्र में हो और लाभ नवमांश में नहीं हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/2/12)

जातक मानसिक असंतुलन से ग्रस्त हो सकता है ।

585 अरिष्ट मतिभ्रम योग

षष्टमेश पापग्रहों से दृष्ट या युत हो षष्टम भाव में पापग्रह स्थित हों या षष्टम भाव पापग्रह से दृष्ट हो बुध व चन्द्र दुःस्थान पर हो या पापग्रहों से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मानसिक असंतुलन से ग्रस्त रहेगा ।

586 अरिष्ट मतिभ्रम योग

चन्द्र द्वादश भाव में राहु से युत हो जबकि शुभ ग्रह अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/2/38)

जातक मनोरोग (पागलपन) से ग्रस्त और पूर्णतः क्रोधी और लड़ाई का शौकीन होगा ।

587 अरिष्ट मतिभ्रम योग

चन्द्र और राहु लग्न में साथ हों पापग्रह त्रिकोण में हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मानसिक असंतुलन का रोगी हो सकता है ।

588 अरिष्ट मतिभ्रम योग

बुध निर्बल हो और पापग्रह से युत होकर तृतीय, षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव में हो तो अरिष्ट मतिभ्रम योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मानसिक असंतुलन से ग्रस्त रहेगा ।

589 अरिष्ट मतिभ्रम योग

सूर्य लग्न में हो और मंगल और शनि सप्तम भाव में हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मानसिक असंतुलन का रोगी हो सकता है ।

590 अरिष्ट हर्षमोहा योग

चन्द्र मंगल और शनि के साथ अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक हिस्टीरिया के रोग का शिकार हो सकता है ।

591 अरिष्ट हर्षमोहा योग

सूर्य चन्द्र और मंगल अष्टम भाव में हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक हिस्टीरिया रोग से ग्रसित होगा ।

592 अरिष्ट हर्षमोहा योग

सूर्य चन्द्र और मंगल लग्न में हो किसी पापग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक हिस्टीरिया से ग्रसित होगा ।

593 अरिष्ट हर्षमोहा योग

चन्द्र और बुध केन्द्र में हो पापग्रह से दृष्ट हो और पापग्रह अष्टम भाव में भी स्थित हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक हिस्टीरिया रोग से असुरक्षित होता है ।

594 अरिष्ट हर्षमोहा योग

मंगल और शनि की युति षष्टम या अष्टम भाव में हो और बृहस्पति लग्न या त्रिकोण में हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक हिस्टीरिया से असुरक्षित होता है ।

595 अरिष्ट हर्षमोहा योग

चन्द्र राहु या शनि से युत और बुध दुर्बल या पीड़ित हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक हिस्टीरिया से असुरक्षित होता है ।

596 अरिष्ट पैशाका योग

चन्द्र और बुध केन्द्र में हों किसी अन्य ग्रह से युत न हों और जिस भाव में हो उनके स्वामी द्वारा दृष्ट न हो तो यह योग होता है । (जातक देश मार्ग - 8/74)

जातक मानसिक असंतुलन का शिकार हो सकता है ।

597 अरिष्ट महाग्रद योग

केन्द्र में शुक्र और चन्द्र की युति हो और पापग्रह अष्टम और पंचम भाव में हो तो यह योग होता है । (जातक देश मार्ग - 8/75)

जातक मिर्गी का शिकार हो सकता है ।

598 अरिष्ट महाग्रद योग

पापग्रह त्रिकोण में हो सूर्य और मंगल प्रतिकूल स्थान पर हों शनि और राहु अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक मिर्गी का शिकार हो सकता है ।

599 अरिष्ट खलवात योग

लग्न धनु राशि या वृष राशि की हो या कि पाप राशि की हो और पापग्रहों से दृष्ट हो तो अरिष्ट खलवात योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक के बालों का क्षय होगा और गंजा हो जाएगा ।

600 अरिष्ट निष्ठुर भाषी योग

चन्द्र शनि से युत हो तो यह योग होता है । (मेजर एस. जी. खूट)

जातक की वाणी कर्कश होगी ।

601 अरिष्ट राजभ्रष्ट योग

अरूध लग्नेश अरूध द्वादश (उपपाद) से युत हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को ऊँचाई से गिरने का खतरा होता है ।

602 राजयोग भंग

लग्न सिंह हो, शनि उच्च का हो, जबकि दुर्बल नवमांश राशि या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक को उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा और भाग्य खो जाने का संकट होता है ।

603 राजयोग भंग

सूर्य तुला राशि के दसवें अंश में हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/2/28७9)

जातक को भाग्य, उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा और जन्म कुण्डली के अनेक योगों को खोने का संकट उत्पन्न होता है ।

604 गोहन्ता योग

पापग्रह बिना किसी शुभ ग्रह की दृष्टि के केन्द्र में हो और बृहस्पति अष्टम स्थान पर हो तो यह योग होता है । (बृहत् जातक)

जातक कसाई के रुप में अपने रोजगार का चुनाव करता है ।

605 दरिद्र योग

लग्नेश और द्वादशेश एक दूसरे के भाव में हों और मारकेश किसी एक से या दोनों से प्रभावित या दृष्ट हो तो यह योग होता है । (डा के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य का शिकार रहता है ।

606 दरिद्र योग

लग्नेश और षष्टमेश एक दूसरे के भाव में हो और मारकेश किसी एक या दोनों से प्रभावित हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीब, कृपणता और खराब स्वास्थ्य वाला होगा ।

607 दरिद्र योग

लग्न या चन्द्र केतु से पीडित हों और लग्नेश अष्टम भाव में हो, मारक से पीडित हो तो दरिद्र योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब सेहत से परेशान हो सकता है ।

608 दरिद्र योग

लग्नेश पापग्रह से युत हो, दु:स्थान में हो और द्वितीयेश निर्बल हो या षष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

इस योग के प्रभाव से जातक सम्पन्न घर में जन्म लेता है परन्तु दरिद्रता भोगता है ।

609 दरिद्र योग

लग्नेश यदि दु:स्थान के स्वामी से युत हो शनि के साथ हो और किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कृपणता और खराब सेहत का शिकार हो सकता है ।

610 दरिद्र योग

पंचमेश षष्टम भाव में हों और नवमेश द्वादश भाव में मारकों के प्रभाव में हो तो दरिद्र योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीडित रहता है ।

611 दरिद्र योग

नवमेश एवं दशमेश के अलावा पापग्रह लग्न में मारक ग्रहों के प्रभाव में हो तो दरिद्र योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीडित रहता है ।

612 दरिद्र योग

जिन भावों में दु:स्थान के स्वामी बैठे हों, उनके स्वामी (उन भावों के स्वामी) भी स्वयं दु:स्थान में बैठे हों और पापग्रहों से दृष्ट हों या युत हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीडित रहता है ।

613 दरिद्र योग

नवमांश का स्वामी चन्द्र मारक ग्रह से युत या मारक भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीडित होता है ।

614 दरिद्र योग

लग्नेश और इसका नवमांश का स्वामी या नवमांश लग्न का स्वामी दुःस्थान पर हो और मारक ग्रह से दृष्ट या युत हो तो दरिद्र योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीडित रहता है ।

615 दरिद्र योग

शुभ ग्रह पाप भावों में स्थित हों और पाप ग्रह शुभ भावों में स्थित हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीड़ित हो सकता है ।

616 दरिद्र योग

ग्रह जो दुःस्थान (6, 8, 12) के स्वामी से युक्त हों और मारक (2, 7) भी साथ हो पंचम और नवम् भाव के प्रभाव से एकाकी हो तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीडित रहेगा है ।

617 दरिद्र योग

आत्मकारक या लग्न से अष्टम या द्वादश लग्नेश और आत्मकारक नवमांश के स्वामी से दृष्ट हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीड़ित रहेगा ।

618 दरिद्र योग

आत्मकारक से द्वादश भाव आत्मकारक के नवमांश के स्वामी से दृष्ट या लग्न से द्वादश भाव लग्नेश से दृष्ट हो तो दरिद्र योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब स्वास्थ्य से पीड़ित हो सकता है ।

619 दरिद्र योग

मंगल और शनि द्वितीय भाव में हो और बुध से दृष्ट नहीं हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कंजूसी और खराब सेहत से पीड़ित होता है ।

620 दरिद्र योग

सूर्य द्वितीय भाव में हो और शनि से दृष्ट हो या शनि द्वितीय भाव में हो और सूर्य से दृष्ट हो तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक खराब स्वास्थ्य, गरीबी और कृपणता से पीड़ित हो सकता है ।

621 दरिद्र योग

नवमांश (या अन्य वर्ग) में सातों ग्रह स्वामाविक क्रम के विपरीत क्रम में इस प्रकार हों कि शुक्र शनि से द्वितीय स्थान पर, बृहस्पति शुक्र से द्वितीय स्थान पर, बुध बृहस्पति से द्वितीय स्थान पर, मंगल बुध से द्वितीय स्थान पर, चन्द्र मंगल से द्वितीय स्थान पर, सूर्य चन्द्र से दूसरे स्थान पर, स्थित हो तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कृपणता और खराब स्वास्थ्य से पीडित होता है।

622 दरिद्र योग

सभी ग्रह या तो दुर्बल अथवा शत्रु क्षेत्री भाव में नवमांश में हों चाहे वे उच्च राशि के हों तो भी यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कृपणता और खराब स्वास्थ्य से पीड़ित हो सकता है।

623 दरिद्र योग

लग्न में चन्द्र केतु से पीडित हो तो दरिद्र योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कृपणता और खराब सेहत से पीड़ित हो सकता है।

624 दरिद्र योग

चन्द्र और सूर्य एक राशि में हों तो एक दूसरे के नवमांश में हों तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक गरीबी, कृपणता और खराब सेहत से पीड़ित हो सकता है।

625 दरिद्र योग

एकादश भाव का स्वामी दुःस्थान (षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव) में हों तो दरिद्र योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

जातक अत्यधिक ऋण लेता है, गरीबी से पीडित होता है, श्रवणेन्द्रिय में विकार से ग्रस्त होता है, तुच्छ मानसिकता का होता है और पापकर्मों व अवैधानिक कृत्यों में लिप्त रहता है ।

626 युक्ति समन्विथवाग्मि योग

द्वितीयेश शुभ ग्रह से युत केन्द्र या त्रिकोण में या उच्च राशि में बृहस्पति से युत हो तो यह योग होता है। (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/29)

जातक मेघावी और चतुर वक्ता (वाक चातुर्य) होता है ।

627 युक्ति समन्विथवाग्मि योग

वाणी का स्वामी बुध केन्द्र में स्थित हो परमोच्च और पर्वतांश और बृहस्पति या शुक्र सिंहासनांश में हों तो यह योग होता है। (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/32)

जातक मेघावी और अच्छा वक्ता होता है ।

628 चाण्डाल योग

शुक्र चन्द्र और बुध केन्द्र में साथ हों और राहु लग्न में हों तो चाण्डाल योग होता है। (शंभु होरा प्रकाश - 14/28)

जातक अपनी जन्म की जाति से सम्बन्धित कर्तव्यों का पालन कर पाने से वंचित रहता है ।

629 महापरिवर्तन योग

लग्नेश यदि द्वितीयेश से भाव विनिमय (अदला-बदली) करता है या चतुर्थेश या पंचमेश या सप्तमेश या नवमेश या दशमेश या एकादशमेश लग्नेश से भाव बदलते है (एक दूसरे के भाव में हों) तो महापरिवर्तन योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

इस योग से जातक को सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुखानुभूति मिलती है साथ ही इसमें जिस भाव का योगदान होता है उसके अनुसार अनुकूल अच्छे परिणाम मिलते हैं ।

630 महापरिवर्तन योग

द्वितीयेश, चतुर्थेश या पंचमेश या सप्तमेश या नवमेश या दशमेश से, या एकादशमेश से भाव विनिमय करता है तो (एक दूसरे के भाव में होते हैं तो)यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

यह योग सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख दिलवाता है साथ ही जो भाव इससे जुड़ते हैं उनका लाभदायक फल जातक को मिलता है ।

631 महापरिवर्तन योग

चतुर्थेश, पंचमेश या सप्तमेश या नवमेश या दशमेश या एकादशमेश से अपना भाव बदलते हैं तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

यह योग सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख दिलवाता है साथ ही जो भाव इससे जुड़ते हैं उनका लाभदायक प्रतिफल जातक को मिलता है ।

632 महापरिवर्तन योग

पंचमेश, सप्तमेश या नवमेश दशमेश या एकादशमेश से भाव बदलते हैं तो महापरिवर्तन योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

यह योग सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख दिलवाता है तथा इसमें जिस भाव का योगदान होता है उसके अनुसार अनुकूल अच्छे परिणाम मिलते हैं ।

633 महापरिवर्तन योग

सप्तमेश, नवमेश या दशमेश से, या एकादशमेश से भाव विनिमय करते है तो यह योग होता है। (डा. के. एस. चरक)

यह योग सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख दिलवाता है तथा इससे जो भाव जुड़ते हैं उनका लाभदायक परिणाम जातक को मिलते है ।

634 महापरिवर्तन योग

नवमेश यदि दशमेश या एकादशमेश से भाव बदलता है तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख दिलवाता है साथ ही जिस भाव का इसमें योगदान होता है उसके अनुसार लाभदायक परिणाम जातक को मिलते है ।

635 महापरिवर्तन योग

दशमेश यदि एकादशमेश से भाव विनिमय करता है तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग सम्पदा, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख दिलवाता है साथ ही दोनों भावों से सम्बन्धित लाभकारी परिणाम जातक को मिलते हैं ।

636 दैन्य परिवर्तन योग

षष्टमेश यदि लग्नेश या द्वितीयेश या तृतीयेश या चतुर्थेश या पंचमेश या सप्तमेश या अष्टमेश या नवमेश या दशमेश से एकादशमेश या द्वादशेश से भाव विनिमय करता है तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग दुष्ट स्वभाव, विरोधियों से उत्पन्न संकट और खराब सेहत प्रदान करता है ।

637 दैन्य परिवर्तन योग

अष्टमेश, लग्नेश या द्वितीयेश या तृतीयेश या चतुर्थेश या पंचमेश या सप्तमेश या नवमेश या दशमेश या एकादशमेश या द्वादशेश से भाव विनिमय करता है तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

ग्रहों का यह योग दुष्ट स्वभाव, विरोधियों से उत्पन्न संकट और खराब सेहत प्रदान करता है ।

638 दैन्य परिवर्तन योग

द्वादशेश यदि लग्नेश, द्वितीयेश, तृतीयेश, चतुर्थेश, पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश, दशमेश या एकादशमेश से भाव विनिमय करता है तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग दुष्ट स्वभाव, विरोधियों से उत्पन्न संकट और खराब सेहत प्रदान करता है ।

639 खल परिवर्तन योग

तृतीयेश, लग्नेश, द्वितीयेश या चतुर्थेश या पंचमेश या सप्तमेश या नवमेश या दशमेश या एकादशमेश से भाव विनिमय करता है तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग अस्थिर और दुष्ट स्वभाव, अस्थिर भाग्य और अस्थिर प्रकृति प्रदान करता है ।

640 बालारिष्ट योग

चन्द्र यदि दुःस्थान (षष्टम, अष्टम या द्वादश भाव) में स्थित हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु शीघ्र मृत्यु से असुरक्षित होता है (यह भी ध्यान में रखनी चाहिए कि यह एक पृथक विचार है, अरिष्ट भंग योग भी इस योग को निरस्त करने हेतु देखना चाहिए) ।

641 बालारिष्ट योग

कोई शुभ ग्रह वक्री होकर दुःस्थान (6, 8, 12) में हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु को शीघ्र मृत्यु का संकट हो सकता है (यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यह एक पृथक संकेत है । अरिष्ट भंग योग भी इस योग को निरस्त करता है) ।

642 बालारिष्ट योग

चन्द्र और समस्त पापग्रह केन्द्र में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु को मृत्यु का संकट हो सकता है । (यह भी ध्यान देने योग्य है कि अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है) ।

643 बालारिष्ट योग

लग्न में दुर्बल चन्द्र और पापग्रह केन्द्र और अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु को मृत्यु का संकट हो सकता है । (यह भी ध्यान देने योग्य है कि अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है) ।

644 बालारिष्ट योग

चन्द्र लग्न में और पापग्रह सप्तम भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु को आसन्न मृत्यु से संकट हो सकता है । (किन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यह एक पृथक विचार है, इस प्रभाव के निरस्तीकरण हेतु अरिष्ट भंग योग भी देखना चाहिए) ।

645 बालारिष्ट योग

चन्द्र लग्न में हो शनि द्वादश भाव में हो सूर्य नवम् भाव मे मंगल अष्टम भाव में और बृहस्पति शक्ति से वंचित हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु को आसन्न मृत्यु का संकट हो सकता है । (किन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यह एक पृथक विचार है, इस प्रभाव के निरस्तीकरण के लिए अरिष्ट भंग योग भी देखना चाहिए) ।

646 बालारिष्ट (वर्ज मुष्टि) योग

लग्न में कर्क या वृश्चिक राशि हो और सभी शुभ ग्रह चतुर्थ से दशम भाव में और सभी पाप ग्रह दशम दशम से चतुर्थ स्थान पर हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु को आसन्न मृत्यु से संकट हो सकता है । (किन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यह एक पृथक विचार है, अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है) ।

647 बालारिष्ट योग

लग्न और चन्द्र यदि शुभ दृष्टि से वंचित हों और पापग्रहों से घिरे हुए हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु और उसकी माँ का उसके जन्म के समय या कुछ जन्म के कुछ समय बाद निधन हो सकता है । (यह ध्यान देने योग्य बात है कि यह एक पृथक विचार है, हमें अरिष्ट भंग योग को भी इस योग के निरस्तीकरण के संदर्भ में देखना चाहिए) ।

648 बालारिष्ट योग

मंगल, शनि और सूर्य षष्टम या अष्टम भाव में एक साथ हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु के मृत्यु के आसन्न संकट से असुरक्षित होता है । (यह ध्यान रखना चाहिए कि यह एक पृथक विचार है, हमें अरिष्ट भंग योग को भी इस योग के निरस्तीकरण के सन्दर्भ में देखना चाहिए) ।

649 अरिष्ट भंग योग

बृहस्पति लग्न में हों और बली हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग बालारिष्ट योग को, जिससे नवजात शिशु को मौत का संकट रहता है, निरस्त या भंग करता है ।

650 अरिष्ट भंग योग

बली बुध, बृहस्पति या शुक्र केन्द्र में किसी भी भाव में स्थित हों तो अरिष्ट भंग योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग बालारिष्ट योग को जो नवजात शिशु भी मौत का संकेत देता है, को भंग करता है ।

651 अरिष्ट भंग योग

लग्नेश अत्यधिक बली हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो एवं केन्द्र में स्थित हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग बालारिष्ट योग, जो नवजात शिशु की मौत का संकेत देता है, को निरस्त या भंग करता है ।

652 अरिष्ट भंग योग

कृष्ण पक्ष में दिन के समय जन्म हो या शुक्ल पक्ष की रात्रि में जन्म हो तो यह अरिष्ट भंग योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग बालारिष्ट योग, जो नवजात शिशु की मौत का संकेत देता है, को निरस्त या भंग करता है ।

653 अरिष्ट भंग योग

राहु लग्न से तृतीय भाव में हो या षष्टम भाव में हो या एकादश भाव में हो तो अरिष्ट भंग योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग बालारिष्ट योग, जो कि नवजात शिशु की मौत का संकेत देता है, को निरस्त या भंग करता है ।

654 अरिष्ट भंग योग

लग्न में कर्क या वृष राशि हो और राहु स्थित हो तो अरिष्ट भंग योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग बालारिष्ट योग को जिससे नवजात शिशु की मौत का संकट हो सकता है, को निरस्त या भंग करता है ।

655 अरिष्ट भंग योग

सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों (राशियाँ 3, 5, 6, 7, 8 और 11) में स्थित हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

नवजात शिशु को बालारिष्ट योग से जो जीवन का संकट उत्पन्न है उसे यह योग नष्ट या भंग करता है ।

656 अरिष्ट भंग योग

चन्द्र यदि बृहस्पति या बुध के द्रेष्काण में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग बालारिष्ट योग को निरस्त या भंग करता है जिसके अनुसार नवजात शिशु को मौत का संकट हो सकता है ।

657 अल्पायु योग

लग्नेश और अष्टमेश दोनों स्थिर राशि में हो या एक चर राशि में और दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या बत्तीस वर्ष तक की आयु प्रदान करता है ।

658 अल्पायु योग

लग्न और चन्द्र दोनों स्थिर राशि के हो या एक चर राशि और दूसरी द्विस्वभाव राशि में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु अथवा 32 वर्ष तक की आयु प्रदान करता है ।

659 अल्पायु योग

लग्न और होरा लग्न दोनों स्थिर राशि के हों या चर राशि में दूसरी द्विस्वभाव राशि में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष की आयु प्रदान करता है ।

660 अल्पायु योग

लग्नेश और शुभ ग्रह अपोक्लिम भाव में हो या अष्टमेश और पापग्रह अपोक्लिम भाव में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्पायु या 32 वर्ष तक की आयु प्रदान करता है ।

661 अल्पायु योग

लग्नेश दुर्बल और अष्टमेश केन्द्र में स्थित हो तो अल्पायु योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्पायु या 32 वर्ष तक की आयु प्रदान करता है ।

662 अल्पायु योग

लग्नेश दुर्बल और अष्टमेश निर्बल और अष्टम भाव पीड़ित हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्पायु या 32 वर्ष तक की आयु प्रदान करता है ।

663 अल्पायु योग

पंचम भाव, अष्टम भाव और अष्टमेश पीड़ित हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग अल्प आयु या जातक की 32 वर्ष तक आयु का संकेत देता है ।

664 अल्पायु योग

बृहस्पति मेष या वृश्चिक राशि में अष्टम भाव में हो और चन्द्र, मंगल और शनि से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु प्रदान करता है ।

665 अल्पायु योग

बृहस्पति या शुक्र लग्न में हों और पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है ।

666 अल्पायु योग

दुर्बल चन्द्र और दुर्बल लग्नेश अपोक्लिम भाव में स्थित हों और पापग्रहों से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु प्रदान करता है ।

667 अल्पायु योग

सूर्य लग्न में हो और पापग्रहों से घिरा हुआ हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है ।

668 अल्पायु योग

केन्द्र में शुभ ग्रह न हो और अष्टम भाव में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है ।

669 अल्पायु योग

चन्द्र द्वादश भाव में हो और पाप ग्रह षष्टम भाव में हों तब वह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है ।

670 अल्पायु योग

तृतीयेश और मंगल अस्त, पाप ग्रहों से पीड़ित हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है ।

671 अल्पायु योग

अष्टमेश और शनि अस्त या पाप ग्रहों से पीडित हों तो अल्पायु योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है ।

672 अल्पायु योग

अष्टमेश केतु से युत होकर लग्न में स्थित हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक को अल्प आयु या 32 वर्ष तक की आयु का संकेत देता है ।

673 मध्यायु योग

लग्नेश और अष्टमेश दोनों द्विस्वभाव राशि या एक चर और दूसरी स्थिर राशि में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु या 70 वर्ष तक की आयु को दर्शाता है ।

674 मध्यायु योग

लग्न और चन्द्र दोनो द्विस्वभाव राशि में या एक चर राशि में और दूसरा स्थिर राशि में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक को दर्शाता है ।

675 मध्यायु योग

लग्न और होरा लग्न दोनों द्विस्वभाव राशि में हो या एक चर राशि में और दूसरी स्थिर राशि में हों तो मध्यायु योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक को दर्शाता है ।

676 मध्यायु योग

लग्नेश और शुभ ग्रह पणफर भाव में हों या अष्टमेश और समस्त पाप ग्रह पणफर भाव में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक को दर्शाता है ।

677 मध्यायु योग

बली बुध केन्द्र में हो अष्टम भाव रिक्त हो व शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक को दर्शाता है ।

678 मध्यायु योग

चन्द्रमा स्वक्षेत्री हो या लग्न में हों और शुभ ग्रह सप्तम भाव मे हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक की दर्शाता है ।

679 मध्यायु योग

पाप ग्रह यदि द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, अष्टम और एकादश भाव में स्थित हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक की दर्शाता है ।

680 मध्यायु योग

निर्बल लग्नेश हो, बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण हो और पाप ग्रह दुःस्थान (6, 8, 12) पर हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक की दर्शाता है ।

681 मध्यायु योग

बृहस्पति दुर्बल लग्नेश के साथ केन्द्र में हो या त्रिकोण में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की मध्यायु 70 वर्ष तक की दर्शाता है ।

682 पूर्णायु योग

लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर राशि में हों या एक द्विस्वभाव राशि में, दूसरा स्थिर राशि में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की दीर्घायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

683 पूर्णायु योग

लग्न और चन्द्र दोनों चर राशि में हों, या एक द्विस्वभाव में और दूसरा स्थिर राशि में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की दीर्घायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

684 पूर्णायु योग

लग्न और होरा लग्न दोनों चर राशि में हो या एक द्विस्वभाव राशि में और दूसरी राशि में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

685 पूर्णायु योग

लग्नेश और शुभ ग्रह पणफर भाव में हों या अष्टमेश और सभी पाप ग्रह पणफर भाव में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

686 पूर्णायु योग

अष्टमेश उच्च का होकर केन्द्र में हो या त्रिकोण में शुभ ग्रहों से युत हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

687 पूर्णायु योग

लग्नेश लग्न में हो और अष्टमेश अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

688 पूर्णायु योग

लग्नेश, पंचमेश और अष्टमेश बली हो और स्वयं की राशि में हों, स्वयं के नवमांश में हो, या मित्र भाव में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

689 पूर्णायु योग

षष्टमेश या द्वादशेश षष्टम भाव में हों या द्वादश भाव में या अष्टम भाव में या लग्न में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

690 पूर्णायु योग

लग्नेश, अष्टमेश, दशमेश और शनि केन्द्र में, त्रिकोण में या एकादश भाव में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह याग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

691 पूर्णायु योग

लग्नेश उच्च का, चन्द्र एकादश भाव में और बृहस्पति अष्टम भाव में हों तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

692 पूर्णायु योग

शनि अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (डा. के. एस. चरक)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

693 महादीर्घायु योग

सूर्य, बृहस्पति और मंगल नवम भाव में हों, वर्गोत्तम में हों, मकर या कुंभ राशि में हों जबकि चन्द्र बली होकर लग्न में हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

शास्त्रानुसार यह योग संसार के अन्त तक सुखी जीवन, प्रसन्न जीवन जातक को प्रदान करता है ।

694 महादीर्घायु योग

शनि और बृहस्पति लग्न से दशम अथवा नवम् स्थान पर हो और नवमांश में भी ऐसा ही हो । शुभ ग्रहों से दृष्ट हों जबकि सूर्य लग्न में स्थित हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

शास्त्रानुसार इस योग से जातक अत्यधिक दीर्घ जीवन का उपभोग करता है तथा किसी भी अल्पायु के संकेत का दमन करता है ।

695 महादीर्घायु योग

लग्न में कर्क राशि हो चन्द्र या बृहस्पति स्थित हों और शुक्र और बुध केन्द्र में हों और शेष ग्रह एकादश षष्टम और तृतीय भाव में हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

यह योग जातक की पूर्णायु 100 वर्ष तक की दर्शाता है ।

696 महादीर्घायु योग

त्रिकोण में कोई पाप ग्रह न हो शुभ ग्रहों से विहीन केन्द्र हो और अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

शास्त्रानुसार यह योग जातक को दिव्य बनाता है ।

697 महादीर्घायु योग

लग्न से ग्रहों का क्रम इस प्रकार हो कि शनि सबसे पहले और मंगल सबसे बाद में हो और ये दोनों ही ग्रह वैशेषिकांश में हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

शास्त्रानुसार जातक को यह योग अमर बना देता है ।

698 महादीर्घायु योग

बृहस्पति और शुक्र मीन राशि में हों या चन्द्र वृष राशि में और वृष के नवमांश में हो या मंगल सिंहासनांश प्राप्त कर चुका हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

शास्त्रानुसार जातक मंत्रोच्चारण द्वारा असीम जीवन पायेगा ।

699 महादीर्घायु योग

शनि देवलोकांश में हो मंगल पर्वतांश में और बृहस्पति लग्न में और सिंहासनांश में हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

शास्त्रानुसार जातक इस योग के प्रभाव से साधु तुल्य जीवन का आनन्द प्राप्त करेगा ।

700 महादीर्घायु योग

केन्द्र में बृहस्पति गोपुरांश में हो, और शुक्र त्रिकोण में पर्वतांश में हों जबकि लग्न कर्क हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

शास्त्रानुसार यह योग जातक को संसार की समाप्ति तक जीवित रहता है ।

701 महादीर्घायु योग

धनु लग्न हो, बृहस्पति स्थित हो तथा मेष राशि में नवमांश उदित हों जबकि शुक्र सप्तम भाव में हो तथा चन्द्र कन्या राशि में हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

शास्त्रानुसार जातक इस योग में परमानंद प्राप्त करता है ।

702 मुनीश्वर योग

नवमेश नवम् भाव में होकर चन्द्र से दृष्ट हो जो कि मंगल के नवमांश में हो तो यह योग होता है । (होरा रत्नम् 5/174)

जातक शास्त्रों (ज्ञान) की व्याख्या करने वाला तथा एक युग तक जीवित रहता है ।

703 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि वक्री हो जबकि मंगल के घर में स्थित हो तथा लग्न से केन्द्र या अष्टम् भाव में हो और बलि मंगल से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को अल्पायु या दो वर्ष की उम्र में मृत्यु का संकट होता है । (यह ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है, जो कि सत्य साबित होने के लिए अन्य संकेतों द्वारा सिद्ध किया जाना आवश्यक है । हमें अरिष्ट भंग योग को भी इस योग के निरस्तीकरण के सन्दर्भ में देखना चाहिए ।)

704 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

बृहस्पति मंगल द्वारा शासित घर मे तथा अष्टम् भाव में हों तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल तथा शनि द्वारा दृष्ट हो किन्तु शुक्र की दृष्टि से विहीन हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को अल्पायु या तीन वर्ष की उम्र में मृत्यु का संकट होता है । (यह ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है, जो कि सत्य साबित होने के लिए अन्य संकेतों द्वारा सिद्ध किया जाना आवश्यक है । हमें अरिष्ट भंग योग को भी इस योग के निरस्तीकरण के सन्दर्भ में देखना चाहिए ।)

705 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

षष्टम या अष्टम भाव मे कर्क राशि हो और बुध स्थित हों तथा चन्द्र से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को अल्पायु या चार वर्ष की उम्र में मृत्यु का संकट होता है । (यह ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है, जो कि सत्य साबित होने के लिए अन्य संकेतों द्वारा सिद्ध किया जाना आवश्यक है । हमें अरिष्ट भंग योग को भी इस योग के निरस्तीकरण के रुप में देखा जाना चाहिए ।)

706 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

सूर्य चन्द्र मंगल और बृहस्पति एक राशि में हों या मंगल बृहस्पति शनि और चन्द्र साथ हों या सूर्य शनि मंगल और चन्द्र साथ हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को अल्पायु या पाँच वर्ष की उम्र में मृत्यु का संकट होता है । (ज्ञातव्य है कि यह एक पृथक विचार है, जो कि सत्य सिद्ध होने के लिए अन्य संकेतों का होना आवश्यक है । इस योग के निरस्तीकरण हेतु अरिष्ट भंग योग देखना चाहिए ।)

707 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

चन्द्र से दृष्ट शनि यदि चन्द्र के नवमांश में हो और लग्नेश भी चन्द्र से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को छः वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है । (यह ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य सिद्ध होने के लिए अन्य संकेत होना आवश्यक है । वैसे इस योग के निरस्तीकरण के लिए अरिष्ट भंग योग देखना चाहिए ।)

708 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि सूर्य और मंगल लग्न में हों और सप्तमेश शुक्र हो और क्षीण चन्द्र स्थित हो और बृहस्पति की दृष्टि चन्द्र पर नहीं हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को सात या आठ वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग को सत्य होने में अन्य संकेतों का होना अनिवार्य है तथा अरिष्ट भंग योग इस योग को समाप्त करता है ।)

709 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

सूर्य चन्द्र और मंगल पंचम भाव में स्थित हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को नौ वर्ष की उम्र में मृत्यु का संकट हो सकता है । ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने में अन्य संकेतों का होना भी जरुरी है तथा अरिष्ट भंग योग इस योग को समाप्त करता है ।

710 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

मंगल चन्द्र और सूर्य पंचम भाव में इसी क्रम में हों और पाँच अंशो से ज्यादा के (अलग - अलग) न हों तो योगारिष्ट (योगज आयु) योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को नौ वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है । ध्यान रखें कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने में अन्य संकेतों का होना अनिवार्य है । अरिष्ट भंग योग द्वारा यह योग भंग हो जाता है ।

711 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश पाप ग्रह हो और चन्द्र से बारहवें भाव में बैठा हो और अन्य पाप ग्रह से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को नौ वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है । ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । सत्य होने के लिए अन्य संकेत भी होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग भी इस योग को निरस्त करता है ।

712 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

सूर्य चन्द्र और मंगल पंचम स्थान पर हों चन्द्र क्षीण और अस्त हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को नौ वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है । ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत भी होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।

713 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश शनि हो और मकर के नवमांश में और केवल बुध से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को दस वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है और पिता का शाप मिलता है । ध्यान रहे कि यह पृथक विचार है । इसे सत्य होने के लिए अन्य संकेत जरुरी है । अरिष्ट भंग योग इस योग को भंग करता है ।

714 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि मकर के नवमांश में हो और केवल बुध से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को दस वर्ष की आयु में मृत्यु और पिता का शाप का संकट होता है । ध्यान रहे कि यह पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग इस योग को भंग करता है ।

715 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

बुध सूर्य के अति निकट हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को ग्यारह वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट हो सकता है यद्यपि वह आसानी से जी सकता है । यह एक बहुत सामान्य योग है और असंभावित रुप से इस नकारात्मक स्वरुप को व्यक्त करता है और इसके लिए आवश्यक है कि अरिष्ट भंग योग को इसके भंग होने के लिए देखें ।

716 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

सूर्य चन्द्र के स्वभाव का होकर अष्टम भाव में हो शनि से युत हो और शुक्र से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को बारह वर्ष की उम्र में मृत्यु का संकट होता है । ध्यान रहे कि यह पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग इस योग को भंग करता है ।

717 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश शनि हो और वृश्चिक के नवमांश में हो केवल सूर्य से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को बारह वर्ष की उम्र में मृत्यु और पितृ शाप का संकट होता है । ध्यान रहे कि यह पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग इस योग को भंग करता है ।

718 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि वृश्चिक के नवमांश में हों और केवल सूर्य से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को बारह वर्ष की उम्र में मृत्यु और पितृ शाप का संकट होता है । ध्यान रहे कि यह पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत भी होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग इस योग को भंग करता है ।

719 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश शनि तुला के नवमांश में हो केवल बृहस्पति से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को तेरह वर्ष की आयु में मृत्यु और पितृ शाप का संकट होता है । ध्यान रहे कि यह पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत भी होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।

720 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि तुला के नवमांश में हो और केवल बृहस्पति से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को तेरह वर्ष की आयु में मृत्यु का एवं पितृ शाप का संकट हो सकता है । (ध्यान रहे कि यह केवल पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

721 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश सूर्य कन्या के नवमांश में केवल बुध से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक की कुल उम्र चौदह वर्ष होगी और दुष्ट स्वभाव वाला होगा । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेतों का होना जरुरी है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

722 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि कन्या के नवमांश में हो और केवल बुध से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक की उम्र चौदह वर्ष होगी और वह दुष्ट स्वभाव वाला होगा । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना जरुरी है । देखें कि यह अरिष्ट भंग योग से निरस्त हो जाता है ।)

723 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश होकर शनि सिंह के नवमांश मे हो और केवल राहु से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को आयु के पन्द्रह वर्ष की आयु में मौत से संकट उत्पन्न हो सकता है और किसी तेज हथियार से घाव हो सकता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत की आवश्यकता है, अरिष्ट भंग योग से यह योग निरस्त हो जाता है ।)

724 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि सिंह के नवमांश में हो और केवल राहु से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को पन्द्रह वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट उत्पन्न हो सकता है और किसी तेज हथियार से घाव हो सकता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत की आवश्यकता है । अरिष्ट भंग योग से यह योग निरस्त हो जाता है ।)

725 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि लग्नेश हो और कर्क के नवमांश में और केवल केतु से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को सोलहवें वर्ष की आयु में सर्पदंश से मृत्यु का संकट उत्पन्न होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत का होना अनिवार्य है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

726 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि कर्क के नवमांश में हो और केवल केतु से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को सोलह वर्ष की आयु में सर्पदंश से मृत्यु का संकट उत्पन्न होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत का होना चाहिए । अरिष्ट भंग योग इस योग को भंग करता है ।)

727 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि लग्नेश हो और मिथुन नवमांश में स्थित हो और लग्नेश से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को उम्र के सत्रह वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है तब तक वह नायक का जीवन जीयेगा और सुविधा सम्पन्न जीवन यापन करेगा । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसे सत्य होने के लिए अन्य संकेत आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

728 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि मिथुन नवमांश में हो, लग्नेश से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को उम्र के सत्रह वर्ष की उम्र में मृत्यु से संकट हो सकता है तब तक वह नायक का जीवन जीयेगा और भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त जीवन यापन करेगा । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

729 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश और अष्टमेश यदि पापग्रह हों और स्थान परिवर्तन आपस में करें तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को उम्र के अठारह वर्ष की उपरान्त मृत्यु का संकट हो सकता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

730 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश और अष्टमेश यदि पापग्रह हो और षष्टम और द्वादश भाव में गुरु न हों तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक की कुल आयु अठारह वर्ष होगी । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेतों का होना आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

731 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश उच्च का हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो और शनि गुरु के नवमांश में हो और राहु से युत हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक की मृत्यु बीस वर्ष की आयु में में हो सकती है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

732 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, उच्च का हो शनि गुरु के नवमांश में हो और केतु से युत हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को बीस वर्ष की अल्पायु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इसके सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना चाहिए आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को भंग करता है ।)

733 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

केन्द्र में पाप ग्रह हो चन्द्र शुक्र या गुरु से दृष्ट न हों और चन्द्र षष्टम या अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को बीस वर्ष की अल्पायु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

734 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

सूर्य गुरु से युत होकर वृश्चिक लग्न में हो जबकि अष्टमेश केन्द्र में हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को बाईस वर्ष की अल्पायु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होने आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

735 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

शनि लग्न मे हो, दुर्बल या स्वामाविक शत्रु राशि में हो और शुभ ग्रह अपोक्लिम भाव में हो, तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को छब्बीस या सत्ताईस वर्ष की अल्पायु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह योग एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होने आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

736 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

अष्टमेश पाप ग्रह हो गुरु से दृष्ट हो और एक पाप ग्रह से दृष्ट हो जबकि द्वादश भाव में चन्द्र राशि का स्वामी बैठा है । (जातक पारिजात)

जातक को अट्ठाईस वर्ष की अल्पायु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होने आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

737 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

अष्टमेश पाप ग्रह हो, पाप ग्रह से दृष्ट हो जबकि बृहस्पति चन्द्र राशि या नवमांश राशि के स्वामी से युत होकर, अष्टम भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को अठ्ठाईस वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होने आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

738 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

अष्टम भाव में सूर्य के साथ चन्द्रमा तथा शनि की युति हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को उनतीस वर्ष की आयु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होने आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

739 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

अष्टमेश केन्द्र में हो और लग्नेश शक्तिविहीन हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजातक)

जातक को 30 से 32 वर्ष की आयु में संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

740 योगारिष्ट (योगज आयु) योग

चन्द्र क्षीण हो, अष्टमेश केन्द्र में हो या पाप ग्रह अष्टम भाव में हो और लग्न शक्तिविहीन हो और पाप ग्रह स्थित हो तो यह योग होता है । (जातक पारिजात)

जातक को 32 वर्ष की अल्पायु में मृत्यु का संकट होता है । (ध्यान रहे कि यह एक पृथक विचार है । इस योग के सत्य होने के लिए अन्य संकेत होना आवश्यक है । अरिष्ट भंग योग इस योग को निरस्त करता है ।)

741 सरस्वती योग

बृहस्पति अति उच्च के हों और शनिवार और रविवार न हो तो यह योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक ज्ञान और शिक्षा में उच्चतम दक्षता प्राप्त करता है ।

742 विद्या योग

शुक्रवार हो मीन लग्न हो और शुक्र ठीक उच्च का हो तो विद्या योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक ज्ञान और शिक्षा में उच्चतम दक्षता प्राप्त करता है ।

743 विद्या योग

बृहस्पतिबार हो कर्क लग्न हो और बृहस्पति उच्च का हो तो विद्या योग होता है । (मूल सन्दर्भ - अज्ञात)

जातक ज्ञान और शिक्षा में उच्चतम दक्षता प्राप्त करता है ।

744 स्ववीर्यधन योग

मेष में चन्द्र हो, शनि कुंभ राशि में हो शुक्र मकर में हो और सूर्य धनु राशि में हो तो यह योग होता है ।

(शंभु होरा प्रकाश 14/1)

745 दरिद्र योग

केन्द्र के सभी भावों में शुभ ग्रह हों जबकि द्वितीय भाव में पाप ग्रह हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/2)

जातक अन्तहीन गरीबी का शिकार होगा और उसे उसके परिवार जनों से भय हो सकता है ।

746 राज योग

बृहस्पति लग्न में हो चन्द्र दशम् स्थान पर हो या बृहस्पति पंचम भाव में तथा चन्द्र दूसरे भाव में हो । पूर्ववर्ती व्याख्या शकट योग को भंग करती है जिसके अनुसार बृहस्पति यदि चन्द्र से अष्टम भाव में होने पर शकट योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/3)

जातक अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करता है, प्रायश्चित करेगा तथा अति उत्तम शाही चिह्नों से सुशोभित होकर उच्च राजकीय प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा ।

747 तीर्थ यात्रा योग

एक शुभ ग्रह अष्टम भाव में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/9)

जातक तीर्थ यात्राओं पर जाएगा और धार्मिक और आध्यात्मिक कई स्थलों पर भ्रमण करेगा ।

748 जल योग

सूर्य चन्द्र और शनि केन्द्र या नवम् या द्वादश भाव में एक साथ हों जबकि अन्य ग्रह शक्तिविहीन हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक विवेक, नेतृत्व, क्षमता और सम्पन्नता से वंचित होता है और परजीवी (दूसरों के भोजन पर जीने वाला) अस्थिर, संतप्त, मितव्ययी और विवेकविहीन होता है ।

749 केमाद्रुम योग

नवमेश द्वादश स्थान पर हो द्वादशेश द्वितीय भाव मे निर्बल हो और तृतीय भाव में पाप ग्रह हो तो केमाद्रुम योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/12)

जातक परान्नजीवी (जो कि लालची हो) दुष्ट और दुष्कर्मों में रुचि लेने वाला, न के बराबर सम्पत्ति वाला, दूसरे के जीवन साथी में रुचि लेने वाला और ऋणी रहने वाला होता है ।

750 केमाद्रुम योग

बृहस्पति, शनि और चन्द्र केन्द्र में हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/13)

जातक को दुर्भाग्यवश अपनी जन्म भूमि से दूर गमन कर जाना पडता है ।

751 केमाद्रुम योग

मंगल और शनि द्वादश, अष्टम या पंचम भाव में हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/13)

जातक को अपनी जन्म भूमि से दुर्भाग्यवश अन्यत्र गमन कर जाना पड़ता है ।

752 केमाद्रुम योग

मंगल और शनि द्वादश, अष्टम या पंचम भाव में साथ-साथ हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/14)

जातक को अपनी जन्म भूमि का दुर्भाग्य से त्याग करना पड़ता है , या जन्म भूमि से दूर जाना पडता है ।

753 सोनमादक योग

शनि लग्न में हो मंगल पंचम भाव में हो सप्तम भाव में या नवम् भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/32)

जातक को मानसिक असंतुलन के या उन्माद के विकसित होने का संकट उत्पन्न हो सकता है । (संभवतः अवसाद के कारण प्रसन्नता का क्षय होगा ।)

754 सोनमादक योग

द्वादश भाव में चन्द्र शनि की युति हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/32)

जातक को मानसिक असंतुलन के या उन्माद के विकसित होने का संकट उत्पन्न हो सकता है । (संभवतः अवसाद के कारण प्रसन्नता का क्षय होगा ।)

755 सोनमादक योग

जन्म दिन के समय का हो लग्न शनि के द्रेष्कोण में हो या मंगल के द्रेष्कोण में हो जबकि सूर्य चन्द्र से युत लग्न या नवम् भाव में हो, जबकि बृहस्पति केन्द्र या तृतीय भाव मे हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/26)

जातक को मानसिक असंतुलन के या उन्माद के विकसित होने का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

756 सोनमादक योग

लग्न शनि या मंगल के द्रेष्कोण मे हो जबकि सूर्य चन्द्र की युति लग्न, पंचम भाव या नवम् भाव में हो और बृहस्पति केन्द्र अथवा तृतीय भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/26)

जातक को मानसिक असंतुलन के या उन्माद के विकसित होने का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

757 सोनमादक योग

बृहस्पति लग्न मे हो जबकि शनि और मंगल सप्तम भाव मे हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/27)

जातक को मानसिक असंतुलन के या उन्माद के विकसित होने का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

758 मलेच्छ योग

शनि लग्न में हो और सूर्य सप्तम भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/33)

जातक जीवन के प्रारम्भ में यद्यपि अच्छे स्थान पर हो सकता है पर बाद में कुछ मायनों में परित्यक्त हो सकता है ।

759 मलेच्छ योग

शनि लग्न में हो और मंगल तृतीय स्थान पर हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/33)

जातक जीवन के प्रारम्भ में यद्यपि अच्छे स्थान पर हो सकता है पर बाद में कुछ मायनों में परित्यक्त हो सकता है ।

760 मलेच्छ योग

सूर्य तथा शनि की एक ही द्रेष्कोण नवमांश या त्रिशांश में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/34)

जातक जीवन के प्रारम्भ में यद्यपि अच्छे स्थान पर हो सकता है पर बाद में कुछ मायनों में परित्यक्त हो सकता है ।

761 मूकबधिरांध योग

सूर्य तथा चन्द्र सिंह लग्न में साथ जुड़े हों तथा शनि एवं मंगल द्वारा दृष्ट हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/35)

जातक अंधा हो सकता है ।

762 मूकबधिरांध योग

सूर्य तथा चन्द्र सिंह लग्न में जुड़े साथ हों तथा पाप ग्रहों एवं शुभग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/35)

जातक को नेत्र की बीमारी हो सकती है ।

763 मूकबधिरांध योग

चन्द्र द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक अपने बाएँ नेत्र में विकार का अनुभव करेगा ।

764 मूकबधिरांध योग

सूर्य के द्वादश भाव में होने पर यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक अपने दाएँ नेत्र में विकार का अनुभव करेगा ।

765 मूकबधिरांध योग

शुक्र द्वितीय भाव में पाप ग्रह से युत हो और शुक्र राशि के प्रथम द्रेष्कोण में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक भैंगा या कमजोर दृष्टि वाला होगा ।

766 मूकबधिरांध योग

शुक्र के द्वितीय भाव में किसी पाप ग्रह से युति हो और शुक्र राशि के दूसरे द्रेष्कोण में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक मूक या बधिर होगा ।

767 मूकबधिरांध योग

शुक्र द्वितीय भाव में पाप ग्रह से युत या शुक्र, राशि के तृतीय द्रेष्कोण में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक की वाणी में हकलाने का दोष होगा ।

768 मूकबधिरांध योग

शुक्र या मंगल द्वितीय या द्वादश भाव में हों तो मूकबधिरांध योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक को कर्ण रोग हो सकता है ।

769 मूकबधिरांध योग

शुक्र या मंगल द्वितीय या द्वादश भाव में चन्द्र से युत हों या उनमें से एक हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक को दृष्टि दोष या कर्ण रोग हो सकता है ।

770 मूकबधिरांध योग

सूर्य द्वितीय भाव में हो मंगल षष्टम भाव में, शनि अष्टम और चन्द्र द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक को अंधापन विकसित हो सकता है ।

771 मूकबधिरांध योग

पापग्रह तृतीय भाव में, पंचम, नवम् या एकादश भाव में न हों तो शुभ ग्रह के साथ और न ही शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक को कर्ण रोग या श्रवण दोष हो सकता है ।

772 मूकबधिरांध योग

पापग्रह तृतीय या एकादश भाव में न हो शुभ ग्रह से युत हो और न ही शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक को कर्ण रोग या श्रवण दोष हो सकता है ।

773 मूकबधिरांध योग

शुभ ग्रहों की दृष्टि से विहीन पापग्रह यदि सप्तम भाव में हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक को दन्त क्षय हो सकता है ।

774 मूकबधिरांध योग

सूर्य के साथ बुध दुःस्थान पर हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक रतौंधी का शिकार हो सकता है ।

775 मूकबधिरांध योग

सूर्य दुःस्थान में शुक्र या लग्नेश से युत हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14)

जातक जन्मांध हो सकता है ।

776 खलवात योग

द्वादश भाव में पाप राशि हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/54)

जातक के केशों का क्षरण होगा तथा वह गंजा हो सकता है ।

777 खलवात योग

धनु लग्न में पाप ग्रह स्थित हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/54)

जातक के केशों का क्षरण होगा तथा वह गंजा हो सकता है ।

778 खलवादोष योग

सिंह लग्न हो, धनु लग्न हो, वृश्चिक कन्या या कर्क लग्न हो जबकि मंगल से दृष्ट चन्द्र लग्न में स्थित हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/96)

जातक गंजा हो सकता है ।

779 विलोमबुद्धि योग

चन्द्र और मंगल साथ हों और लग्नेश से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/45)

जातक विकृत मस्तिष्क एवं ज्ञान वाला होगा (ज्ञानी का विपरीत या विलोम) ।

780 वातरोग योग

मंगल पंचम सप्तम अथवा नवम् भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/53)

जातक को वात असंतुलन से सम्बन्धित विकार होंगे । (आयुर्वेदिक निरुपण) जातक अधीरता या उत्तेजना, अशान्ति, अनिद्रा, शरीर में जल की कमी, कब्ज, सर्दी और अवसाद का शिकार हो सकता है ।

781 वातरोग योग

सूर्य लग्न में चन्द्र दुर्बल हो और शनि द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/53)

जातक को वात असंतुलन से सम्बन्धित विकार होंगे ।(आयुर्वेदिक निरुपण) जातक अधीरता, अशान्ति, अनिद्रा, जल की कमी, कब्ज, सर्दी और अवसादग्रस्त होगा ।

782 बंधन योग

पापग्रह पंचम, नवम्, द्वादश तथा द्वितीय भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/56)

यह योग जातक को कैद या कारावास की सजा दिलवा सकता है ।

783 बन्धन योग

पापग्रह पंचम, नवम् द्वादश तथा द्वितीय भाव में हो और लग्न धनु मेष या वृष राशि की हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/56)

जातक को कारावास तथा फाँसी का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

784 बन्धन योग

मिथुन लग्न, तुला लग्न या कुंभ लग्न में पाप ग्रह स्थित हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/57)

जातक को कैद या कारागार मे कारावास की सजा का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

785 बन्धन योग

कर्क लग्न, सिंह लग्न या मीन लग्न में पापग्रह स्थित हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/57)

जातक को किले में कैद का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

786 बन्धन योग

वृश्चिक लग्न में पाप ग्रह हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/57)

यह योग जातक को भूमिगत कैद की सजा दिलवा सकता है ।

787 बन्धन योग

लग्न में शनि हो, दशम् स्थान पर चन्द्र हो और शुक्र से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 9/2/32)

यह योग जातक को कैद या कारावास का संकट उत्पन्न कर सकता है ।

788 मृतका योग

सूर्य दशम् स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि से विहीन हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/58)

जातक श्रेष्ठ सेवक होगा ।

789 मृतका योग

शनि दशम् भाव में, शुभ ग्रह से दृष्ट नहीं हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/58)

जातक श्रेष्ठ सेवक होगा ।

790 मृतका योग

मंगल दशम् भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट नहीं हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/58)

जातक श्रेष्ठ सेवक होगा ।

791 मृतका योग

शनि और सूर्य दशम् भाव में, शुभ ग्रह से दृष्ट नहीं हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/58)

जातक सामान्य सेवक होगा ।

792 मृतका योग

मंगल और शनि दशम् भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट नहीं हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/58)

जातक सामान्य सेवक होगा ।

793 मृतका योग

सूर्य और मंगल दशम् भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट नहीं हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/58)

जातक सामान्य सेवक होगा ।

794 मृतका योग

शनि और मंगल दशम् भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट नहीं हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/58)

जातक निकृष्ट सेवक होगा ।

795 अपस्मार योग

सूर्य चन्द्र और मंगल लग्न या अष्टम भाव में, पापग्रह से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/62)

जातक मिरगी या अपस्मार तथा अन्य बीमारियों से ग्रस्त रहेगा ।

796 अपस्मार योग

चन्द्र और बुध केन्द्र में पापग्रह से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/63)

जातक को मिरगी या अपस्मार रोग हो सकता है ।

797 सत्यमदा या सम्य मादा योग

पापग्रह पंचम तथा अष्टम स्थान पर हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/63)

जातक मिरगी का रोगी हो सकता है ।

798 अपस्मार योग

शनि और मंगल षष्टम या अष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (नक्षत्र आकाश में अपने चारों ओर कान्ति चक्र रखते हैं ।) (शंभु होरा प्रकाश 14/64)

जातक को मिरगी का रोग हो सकता है ।

799 वामशछेद योग

दशम् चतुर्थ और सप्तम भाव में क्रमशः चन्द्र शुक्र और एक पापग्रह हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/65)

जातक अपनी वंशावली में अन्तिम हो सकता है ।

800 दासी प्रभाव योग

शनि के नवमांश में शुक्र द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/65)

जातक दासी का पुत्र हो सकता है ।

801 दासी प्रभाव योग

सूर्य और चन्द्र दोनों दुर्बल हो या दोनों शनि के साथ विपरीत अवस्था में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/65)

जातक दासी पुत्र होगा ।

802 हिल्लजा नेत्र दोष योग

राशि से षष्टमेश वक्री ग्रह हो । (शंभु होरा प्रकाश 14/66)

नेत्र रोग की ओर इंगित करता है ।

803 हिल्लजा नेत्र दोष योग

लग्न से षष्टमेश शनि से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/66)

यह योग जातक के जीवन में निरुत्साही या भाव शून्य व्यवहार और नेत्र रोग में असन्तुलन की ओर इंगित करता है ।

804 हिल्लजा नेत्र दोष योग

चन्द्र के साथ बृहस्पति, शुक्र, मंगल या बुध लग्न में हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/66)

जातक को जीवन में किसी समय उच्च ताप से या संताप से या काम सम्बन्धों में अति आसक्ति या अति भाग या हथियारों से नेत्र विकार का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

805 हिल्लजा नेत्र दोष योग

नक्षत्र एक साथ तीसरे भाव में या केन्द्र में हो जाएँ तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/67)

जातक को अंधा होने का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

806 हिल्लजा नेत्र दोष योग

मंगल यदि पाप राशि में हो या केन्द्र में पाप राशि से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/67)

जातक को अंधा होने का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

807 हिल्लजा नेत्र दोष योग

शुभ ग्रह, अष्टम या द्वादश भाव में हों तथा सूर्य दशम् भाव में हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/67)

जातक को अंधा होने का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

808 हिल्लजा नेत्र दोष योग

सूर्य और चन्द्र वक्री ग्रह द्वारा शासित राशि में एक साथ हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/68)

जातक भेंगा होगा ।

809 हिल्लजा नेत्र दोष योग

सूर्य और चन्द्र की युति षष्टम या द्वादश भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/68)

जातक भेंगा होगा ।

810 हिल्लजा कर्ण दोष योग

षष्टमेश शुक्र लग्न में हो और चन्द्र और एक पापग्रह की संयुक्त दृष्टि लग्न पर हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/68)

जातक को बहरा होने का संकट उत्पन्न हो सकता है या दाहिने कान में असंतुलन हो सकता है ।

811 कर्ण दोष योग

षष्टमेश बुध चतुर्थ भाव में शनि से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (दृष्टि में विवाद है कि दृष्टि केवल तृतीय या दशम् होनी चाहिए न कि सप्तम या आपसी यद्यपि यह निश्चित नहीं है ।) (शंभु होरा प्रकाश 14/70)

जातक बधिर हो सकता है ।

812 कर्ण दोष योग

बुध षष्टम भाव मे शनि से दृष्ट हो, दृष्टि तृतीय या दशम् हो न कि सप्ताम तो कर्णदोष योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/70)

जातक बधिर हो सकता है ।

813 कर्ण दोष योग

बुध षष्टम स्थान पर और शुक्र दशम् भाव में हो (यह केवल विभाजन कुण्डली में ही संभव है ।) तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/71)

जातक की श्रवण शक्ति कमजोर (बाएँ कर्ण द्वारा) होगी, ऊँचा सुनने वाला होगा ।

814 जिह्वदोष योग

बुध कर्क राशि में हो, वृश्चिक या मीन राशि में हो । चन्द्र से दृष्ट सूर्य चतुर्थ भाव में हो और षष्टमेश पर पाप दृष्टि हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/73)

जातक फुसफुसाहट या मरमराहट की ध्वनि से बोल पायेगा ।

815 जिह्वदोष योग

अर्द्ध चन्द्र मंगल से युत होकर लग्न में स्थित हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/72)

जातक की वाणी में फुसफुसाहट या मरमराहट होगी ।

816 जिह्वदोष योग

षष्टमेश यदि बुध हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/73)

जातक को भोजन के स्वाद की रुचि में कमी हो सकती है । (रसना)

817 जिह्वदोष योग

बुध मकर या कुंभ राशि में शनि से पूर्णतया दृष्ट हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/73)

जातक की वाणी में असंतुलन हो सकता है और बोलते समय हकलाने वाला हो सकता है ।

818 कुब्जादोष योग

निर्बल चन्द्र राशि के प्रथम या अन्तिम नवमांश में मंगल के साथ तृतीय भाव में पापग्रह से दृष्ट हो, शनि चतुर्थ और लग्नेश शत्रु क्षेत्री हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/75)

जातक बौना या वामन हो सकता है ।

819 चतुश्चक्र योग

कोई भी ग्रह चर राशि में नहीं हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक बहुमुखी प्रतिभा की धनी, बेहद शक्तिशाली, दीर्घजीवी और यशस्वी होगा ।

820 कामातुर योग

शुक्र दंडव (द्विस्वभाव) राशि (दंडव केवल मिथुन राशि में हो सकती है ।) में अपने नवमांश में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/89)

जातक अत्यधिक कामुक, कामवासना में लिप्त और कामातुर हो सकता है ।

821 कामातुर योग

सिंह राशि की प्रथम होरा में शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/89)

जातक कामुक, कामवासना में लिप्त और कामातुर हो सकता है ।

822 क्रूरहत्या योग

मंगल और चन्द्र की युति एक ही नवमांश में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक क्रूरहत्या कर सकता है ।

823 पातक दोष योग

लग्नेश मंगल से युत हो जबकि चन्द्र षष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक अपराधी प्रवृत्ति का होगा ।

824 पातक दोष योग

सूर्य और चन्द्र की युति एक ही नवमांश में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक अपराधी प्रवृत्ति का हो सकता है ।

825 खजूर दोष योग

जल राशि में चन्द्र पाप ग्रह से युत हो और शनि से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को बिच्छु अथवा वृश्चिक से खतरा होता है ।

826 शांढ योग

शनि तथा शुक्र, यदि अष्टम या दशम् भाव में स्थित हो और किसी भी शुभ दृष्टि से विहीन हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक नपुसंकता का शिकार हो सकता है ।

827 शांढ योग

शनि और शुक्र यदि अष्टम अथवा दशम् भाव में बिना किसी शुभ दृष्टि के स्थित हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक नामर्द या मंदकाम प्रवृत्ति का होता है ।

828 शांढ योग

शनि दुर्बल हों तथा षष्टम् अथवा द्वादश भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक नपुसंक हो सकता है ।

829 शांढ योग

शनि दुर्बल हो तथा षष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक नामर्द या मंदकाम की प्रवृत्ति का होता है ।

830 शांढ्व योग

सप्तम भाव में स्थित शुक्र यदि लग्न में स्थित लग्नेश से दृष्ट हो जबकि सप्तमेश वक्री हो तथा चन्द्र और शनि साथ हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक के मन में अपनी पत्नी के प्रति खराब भावनाएँ होंगी । या फिर उसमें अपनी पत्नी के प्रति आकर्षण की कमी रहेगी । ऐसे में वह अन्त में प्रेमिका या दूसरी पत्नी भी रख सकता है ।

831 शांढ्व योग

सप्तम भाव में स्थित शुक्र यदि लग्न में स्थित लग्नेश से दृष्ट हो जबकि सप्तमेश वक्री हो तथा चन्द्र और शनि साथ हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक अपने पति के प्रति बुरी भावनाएँ रखता है या फिर उसमें अपने पति में आकर्षण की कमी लगेगी । ऐसे में वह गुप्त पति या नया पति भी रख सकता है । (शास्त्रीय मत के अनुसार यह योग केवल नर जाति के लिए लागु है ।)

832 अर्शदोष योग

अष्टमेश पापग्रह सप्तम स्थान पर बिना किसी शुभ ग्रह की दृष्टि के स्थित हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को बवासीर या नसों में सूजन का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

833 अर्शदोष योग

जन्म दिन के समय में हो शनि सप्तम भाव में वृश्चिक राशि में हो तथा मंगल नवम् भाव में स्थित हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को बवासीर या नसों में सूजन का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

834 अर्शदोष योग

शनि और मंगल, लग्नेश के साथ द्वादश भाव में स्थित हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को बवासीर या नसों में सूजन का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

835 अर्शदोष योग

चतुर्थ भाव में मंगल वृश्चिक राशि में बृहस्पति से दृष्ट न हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को बवासीर या नसों में सूजन का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

836 अर्शदोष योग

शनि लग्न में व मंगल सप्तम भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को बवासीर या नसों में सूजन का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

837 व्रणदोष योग

वृश्चिक लग्न में हों और शुक्र तथा गुरु से दृष्ट नहीं हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को अल्सर ट्यूमर या कैंसर हो सकता है ।

838 व्रणदोष योग

मंगल के नवमांश में शनि केतु से युत, चतुर्थ भाव में हो तो व्रणदोष योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को अल्सर ट्यूमर या कैंसर हो सकता है ।

839 व्रणदोष योग

शनि केतु से युत होकर सप्तम द्वादश या षष्टम भाव में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक को अल्सर ट्यूमर या कैंसर हो सकता है ।

840 दद्रुदोष योग

जल राशि में मंगल सप्तम भाव में शनि से दृष्ट जो कि चतुर्थ नवमांश में (10.00 और 13.20 के बीच) शनि की राशि में हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/93)

जातक की त्वचा पर फोड़े फुंसी निकलने का संकट उत्पन्न होता है ।

841 अण्डदोष योग

चन्द्र मंगल और शुक्र वृश्चिक राशि में कुंभ के नवमांश में हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश 14/94)

जातक की अण्ड ग्रन्थि में सूजन होने का संकट उत्पन्न हो सकता है ।

842 वामन योग

चन्द्र राशि के प्रथम या अन्तिम नवमांश में हो शनि की तृतीय या दशम् दृष्टि हो जबकि लग्न राशि लघु सोपान में हो (दक्षिणी अंक्षांश में) तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक कद में छोटा होता है ।

843 वामन योग

चन्द्र राशि के प्रथम या अन्तिम नवमांश में हो शनि की तृतीय या दशम् दृष्टि से दृष्ट हो लग्न राशि लघु सोपान में हो (उत्तरी अंक्षांश में) तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक कद में छोटा होता है ।

844 कुलपमशला योग

पापग्रह और शुभ ग्रह केन्द्र में हो लग्नेश पर चन्द्र की दृष्टि न हो तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक मातृभूमि से दूर जाकर रहता है । उसके अपने परिवारजनों द्वारा निष्कासित किया जाता है । पत्नी और बच्चों को खो देता है और गरीबी में जीवन बिताता है ।

845 कुलपमशला योग

शुभ ग्रह केवल धनु के नवमांश में हों तो यह योग होता है । (शंभु होरा प्रकाश)

जातक निजभूमि से दूर जाकर रहता है । उसके परिवारजनों द्वारा निष्कासित किया जाता है । पत्नी और बच्चों को खो देता है और गरीबी में जीवन जीता है ।

846 गणित विद्याजन योग

मंगल द्वितीय भाव में चन्द्र के साथ बुध से दृष्ट हो या बुध केन्द्र में हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/36)

जातक की गणित विषय में गहन समझ होगी ।

847 गणित विद्याजन योग

द्वितीयेश बुध हो और उच्च राशि में हों जबकि बृहस्पति लग्न में हो और शनि अष्टम भाव में हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/37)

जातक गणितज्ञ होगा ।

848 गणित विद्याजन योग

बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण में हो और शुक्र उच्च राशि का हो तो गणित विद्याजन योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/37)

जातक गणितज्ञ होगा ।

849 गणित विद्याजन योग

द्वितीयेश बुध हो और उच्च राशि में हों जबकि बृहस्पति लग्न में हो और शनि अष्टम भाव में हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/37)

जातक गणितज्ञ होगा ।

850 गणित विद्याजन योग

सूर्य और बुध (बुधादित्य) साथ हों, द्वितीय भाव में हों, शनि से दृष्ट हों तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/3)

जातक गणितज्ञ होगा ।

851 गणित विद्याजन योग

सूर्य और बुध केन्द्र में या त्रिकोण में या एकादश भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/5)

जातक गणितज्ञ होगा ।

852 वेद वेदांग योग

बृहस्पति उच्च राशि में या स्वक्षेत्री द्वितीय भाव में स्थित हों तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/7)

जातक आध्यात्म (वेद) का गहनतम ज्ञान प्राप्त करता है और उस ज्ञान से सम्बन्धित समस्त धाराओं की परतें अपनी गहरी समझ से खोलता है । (वेदांग) (इस ज्ञान के अस्तित्व को स्थापित करता है ।)

853 वेदान्त योग

शनि बुध और सूर्य पंचम भाव साथ हों तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/4)

जातक अन्ततः जीवन के मूल सत्य से अवगत होता है ।

854 ज्योतिषिका योग

बुध केन्द्र में हो द्वितीयेश बली हो और शुक्र उच्च राशि का द्वितीय भाव में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/37)

जातक ज्योतिषियों के समूह में अग्रणी होता है ।

855 ज्योतिषिका योग

द्वितीयेश सूर्य या मंगल बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट हो जबकि बुध पर्वतांश में हों तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/39)

जातक को ज्योतिष विज्ञान की (फलित) क्रिया व (गणित) मूलाधार का अच्छा ज्ञान होगा ।

856 ज्योतिषिका योग

सूर्य और बुध द्वितीय भाव में साथ हों तो ज्योतिषिका योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/3)

जातक को ज्योतिष विज्ञान की क्रिया (फलित) व (गणित) मूलाधार का विशद ज्ञान होगा ।

857 ज्योतिषिका योग

बुध अच्छी स्थिति में चतुर्थ भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/1)

जातक को ज्योतिष का फलित एवं गणित का अच्छा ज्ञान होगा ।

858 काव्य अलंकार योग

शुक्र द्वितीय भाव में अच्छी स्थिति में हो तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/10)

जातक को काव्य व साहित्य का ज्ञान प्राप्त होता है ।

859 गूढ़भावर्थिवित योग

राहु पंचम भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/6)

जातक गूढ़ अर्थ समझने की क्षमता रखता है । (कूटनीतिज्ञ)

860 तर्कशास्त्र योग

द्वितीयेश बृहस्पति या शुक्र हो और सूर्य या मंगल से दृष्ट हो और स्वयं से मूल त्रिकोण राशि में या उच्च राशि में स्थित हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/40)

जातक तर्क शास्त्रियों के बीच प्रमुख जाना जाता है । (तर्क/न्याय)

861 तर्कशास्त्र योग

सूर्य और मंगल द्वितीय भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/4)

जातक तर्क विज्ञान का ज्ञाता और प्रतिभावान तर्क शास्त्री हो जाएगा । (तर्क/न्याय)

862 तर्कशास्त्र योग

मंगल द्वितीय भाव में अच्छी स्थिति में हो तो यह योग होता है । (भावार्थ रत्नाकर - 2/2/9)

जातक तर्क विज्ञान का ज्ञाता और प्रतिभाशाली तर्क शास्त्री हो जाता है । (तर्क/न्याय)

863 शब्द शास्त्र योग

द्वितीयेश गुरु उच्च बल प्राप्त और सूर्य और शुक्र से दृष्ट हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/41)

जातक भाषा, निरुक्त और व्याकरण पर अधिकार प्राप्त कर लेता है । (व्याकरण/निरुक्त)

864 वेदान्त विद्या योग

द्वितीयेश बुध उच्च का हो, शनि गोपरान्श में हो और बृहस्पति सिंहासनांश में हो तब यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/42)

जातक वेदान्त में निपुण होता है ।

865 वेदान्त विद्या योग

बृहस्पति त्रिकोण में या केन्द्र में बुध से दृष्ट हो और शनि पर्वतांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/43)

जातक वेदान्त में निपुण होता है ।

866 वेदान्त विद्या योग

शुक्र लग्न में या किसी और केन्द्र में उत्तमांश में हो जबकि चन्द्र देवलोकांश में हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/44)

जातक वेदान्त विद्या में निपुण होता है ।

867 वेदान्त विद्या योग

लग्नेश पर्वतांश में द्वितीय भाव में या लग्न में किसी शुभ ग्रह के साथ अच्छी स्थिति में हो जबकि शुक्र द्वादश भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (सर्वार्थ चिन्तामणि - 3/49)

जातक वेदान्त विद्या में निपुण होता है ।

868 उभयचारी योग

केवल पाप ग्रह सूर्य से द्वितीय भाव और द्वादश भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

उभयचारी योग की विविधता सारी अच्छे योगों के प्रभावों को नष्ट, बीमार, दीनण्हीन, चापलूस तथा बदमाश बना देती है ।

869 फानी योग

सूर्य कुंभ राशि में हो, शनि मेष राशि में, चन्द्र वृश्चिक राशि में और शुक्र कन्या राशि में हो तो यह योग होता है । (भाव कुतुहलम् - 7/48)

जातक विश्रान्ति विहीन और कला विहीन होता है ।

870 काक योग

शुक्र तथा शनि मेष राशि में, सूर्य वृष राशि में, चन्द्र मीन राशि में, मंगल कर्क राशि में हो तो यह योग होता है । (भाव कुतुहलम् - 7/49)

जातक पैतृक सम्पत्ति से विहीन होता है जबकि उसका पिता साधन सम्पन्न होता है ।

871 राज सम्बन्ध योग

लग्न से दशमेश यदि अमात्यकारक से युत या दृष्ट हो या स्वयं अमात्यकारक दशम भाव मे स्थित हो या दशमेश से युत हो तो यह योग होता है । (बृहत्-पाराशर होरा शास्त्र - 42/1)

जातक राज सभा का प्रमुख होता है । आधुनिक सन्दर्भ में सरकार उच्च पद प्राप्त करता है ।

872 राज सम्बन्ध योग

एकादशमेश की दृष्टि एकादश भाव पर हो और दशम भाव में न ही पापग्रह हो और न ही पापग्रह की दृष्टि, तो राज सम्बन्ध योग होता है । (बृहत्-पाराशर होरा शास्त्र - 42/2)

जातक राज सभा में प्रमुख होता है । आधुनिक सन्दर्भ में सरकार उच्च पद प्राप्त करता है ।

873 राज सम्बन्ध योग

आत्मकारक और अमात्यकारक की युति हो तो राज सम्बन्ध योग होता है । (बृहत्-पाराशर होरा शास्त्र - 42/3)

जातक राज अत्यधि बुद्धिमान होता है और राज सभा का प्रमुख होता है । आधुनिक सन्दर्भ में सरकार उच्च पद प्राप्त करता है ।

874 सूर्य चन्द्र योग

सूर्य और चन्द्र एक ही भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक शूरवीर, अहंकारी, पत्थर का कार्य करने में दक्ष, मशीन और औजारों के कार्य में प्रवीण, अत्यधिक सम्पन्न, रुखा या निष्ठुर, निर्दयी और आसानी से महिला के समक्ष झुक जाने वाला होता है ।

875 सूर्य मंगल योग

सूर्य और मंगल की युति किसी भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बलिष्ठ, उर्जावान, प्रख्यात, बदमाश, पापी, आक्रामक और निष्ठुर होता है ।

876 सूर्य बुध योग

सूर्य और बुध एक ही भाव में हो तो बुधादित्य योग कहलाता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक मधुर भाषी, चतुर, विद्वान, अध्ययनशील धनवान, अनुशासित, स्वयं के धनोपार्जन से सेवा करने वाला होता है । विद्वान एवं प्रतिष्ठित अपने सभी कार्यों से होता है ।

877 सूर्य गुरु योग

सूर्य और गुरु की युति किसी भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अध्यापक, गुरु, दास, आश्रित, धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित व्यवसाय से जुड़ा होता है । जातक शासक द्वारा सम्मानित, धन व मित्रों से घिरा हुआ, ख्याति प्राप्त, दूसरों का भला चाहने वाला तथा करने वाला होता है ।

878 सूर्य शुक्र योग

सूर्य तथा शुक्र की युति किसी भाव में होने पर सूर्य-शुक्र योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बुद्धिमान, शस्त्र, संचालन में निपुण, आदर्शवादी, स्त्री द्वारा कमाने वाला (अपने द्वारा नहीं), नाट्य, अभिनय तथा संगीत द्वारा लाभान्वित तथा कारावास भोगने वाला, वृद्धावस्था में दृष्टि से कमजोर होता है ।

879 सूर्य-शनि योग

सूर्य तथा शनि की युति किसी भाव में यदि हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धातु विज्ञान में पारंगत होता है । धार्मिक कार्यों में लीन, पत्नी तथा बच्चों से कटा हुआ, विद्वान शत्रुओं के दबाव में रहने वाला तथा परम्पराओं को मानने वाला होता है ।

880 चन्द्र मंगल योग

चन्द्र तथा मंगल यदि एक ही भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धनवान, वीर, लड़ाई में विजेता, औरतों, शराब, मिट्टी की चीजों तथा धातु का विक्रेता होता है । वह रक्त विकार से ग्रस्त होता है तथा माता का शत्रु होता है ।

881 चन्द्र बुध योग

चन्द्र तथा बुध यदि एक ही भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक दिखने में अच्छा, मधुर वक्ता, ईमानदारी से जुड़े कार्यों में लीन, धार्मिक, आशीष प्राप्त, कवि, सहृदयी तथा पत्नी के प्रति गहरा जुड़ाव रखने वाला होता है ।

882 चन्द्र बुध योग

चन्द्र तथा बुध यदि एक ही भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक दिखने में अच्छा, मधुर वक्ता, ईमानदारी से जुड़े कार्यों में लीन, धार्मिक, आशीष प्राप्त, कवि, सह्रदयी तथा पत्नी के प्रति गहरा जुड़ाव रखने वाला होता है ।

883 चन्द्र गुरु योग

चन्द्र तथा गुरु की युति किसी भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अधिक बलशाली, ईमानदार, प्रसिद्ध, चतुर, ज्ञानी, ईमानदारी से जुडे कार्यों में लीन, औरों के प्रति अच्छा व्यवहार रखने वाला, धनवान, प्रेम सम्बन्ध में अटल, मधुर भाषी, परिवार का मुखिया तथा भ्रमित बुद्धि वाला होता है ।

884 चन्द्र शुक्र योग

चन्द्र तथा बुध किसी भाव में युत हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक खरीदने व बेचने के कार्य में चतुर, दर्जी के कार्य में सिलने व लेन-देन में दक्ष, लड़ाकू, इत्र व फूलों का शौकीन, आलसी, कवि तथा पापी होता है ।

885 चन्द्र शनि योग

चन्द्रमा तथा शनि की युति किसी भाव में होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक पुनः विवाहित, विधवा से जन्मा, बूढ़ी महिला से जुडाव रखने वाला, माँस से आनन्द प्राप्त करने वाला, मोहिनी शक्ति, धन तथा बहादुरी से वंचित तथा घोडे और हाथी के प्रति रुझान रखने वाला होता है ।

886 मंगल बुध योग

मंगल तथा बुध की किसी भी भाव में युति होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक दवा बनाने के व्यवसाय से जुड़ होता है, किसी विधवा अथवा निम्न महिला के प्रति झुकाव रख्ता है । धातु तथा कला में पारंगत तथा पहलवान अथवा मुक्केबाज होता है । वह ज्यादा धनवान नहीं होता परन्तु वाक्चातुर्य से भरा होता है ।

887 मंगल गुरु योग

मंगल तथा गुरु की युति किसी भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ज्ञानी, धनवान, बेहद चतुर, दक्ष, व्याख्याता, शिल्पकार, शास्त्रों के प्रयोग में दक्ष, केवल सुनने मात्र से याद कर लेने वाला, नेता तथा आदर प्राप्त करने वाला होता है ।

888 मंगल शुक्र योग

मंगल तथा शुक्र की युति किसी भाव में होने पर यह योग बनता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धोखेबाज, झूठा या सट्टेबाज होता है । वह औरों के जीवनसाथी के प्रति झुकाव रखता है तथा लिंग के स्वाभाविक रुप से भिन्न रुख अपनाता है । वह सभी द्वारा नकारा जाता है, पर गणित विषय में दक्षता हासिल किये होता है । जातक पहलवान चरवाहा हो सकता है तथा व्यक्ति विशेष के सद्‌गुण (नेकी) के आधार पर जन समुदाय में पहिचाना जाएगा ।

889 मंगल शनि योग

मंगल तथा शनि की युति किसी भाव में होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक दु:खी, झगडालू, दण्डनीय, धोखेबाज, बोलने में चतुर, हथियारों के उपयोग में लीन, अपने परिवार के विश्वास से अलग पथ अपनाने वाला होता है तथा उसे विष या किसी प्रकार की चोट से खतरा रहता है ।

890 बुध गुरु योग

बुध तथा गुरु यदि किसी भाव में युत हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक वक्ता, ज्ञानी, मिलनसार, खुबसूरत, धनी, नृत्य, संगीत तथा गायन में दक्ष, अत्यन्त ईमानदार तथा इत्र का बेहद शौकीन होता है ।

891 बुध शुक्र योग

बुध तथा शुक्र की युति यदि किसी भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक वक्ता, ईमानदार, वेदों का ज्ञाता, अत्यन्त धनी, एक अच्छा मूर्तीकार, संगीत में निपुण, सही प्रकार के वस्त्र धारण करने वाला, भूमि का मालिक, हमेशा प्रसन्न रहने वाला होता है ।

892 बुध शनि योग

बुध तथा शनि यदि किसी भाव में युत हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक का शारीरिक गठन अनाकर्षक होता है । वह ज्ञानी, धनी, बहुत से लोगों का पालन करने वाला, झगडालू, चंचल मन का, विभिन्न कलाओं में दक्ष, अपने से बडो की आज्ञा की अवहेलना करने वाला तथा धोखेबाज होता है ।

893 गुरु शुक्र योग

गुरु तथा शुक्र एक ही भाव में युत हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अत्यन्त ज्ञानी, ईमानदार जीवनसाथी से अभिमंत्रित, धनी, धार्मिक, ईमानदार तथा अपने अर्जित ज्ञान द्वारा कमाने वाला होता है ।

894 गुरु शनि योग

तथा शनि यदि किसी भाव में युत हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बलवान, प्रसिद्ध, सेना या किसी समूह विशेष का नेता, कलाकार, नाई, कुम्हार, बावर्ची, धनी, अपने जीवन-साथी के प्रति शंकालु घुमक्कड़, पशुओं की देख-रेख करने वाला होता है ।

895 शुक्र शनि योग

शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में युत हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक योद्धा, घुमक्कड, अच्छा मूर्तिकार, लेखक या चित्रकार, कसरती पशुओं के समूह की देखभाल करने वाला निकट की कमजोर दृष्टि वाला काम सम्बन्धों के सामान्य तरीकों से विचलित होकर आनन्दित होने वाला होता है तथा जातक का विवाह उसकी आर्थिक समृद्धि की कुंजी साबित होता है ।

896 सूर्य चन्द्र मंगल योग

किसी भाव में सूर्य, चन्द्रमा तथा मंगल के साथ होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बहादुर, क्रूर, काबिल, धनी मूर्तिकार, मंत्र-तंत्र में दक्ष, अपने शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। तथा वह रक्त विकारों से ग्रस्त होता है ।

897 सूर्य चन्द्र बुध योग

किसी भाव में सूर्य, चन्द्र तथा बुध के साथ होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक राजा का भरोसेमंद, यशस्वी, शस्त्रों तथ वेदों में दक्ष, अत्यन्त ज्ञानी, धन तथा सुन्दरता प्राप्त, मृदु भाषी, पौराणिक कहानियों तथा काव्य का शौकीन होता है।

898 सूर्य चन्द्र गुरु योग

सूर्य, चन्द्रमा तथा गुरु किसी भाव में साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अत्यन्त ईमानदार, विद्वान, नेता, बौद्धिक स्थिरता वाला, सदाचारी, आसानी से क्रूर होने वाला, विदेशी भूमि पर रहने वाला, अपने आस पास के लोगों पर आसानी से प्रभाव डालने वाला तथा धोखेबाज होता है ।

899 सूर्य चन्द्र शुक्र योग

सूर्य, चन्द्रमा तथा शुक्र यदि एक ही भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ईमानदारी के पथ से वंचित होता है, दूसरों की धन-संपत्ति प्राप्त करने का इच्छुक (स्वयं की नहीं), दुसरों के पति। पत्नी में आसक्त, दिखने में आकर्षक, विद्वान, धनी, शत्रुओं में घिरे रहने की अशंका से भयभीत तथा उसे दन्त्य विकारों से कष्ट होता है ।

900 सूर्य चन्द्र शनि योग

सूर्य, चन्द्रमा तथा शनि यदि एक ही भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक नौकर, धन तथा कृपा से विहीन, अनैतिक प्रवृति वाला, धोखेबाज, धातु संबंधित कार्यों में लिप्त, निरर्थक श्रम ग्रहण करने वाला होता है ।

901 सूर्य मंगल बुध योग

सूर्य, मंगल तथा बुध यदि एक ही भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जाातक प्रसिद्ध, बहादुर, क्रूर, पहलवान, बेशर्म, जीवन साथी की वजह से भौतिक साधनों से धन से, संतति से विहीन होता है ।

902 सूर्य मंगल गुरु योग

सूर्य, मंगल तथा गुरु यदि किसी भाव में हो तो यह योग बनता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अत्यन्त धनी, वाक्पटु वक्ता, नेता या सेनापति, उदार, सत्यवादी, झगड़ालू तथा प्रधानता रखने वाला होता है। इसी के साथ जातक मनोरंजन का शौकीन होता है तथा उसका झुकाव न्याय देने की ओर रहता है ।

903 सूर्य मंगल शुक्र योग

सूर्य, मंगल तथा शुक्र एक ही भाव में साथ-साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक भाग्यशाली, अत्यधिक बुद्धिमान, समृद्धिशाली, मिलनसार, रुखा, दिखने में अच्छा, कम बोलने वाला व्यक्ति, दृष्टि विकार युक्त दुर्वासिनाओं से प्रसन्नता देने वाला होता है ।

904 सूर्य मंगल शनि योग

सूर्य, मंगल तथा शनि यदि एक ही भाव में साथ-साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अनजान, दरिद्र, पिता तथा मित्रजनों से वंचित, शरीर पर बाल वाला, अपंग, झगड़ालू तथा ज्यादातर बीमार रहने वाला होता है ।

905 सूर्य बुध गुरु योग

सूर्य, बुध व गुरु एक हर भाव में साथ होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक वाग्विदग्ध (हाजिर जवाब), शास्त्रों के अध्ययन में लीन, लेखक, मूर्तिकार, धनी, बहादुर तथा नेत्र विकारों से कष्ट भोगता है ।

906 सूर्य बुध शुक्र योग

सूर्य, बुध तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बातूनी, घुमक्कड, छरहरे शारीरिक गठन वाला, ज्ञानी, अभिभावकों तथा शिक्षकों द्वारा अपमानित तथा अपने जीवन साथी द्वारा दी गई यातना सहने वाला होता है ।

907 सूर्य बुध शनि योग

सूर्य, बुध तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक मित्रों तथा रिश्तेदारों द्वारा अस्वीकृत, धूर्त, ईर्ष्यालु, नपुंसकों जैसा व्यवहार करने वाला तथा अवमानना सहने वाला होता है ।

908 सूर्य गुरु शुक्र योग

किसी भाव में यदि सूर्य, गुरु तथा शुक्र साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ज्ञानी, रंक, राजा की शरण लेने वाला, नौकर, बातूनी, क्रूर तथा कमजोर दृष्टि वाला होता है ।

909 सूर्य गुरु शनि योग

किसी भाव में यदि सूर्य, गुरु तथा शनि साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बोलने में चतुर, शासक का कृपापात्र, निडर, पवित्र विचारों वाला, पत्नी, मित्र तथा सन्तान प्राप्त करने वाला, असममित शरीर वाला तथा महिलाओं पर व्यर्थ धन व्यय करने वाला होता है ।

910 सूर्य शुक्र शनि योग

सूर्य, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धूर्त, घमण्डी, सदा शत्रुओं में घिरे रहने से भयभीत, ज्ञान, कृपा तथा प्रसिद्धि से वंचित, अकुशल, अनैतिक कार्यों का अनुसरण करने वाला तथा त्वचा विकारों से कष्ट भोगने वाला होता है ।

911 चन्द्र मंगल बुध योग

किसी भाव में चन्द्रमा, मंगल तथा बुध के साथ होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धूर्त, स्वयं अपने प्रियजनों द्वारा अपमानित, नैतिकता तथा धन से सम्पूर्ण जीवन मित्रजनों से विहीन तथा पेटू होता है ।

912 चन्द्र मंगल गुरु योग

चन्द्रमा, मंगल तथा गुरु के किसी भाव में साथ होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक देखने में अच्छा, प्यारे चेहरे वाला, प्रेम रोगी, प्रिय, जल्दी क्रुद्ध होने वाला होता है । इसी के साथ उसके पूरे शरीर पर क्षतचिन्ह (चोट के निशान) पाये जाते हैं ।

913 चन्द्र मंगल शुक्र योग

चन्द्रमा, मंगल तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक एक असभ्य नारी का स्वामी, हमेशा घुमक्कड़, चंचन मन वाला तथा हमेशा सर्दी - जुकाम हो जाने की चिन्ता से भयभीत रहने वाला होता है ।

914 चन्द्र मंगल शुक्र योग

चन्द्रमा, मंगल तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक किसी असभ्य नारी से अति निकट संबंध रखने वाला, हमेश घुमक्कड, चंचल मन वाला तथा सर्वदा सर्दी - जुकाम की चिंता से भयभीत रहने वाला होता है ।

915 चन्द्र मंगल शनि योग

चन्द्रमा, मंगल तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अपने बालपन से ही अपनी माता के अधिकारों से वंचित रहने वाला, धूर्त, चंचल मन वाला, निषिद्ध कार्यों में लीन होताहै । (इस योग में ऐसा भी हो सकता है कि जातक की माँ का स्वर्गवास उसके बालपन हो जाए या फिर वह स्वयं मातृहत्या कर डाले ।)

916 चन्द्र बुध गुरु योग

किसी भाव में यदि चन्द्रमा, बुध तथा गुरु के साथ-साथ होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ज्ञानी, प्रसिद्ध, वक्ता, धनी, ईमानदार, बीमार, राजा का कृपापात्र (वित्तीय रुप से सहायक भी) होता है ।

917 चन्द्र बुध शुक्र योग

चन्द्रमा, बुध तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अच्छे ज्ञान प्राप्ति की ओर अग्रसर होने वाला, माननीय, मतलबी व्यवहार वाला, अत्यन्त लोभी, औरों के प्रति ईर्ष्यालु होता है ।

918 चन्द्र बुध शनि योग

चन्द्र, बुध तथा शनि एक ही भाव में हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक विद्वान, योग्य, शासक से सम्मानित होने वाला, मधुर भाषी, बीमार और नेता होता है ।

919 चन्द्र गुरु शुक्र योग

चन्द्र, गुरु तथा शुक्र एक ही भाव में स्थित हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अत्यन्त आकर्षक, ईमानदार माँ के गर्भ से जन्म लेने वाला कई कलाओं में दक्ष होता है ।

920 चन्द्र गुरु शनि योग

चन्द्र, गुरु तथा शनि एक ही भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक शास्त्रों का ज्ञाता, शासक का प्रिय, चतुर, प्रख्यात, बीमारी से दूर, गाँव या कस्बे का मुखिया तथा उम्र की महिला से जुड़ा होता है ।

921 चन्द्र शुक्र शनि योग

चन्द्र, शुक्र और शनि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक कुशल लेखक, ऊँचें कुल का, अत्यधिक प्रिय, नेक चलन वाला होता है ।

922 मंगल बुध गुरु योग

मंगल, बुध तथा गुरु एक ही भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अपने ही परिवारजनों द्वारा सम्मानित, संगीत नाट्य कलाओं व काव्य में लीन रहने वाला, युवतियों से सम्पर्क रखने वाला, एक अच्छी स्त्री का पति तथा दूसरों की भलाई करने वाला होता है ।

923 मंगल बुध गुरु योग

मंगल, बुध तथा गुरु एक ही भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अपने ही परिवारजनों द्वारा सम्मानित, संगीत नाट्य कलाओं व काव्य में लीन रहने वाला, युवतियों से सम्पर्क रखने वाला, एक अच्छी स्त्री का पति तथा दूसरों की भलाई करने वाला होता है ।

924 मंगल बुध शुक्र योग

मंगल, बुध तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बातूनी, चंचल, अपंग, छरहरी काया वाला, हीन जाति में उत्पन्न, धूर्त, उत्साही तथा धनी होता है ।

925 मंगल बुध शनि योग

मंगल, बुध तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक सदैव भयभीत रहने वाला, शरीर से नत, नैत्र व मुख के विकारों से युत, प्रत्युत्पन्नमति वाला, निम्न वर्ग का कार्य करने वाला तथा आवारा होता है ।

926 मंगल गुरु शुक्र योग

मंगल, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक को जीवनसाथी तथा संतान तथा सुख सुविधाओं के सुख से पूर्ण होता है । वह शासक द्वारा पसंद किया जाने वाला तथा सुसंगति में रहने वाला होता है ।

927 मंगल गुरु शनि योग

मंगल, गुरु तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक शरीर से नत, क्रूर, धूर्त, मित्रहीन, अहंकारी तथा शासक का कृपापात्र होता है ।

928 मंगल शुक्र शनि योग

मंगल, शुक्र तथा शनि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक के पास विदेशी आवास होता है । उसकी संतान खराब होती है तथा किसी खूबसूरत नारी द्वारा अपमानित होता है ।

929 बुध गुरु शुक्र योग

बुध, गुरु तथा शुक्र के किसी भाव में साथ होने पर यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक देखने में अच्छा, शत्रुओं से वंचित, सत्यवादी तथा अनन्त प्रसिद्धि को प्राप्त होता है ।

930 बुध गुरु शनि योग

बुध, गुरु तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक समृद्ध, भौतिक सुख साधनों से पूर्ण, ज्ञानी, भाग्यशाली तथा अपने जीवनसाथी के प्रति पूर्णतः समर्पित होता है ।

931 बुध शुक्र शनि योग

बुध, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक असत्यवादी, अनैतिक, औरों के जीवनसाथी में आसक्त तथा घुमक्कड होता है ।

932 गुरु शुक्र शनि योग

गुरु शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक विख्यात, प्रसिद्ध, साफ विचारधारा वाला तथा असामान्य परिस्थितियों में जन्म लेने के बाद भी एक राजा के समान जीवन व्यतीत करता है ।

933 सूर्य चन्द्र मंगल बुध योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल तथा बुध यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बीमार, लेखक, भ्रांति उत्पन्न करनें में निपुण, शातिर, वक्ता तथा बेईमान होता है ।

934 सूर्य चन्द्र मंगल गुरु योग

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल तथा गुरु यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक प्रसिद्ध, बुद्धिमान, धनी, निपुण, शासक के प्रति समर्पित, दुःख तथा बीमारी से वंचित होता है ।

935 सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ज्ञानी, निश्चित या सुखी, प्रसिद्ध, संतान तथा पत्नी/पति के सुख से पूर्ण, धनी तथा सच्चरित्र होता है ।

936 सूर्य चन्द्र मंगल शनि योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक मूर्ख, वामन, गरीब, घुमक्कड़, विश्रान्ति विहीन नेत्रों वाला, विश्वासघाती तथा भिक्षा पर निर्भर करने वाला होता है ।

937 सूर्य चन्द्र बुध गुरु योग

सूर्य, चन्द्र, बुध, तथा गुरु यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक स्वस्थ, धनी, बलवान, ईमानदार, देखने में अच्छा, सुन्दर नेत्रों वाला तथा मूर्तिकार होता है ।

938 सूर्य चन्द्र बुध शुक्र योग

सूर्य, चन्द्र, बुध, तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक वक्ता, वाक्पटु, सुन्दर, वामन, शासक द्वारा पसंद किया जाने वाला तथा दोषपूर्ण दृष्टि वाला होता है ।

939 सूर्य चन्द्र बुध शनि योग

सूर्य, चन्द्र, बुध, तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक भिक्षा पर निर्भर करने वाला, कंगाल, कृतघ्न, असत्यवादी तथा नेत्र विकारों से ग्रसित होता है ।

940 सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र योग

सूर्य, चन्द्र, गुरु, तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक शासक द्वारा सम्मानित, जलीय तथा वन-क्षेत्रों का मालिक तथा विभिन्न सुख-साधनों के सुख से पूर्ण होता है ।

941 सूर्य चन्द्र गुरु शनि योग

सूर्य, चन्द्र, गुरु, तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक माननीय, धन तथा संतान के सुख से पूर्ण, दुर्बल काया वाला, संतुलित दृष्टिकोण वाला, सुयोग्य नारी द्वारा पसंद किया जाने वाला तथा आसानी से क्रोधित हो जाने वाला होता है । कुछ लोगों का यह भी कहना है कि परिणामस्वरुप यह योग जातक को मानसिक विकार से ग्रस्त कर देता है ।

942 सूर्य चन्द्र शुक्र शनि योग

सूर्य, चन्द्र, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक डरपोक, पेटू, दुर्बल काया वाला, सदा भयभीत रहने वाला तथा एक महिला जैसा व्यवहार करने वाला पुरुष होता है ।

943 सूर्य मंगल बुध गुरु योग

सूर्य, मंगल, बुध तथा गुरु यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बहादुर, आवारा, व्यभिचारी, धनी, नेता, दुर्भाग्य तथा नेत्र विकारों द्वारा कष्ट भोगने वाला होता है ।

944 सूर्य मंगल बुध शुक्र योग

सूर्य, मंगल, बुध तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक व्यभिचारी, बेशर्म, धूर्त तथा विचित्र वेशभूषा वाला होता है ।

945 सूर्य मंगल बुध शनि योग

सूर्य, मंगल, बुध तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ज्ञानी, योद्धा, सेनापति, शासक का सलाहकार तथा अधर्म कार्यों में लीन होता है ।

946 सूर्य मंगल गुरु शुक्र योग

सूर्य, मंगल, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक प्रसिद्ध, धनी, भाग्यशाली तथा शासक द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है ।

947 सूर्य मंगल गुरु शनि योग

सूर्य, मंगल, गुरु, तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक सम्माननीय, लिया गया कार्य भली-भाँति समाप्त करने वाला, मित्र, संबंधियों तथा शाही कृपा के सुख से पूर्ण तथा मानसिक रुप से असंतुलित होता है ।

948 सूर्य मंगल शुक्र शनि योग

सूर्य, मंगल, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बुद्धि, संन्दरता तथा सद्‌गुणों से विरक्त, मानसिक वेदना सहने वाला तथा सभी लोगों द्वारा शासित होता है ।

949 सूर्य बुध गुरु शुक्र योग

सूर्य, बुध, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक प्रसिद्ध, धनी, नेता होता है । वह अपनी सभी आकांक्षायों को पूर्ण कर लेने में सक्षम होता है ।

950 सूर्य बुध गुरु शनि योग

सूर्य, बुध, गुरु, तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक लड़ाकू, घमण्डी, निरुत्साही तथा नपुंसक की भाँति व्यवहार करने वाला होता है ।

951 सूर्य बुध शुक्र शनि योग

सूर्य, बुध, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धर्मपरायण, सुन्दर, ज्ञानी, निश्चिन्त या सुखी, सत्यवादी, अच्छा वक्ता तथा मित्रों का सहायक होता है ।

952 सूर्य गुरु शुक्र शनि योग

सूर्य, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक लोभी, नेता, साहसी, कला मे निपुण तथा शासक का कृपापात्र होता है ।

953 चन्द्र मंगल बुध गुरु योग

चन्द्रमा, मंगल, बुध तथा गुरु यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धार्मिक शास्त्रों में निपुण, राजा या नेता तथा अत्यन्त प्रसिद्ध होता है ।

954 चन्द्र मंगल बुध शुक्र योग

चन्द्रमा, मंगल, बुध तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक झगडालू, आलसी, धूर्त अपने ही लोगों का शत्रु देखने में सुन्दर तथा किसी धूर्त व्यक्ति का जीवनसाथी हो सकता है ।

955 चन्द्र मंगल बुध शनि योग

चन्द्रमा, मंगल, बुध तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक साहसी, मित्र-सुख से वंचित, पत्नी, संतान तथा मित्रों को प्राप्त करने वाला होता है । (यह (ग्रहों का) संयोजन जातक को दो माता, तथा दो पिता प्राप्त कराता है अर्थात् शायद यह संकेत जातक के गोद लिया जाने की ओर है ।)

956 चन्द्र मंगल गुरु शुक्र योग

चन्द्रमा, मंगल, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक बहादुर, धनी, ज्ञानी, मित्रों तथा एक अच्छे जीवनसाथी के सुख से पूर्ण तथा अपंग होता है ।

957 चन्द्र मंगल गुरु शनि योग

चन्द्र, मंगल, गुरु तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ज्ञानी, उदार, साहसी, मानसिक रुप से संतुलित, धनी, दोषपूर्ण श्रवणशक्ति वाला होता है । लोग कहते हैं कि यह योग जातक को परिणामस्वरुप मानसिक विकारों से ग्रस्त करा देता है ।

958 चन्द्र मंगल शुक्र शनि योग

चन्द्र, मंगल शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अनैतिक व्यवहार वाले व्यक्ति का जीवनसाथी होता है । वह हमेशा दुःखी, बहादुर, भयहीन तथा सर्प के समान नेत्रों वाला होता है ।

959 चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग

चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ज्ञानी, प्रसिद्ध, धनी, अनाथ, शत्रु विहीन तथा दोषपूर्ण श्रवण शक्ति वाला होता है ।

960 चन्द्र बुध गुरु शनि योग

चन्द्र, बुध, गुरु तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ईमानदारी, ज्ञानी, प्रसिद्ध, दाता, असामान्य रुप से धनी तथा राजा का सलाहकार होता है ।

961 चन्द्र बुध शुक्र शनि योग

चन्द्र, बुध, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक व्यभिचारी, धूर्त जीवनसाथी से विवाहित, ज्ञानी, बहुत से लोगों से शत्रुता रखने वाला तथा नेत्र विकार वाला होता है ।

962 चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग

चन्द्र, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक मातृ विहीन, सत्यवादी, व्यभिचारी सुख से रहित, घुमक्कड तथा त्वचा विकारों वाला होता है ।

963 मंगल बुध गुरु शुक्र योग

मंगल, बुध, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धनी, स्वस्थ, अत्यन्त माननीय तथा स्त्री से झगडने वाला होता है ।

964 मंगल बुध गुरु शुक्र योग

मंगल, बुध, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धनी, स्वस्थ, अत्यन्त माननीय तथा स्त्री से झगडने वाला होता है ।

965 मंगल बुध शुक्र शनि योग

मंगल, बुध, शुक्र तथा शनि यदि एक ही भाव में स्थित हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक युद्ध कला में निपुण, लेखक, पहलवान, स्वस्थ, प्रख्यात और पालतु कुत्ते रखने वाला होगा ।

966 मंगल गुरु शुक्र शनि योग

मंगल, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक प्रख्यात, समृद्ध, साहसी, दूसरे के जीवनसाथी में रुचि लेने वाला होगा

967 बुध गुरु शुक्र शनि योग

बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अत्यन्त विद्वान, असाधारण स्मृति वाला, सत्यवादी, सौम्य, इंद्रियग्राह्य होगा ।

968 सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध तथा गुरु यदि एक ही भाव में हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक दुःखी, झगड़ालु, मुखबिर, जीवनसाथी से सम्बन्ध विच्छेद होने से पीड़ित होता है । ऐसा कहा जाता है कि जब पाँच या छः ग्रह साथ हों तो यह संकेत मिलता है कि जातक अल्प वृद्धि वाला होगा तथा (वित्तीय) सम्पन्नता की कमी रहेगी ।

969 सूर्य चन्द्र मंगल बुध शुक्र योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक दूसरे के लिए कार्य करने वाला, मित्रों तथा सम्बन्धियों से वंचित, असत्यवादी, नपुंसक मित्रों वाला होगा । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि वाला होगा तथा उसे (वित्तीय) सम्पन्नता में कमी रहेगी ।)

970 सूर्य चन्द्र मंगल बुध शनि योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक सुख साधनों से वंचित जीवनसाथी तथा धन से वंचित, कारावास भुगतने वाला, अल्प जीवन जीने वाला होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि वाला होता है तथा उसे (वित्तीय) सम्पन्नता में कमी रहती है ।)

971 सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु तथा शुक्र यदि एक ही भाव में हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अभिभावकों द्वारा अस्वीकृत, संतप्त, आतंकवादी या हत्यारा दृष्टिहीन होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि पाँच या छः ग्रह किसी भाव में साथ हों तो जातक अल्प बुद्धि वाला होता है तथा उसे (वित्तीय) सम्पन्नता में कमी रहती है ।)

972 सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शनि योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु तथा शनि यदि किसी भाव साथ में हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक युद्ध कौशल में निपुण, दक्ष, दूसरों का धन प्राप्त करने वाला धूर्त और स्त्री प्रेम से विमुख होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह साथ हों तो जातक अल्प बुद्धि वाला होगा तथा वित्तीय सम्पन्नता से विहीन होगा ।)

973 सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र शनि योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अपदस्थ, गरीब और दूसरे के जीवनसाथी में आसक्त होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि वाला होगा तथा उसे वित्तीय संसाधनों की कमी रहेगी ।

974 सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धनी, नेता, राजा का सलाहकार, न्यायाधीश, दण्ड देने का अधिकारी प्रसिद्ध तथा शक्तिशाली होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि वाला होता है तथा उसे वित्तीय संसाधनों की कमी रहती है ।)

975 सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि योग

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक मानसिक असंतुलन वाला, दूसरों पर निर्भर करने वाला, दूसरों द्वारा पोषित, क्रूर, कायर के समान, धोखा देने वाला होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि वाला होता है तथा उसे वित्तीय संसाधनों की कमी रहती है ।)

976 सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि योग

सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हो तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक रोगी लम्बे शारीरिक गठन वाला धन, मित्र तथा अन्य सुख साधनों से वंचित होता है तथा शरीर पर बाल होता है । (ऐसा माना जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि वाला होता है तथा उसे वित्तीय संसाधनों की कमी रहती है ।)

977 सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि एक ही भाव में हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक विद्वान निडर, जीवनसाथी में आसक्त, वक्ता, हस्त लाघव में चतुर, अस्थिर दिमाग वाला होता है । (कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

978 सूर्य मंगल बुध शुक्र गुरु योग

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र तथा गुरु यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक विख्यात, सेना का नायक, दुखों से दूर, भाग्यशाली, खूबसूरत, शासक का प्रिय, स्त्री को सताने वाला (पुरुष ;) जो कि अपनी न ही होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

979 सूर्य मंगल बुध गुरु शनि योग

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक सदैव मानसिक रुप से विचलित या व्याकुल रहता है । गंदे और चिथड़े वस्त्र पहनता है, भिक्षा के अन्न पर जीवित रहता है । ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।

980 सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि योग

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक शत्रुओं तथा रोगों से उत्पीडित, अभागा, भूखों मरने वाला तथा अपने निवास से दूर चला जाने वाला होता है । ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।

981 सूर्य मंगल गुरु शुक्र शनि योग

सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक विद्वान, विचारक, बौद्धिक कार्यो में लीन और रसायन का व्यवसाय करने वाला होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

982 सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि योग

सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक वेदों का दक्ष ज्ञाता, नेक, गुरु के प्रति समर्पित और दयालु होता है । (कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

983 चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र योग

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक सदाचारी, विद्वान, समृद्ध, बीमारियों से दूर तथा कई मित्रों वाला होता है । (कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

984 चन्द्र मंगल बुध गुरु शनि योग

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धूर्त, गरीब, भिक्षा में प्राप्त भोजन पर निर्भर करने वाला तथा रतौंधी से ग्रस्त होता है । (माना जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

985 चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि योग

चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक कुरुप, बेवकूफ, अकिंचन (कंगाल), नपुंसक, विचारक, परसेवाभावी होता है । (माना जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

986 चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि योग

चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक तुच्छ सेवक, मूर्ख, बेईमान, परान्न भोजी (भिक्षा से प्राप्त अन्न पर निर्भर), गन्दे वस्त्र धारण करने वाला तथा नेत्र विकार वाला होता है । (माना जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

987 चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग

चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक अत्यन्त माननीय, नेता, सदाचारी तथा अनेक लोगों का नेतृत्व करने वाला होता है । (ऐसा माना जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

988 मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक आसानी से क्रोधित हो जाने वाला, मृत्यु दण्ड या कारावास देने का अधिकारी, राजा का प्रिय, आलसी, बीमार, पागलपन से ग्रस्त होता है । (ऐसा माना जाता है कि जब किसी व्यक्ति के किसी भाव के पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

989 सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु तथा शुक्र यदि किसी भाव मे साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक ज्ञान, जीवन साथी, धन तथा सद्‌गुणों से सम्पन्न होता है । तीर्थयात्री, प्रसिद्ध, पर्वत तथा वन का वासी शरीर से नत तथा बातूनी होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

990 सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शनि योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक परोपकारी धर्मप्रवण, अस्थिर मस्तिष्क वाला, उजाड़ भूमि पर निवास करने वाला, व्यभिचारी तथा दूसरों की सहायता करने वाला होता है । (ऐसा माना जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

991 सूर्य चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक शंकालु, प्रसिद्ध, शत्रुओं का नाश करने वाला, कलह प्रिय, व्यभिचारी, अपने निवास से दूर जाने वाला होता है । (कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

992 सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि योग

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धूर्त, दूसरों की सेवा में निमग्न, आसानी से क्रोधित होने वाला, तपेदिक से ग्रस्त तथा अन्य वक्षस्थल की बीमारियों से ग्रस्त होता है तथा सुख सुविधाओं से वंचित परन्तु संतुष्ट होता है तथा अपने जीवनसाथी के प्रति समर्पित होता है । (ऐसा माना जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

993 सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग

सूर्य, चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक जीवनसाथी तथा धन से वंचित, मानसिक वेदना से ग्रस्त, दयालु, राजा का सलाहकार तथा रमणीय होता है । (ऐसा माना जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः ग्रह एक साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

994 सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक वनों तथा पहाडियों में भटकने वाला, तीर्थ यात्रा करने वाला, जीवनसाथी, धन तथा सन्तान से वंचित होता है । (ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भाव में पाँच या छः एक ग्रह साथ हो तो जातक अल्प बुद्धि तथा समृद्धिविहीन होता है ।)

995 चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग

चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक धर्म परायण, प्रसिद्ध, आलसी, धनी, राजा का सलाहकार, कई पत्नियों/पतियों का/की पति/पत्नी, तीर्थयात्राओं का उत्तरदायित्व लेने वाला तथा तपस्वी स्वभाव वाला होता है ।

996 सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि यदि किसी भाव में साथ हों तो यह योग होता है । (डॉ. के. एस. चरक)

जातक सूर्य के समान यशस्वी, शासक द्वारा सम्मानित, भगवान शिव की आराधना करने वाला, धनी तथा परोपकार करने में सक्षम होता है ।

997 जातकचिह्न योग

मंगल लग्न में हो जबकि गुरु तथा शुक्र सप्तम् भाव में हों तो यह योग होता है । (भाव कुतुहलम् - 3/1)

महर्षी यवनाचार्य के अनुसार जातक के माथे पर चोट का निशान होता है ।

998 जातकचिह्न योग

लग्न में मंगल के साथ शुक्र तथा चन्द्रमा हो तो यह योग होता है । (भाव कुतुहलम् - 3/2)

जातक के माथे पर दूसरे या छठे वर्ष की आयु में निशान हो जाता है ।

999 जातकचिह्न योग

शुक्र लग्न में हो तथा राहु अष्टम् में हो तो यह योग होता है । (भाव कुतुहलम् - 3/3)

जातक के माथे तथा बाएँ कान पर किसी प्रकार का निशान पाया जाता है ।

1000 जातकचिह्न योग

राहु सातवें भाव में हो तथा गुरु लग्न में हो तथा शुक्र किसी पापग्रह से अष्टम् भाव में युत हो तो यह योग होता है । (भाव कुतुहलम् - 3/4)

जातक के बाई भुजा पर निशान पाया जाता है ।

1001 जातकचिह्न योग

राहु सातवें भाव में हो तथा गुरु लग्न में हो तथा शुक्र किसी पापग्रह से अष्टम् भाव में युत हो तो यह योग होता है । (भाव कुतुहलम् - 3/4)

जातक के बाई भुजा पर निशान पाया जाता है ।